हिंदी अनुवाद

वार्षिक प्रतिवेदन

2014-2015

संपादक समिति

प्रो. राधाकान्त ठाकुर

प्रो. सी. ललिताराणी

प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी

डॉ. आर. दीप्ता

डॉ. के. राजगोपालन

डॉ. एस. दक्षिणामूर्ति शर्मा

डॉ. वी. रमेश बाबू

डॉ. सोमनाथ दास

डा. टी.लता मंगेश

श्री वि.जि.शिवशंकर रेड्डी

श्री सी. वेंकटेश्वर्लु

तकनीकी सहायक

श्री जे.एल. श्रीनिवास

प्राक्कथन

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के समाप्त होने से पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के वार्षिक प्रतिवेदन, पाठ्य सहगामी कार्यक्रम और प्रतिवेदन समर्पण किया जा रहा है। शैक्षणिक कार्यक्रमों, शोध गतिविधियाँ और पाठ्येतर घटनाएँ सूचनाएँ ऐसे कई कार्यक्रम 2014-15 में किए गए काम और बहु - विमीय बुद्धिगत प्रयोग शैक्षणिक और प्राशासनिक दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्टता और अनुसंधान मूलभूत कार्यक्रम हैं। छात्रों की भर्ती इस शैक्षणिक वर्ष में भी पूर्व जैसा लगभग स्थिर है। प्रतिवेदनानुसार विद्यापीठ शैक्षिक अखंडता, मौलिक अनुसंधान कार्यक्रम और आधारिक संरचना के कारण वर्ष के दौरान छात्र संख्या में वृद्धि हुई । धीरे धीरे विद्यापीठ संस्कृत अध्ययन और अनुसंधानों से अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्य के लिए उन्मख हो रही है । विश्वविद्यालय के इस शैक्षणिक वर्ष के अंतर्गत वार्षिक कार्य योजना अत्यंत सतर्क और साथ-ही-साथ भर्ती नियमित आयोजन और नवाचारी के साथ-साथ अंशकालिक पाठ्यक्रम, शोध कार्यक्रम, सेतु पाठ्यक्रम विचार-विनिमय विकास कार्यक्रम, खेल और कूद, परीक्षाओं का आयोजन, परिणामों का प्रकट करना और अखिल भारत संस्कृत छात्र प्रतिभा उत्सव आदि सभी कार्यक्रमों का आयोजन समस्त प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्रों और अन्य के सहयोग से अत्यंत शांतिपूर्वक रूप से होता आया है। विद्यापीठ के छात्रों ने देश के अलग-अलग राज्यों द्वारा आयोजित प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेकर कई पुरस्कार को जीत कर संस्था का नाम रोशन किया है। प्राध्यापकों ने भी देश - विदेशों मेंह्न आयोजित कई संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लेकर अपना आलेख प्रस्तुत किए हैं। एक बहुत खुशी की बात यह है कि विद्यापीठ के छात्रों ने एक बार फिर 9 वाँ अखिल भारतीय संस्कृत छात्रों का प्रतिभा उत्सव में रोलिंग शील्ड प्राप्त कर अपनी नैपुण्यता प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय को सवोच्च स्थान पर पहुँचा दिया है। भारतीय संस्कृति का परिचय होगा। उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत निम्न सभी योजनाओं का अनुपालन किया गया है -1. शास्त्रवारिधि (चुने गए प्रमुख पारंपरिक शास्त्रों के पाठ्य को इस पाठ्यक्रम में अध्ययन किया जाता है।) 2. प्रकाशन 3. आडियो और विडियो प्रलेखीकरण 4. आडियो - विडियो रेकार्डिंग केंद्र की गतिविधियाँ,5. लिपि विकास प्रदर्शिनी 6. प्राचीन पांडुलिपि अध्ययन के विद्युतीकरण साधन 7. संस्कृत स्व - अध्याय कीट्स 8. प्रलेखीकरण अर्टिफ्याक्ट्स 9. गणकीकृत पांडुलिपियाँ 10. योग. दबाव प्रबंधन और हेलिंग केंद्र11. संगोष्ठियों कार्यशालाएँ 12. कंप्यूटर विज्ञान सेतु पाठ्यक्रम और संस्कृत भाषा तकनीकी और अन्य योजना का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 11 वी योजना में प्राप्त हुआ है क्योंकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उदारतापूर्वक सहयोग को आगे बढाया है । ई.पी.जी पाठशाला परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विद्यापीठ को व्याकरण शास्त्र में ई पाठशाला का कार्य ले लिया है जो दिए गए समय के पहले संपन्न होगा ।

साहित्य विभाग और शिक्षा एवं दर्शन विभागों के लिए प्राप्त विशेष सहायता कार्यक्रम (साप) को सफलतापूर्वक निभाया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने आठ प्रमुख शोध परियोजना और दो निम्न शोध परियोजना तथा कई परिचयात्मक प्राच्य व्यक्तित्व सुधार और नवाचीरी पाठ्यक्रम आदि को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अनुपालन कर इस शोध दिशा में ज्यादा-से-ज्यादा बढावा देने में मदत किया है। इसलिए इस

शैक्षणिक वर्ष में यह प्रतिवेदन और भी संतोषजनक नजर आता है। एक और हर्षदायक बात तो यह है कि गत वर्ष में कई छात्रों ने नेट और जे.आर्. एफ. पास होकर अन्यों के लिए इस दिशा में निर्देश किया है। वर्ष के दौरान प्रतिवेदन के तहत एक शोध छात्रा को वि.अ.ए. ने पोस्ट डॉक्रल फेलोशिप से सम्मानित किया । विद्यापीठ से गए छात्रों ने देश - विदेश में बडे - बडे ओहदों पर जाकर इस संस्था का नाम रोशन किया है। मन को शांत रखने के लिए शारीरिक तंदूरुस्ती, खुशदिमाग और चेतनयुक्त शरीर के लिए निरंतर व्यायाम की जरूरत पडती है, हमारे छात्र शारीरिक शिक्षा के साथ-ही-साथ योग कार्यक्रमों में भाग लेकर सेहत से तंदुरुस्त हो रहे हैं। संपूर्ण वातावरण सुंदर है, परिसर में जेनरेटर है । हर प्रकार से सभी का सहयोग रहने से प्रशासन अपना लक्ष्य पारंपारिक संस्कृत अध्यापन और समयानुसार संस्कृतिक मूल्यों को देश भर में प्रसारित करने में कामयाब हो सकता है।

यह संस्था आधारभूत संरचना में समयावधि में अनुभवात्मक दृश्यमान प्रगति एवं विकास किया और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने योजनेतर अनुदान के साथ-ही-साथ योजना अनुदान के अंतर्गत वित्तीय सहायता मंजूर किया है। वार्षिक लेखा और लेखा प्रतिवेदन सी.ए.जी, भारत सरकार द्वारा पारित हुआ है तथा वार्षिक आय तथा व्यय के स्टेटमेंट को विद्यापीठ ने समर्पित भी किया हैं ।

पुनः एक बार, मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ जो विद्यापीठ की उन्नति हेतु निरंतर अपना योगदान देते आ रहे हैं और उपलब्धि के लिए प्रयास कर रहे हैं।

हरेकृष्ण शतपथी

(प्रो. हरेकृष्ण शतपथी)

कुलपति

अनुक्रमणिका

वार्षिक प्रितवेदन २०१४-१५

विषय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	151
शैक्षिक सत्र 2014-15 की मुख्य विशेषताएँ	154
प्रतिवेदन एक नजर 2014-15	155
प्रबंधन बोर्ड के सदस्य	162
विद्वत् परिषद के सदस्य (शैक्षिक सदस्य)	163
वित्त समिति के सदस्य (वित्त सदस्य)	164
विद्यापीठ के अधिकारी	165
विद्यापीठ के विविध संकाय अधिष्ठाता	165
विद्यापीठ के विभाग	166
प्राध्यापक वर्ग सूची	167
प्रस्तावना	170
I. शैक्षिक - कार्यक्रम	171
अ.शैक्षिक	171
आ.अनुसंधान	177
इ. प्रकाशन	178
ई. प्रशिक्षण	179
उ. संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला	183
II. पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ	189
III. पाठ्येतर गतिविधियाँ	193
IV. विशेष कार्यक्रम	209
V. परियोजनाएँ	214
VI. आधारिक संरचना	219
VII. प्रशासन	223

❖❖❖

शैक्षिक सत्र 2014-15 की मुख्य विशेषताएँ

- प्रतिवेदन के तहत वर्ष के दौरान 3195 नई किताबें एवं 200 पांडुलिपियाँ पुस्तकालय को प्राप्त हुई ।
- दिनांक 27.01.2014 से 30.01.2014 तक नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव का आयोजन किया गया और 20 विश्वविद्यालयों / कॉलेजों ने भाग लिया ।
- दिनांक 17-23 मार्च से और 14 - 20 मार्च 2015 तक राष्ट्रीय सेवा योजना के पाँच इकाईयों के माध्यम से विद्यापीठ ने संगठित सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया ।
- उत्कृष्टता केंद्र के कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए हैं।
- आचार्य के नए छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया ।
- अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / अन्य पिछडे और अल्पसंख्यक संबंधित छात्रों के लिए कैरियर कौउन्सलिंग सेल, नेट, प्रशिक्षण केंद्र और उपचारात्मक प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से हर एक शैक्षिक वर्ष में शिक्षण दिया जा रहा है ।
- दिनांक 14.04.2014, भारत रत्न डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 124 वीं जयंती के अवसर पर श्रद्धांजली समर्पित किया गया ।
- अनुसंधान परियोजनाएँ और एक सामान्य अनुसंधान परियोजना मंजूर की गई और परियोजनाएँ प्रगति पर है ।
- दिनांक 5 से 11 अगस्त 2014, संस्कृत साप्ताहिक महोत्सव का आयोजन किया गया ।
- दिनांक 02.10.2014 को अंतराष्ट्रीय अहिंसा दिवस को मनाया गया ।
- दिनांक 30.01.2015, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार तिरुक्कुरलर संदेश : जीवन एवं कार्य राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा मातृ भाषा दिवस का आयोजन किया गया ।
- स्वच्छ भारत कार्यक्रम को सफलता पूर्वक आयोजित किया गया ।
- वार्षिक लेखा प्रतिवेदन, पीडिए, हैदराबाद द्वारा किया गया ।

प्रतिवेदन पर एक नजर - 2014-15

1.	संस्था का नाम एवं पता	:	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ मानित विश्वविद्यालय तिरुपति - 517 507 (आं.प्र.)
2.	स्थापना वर्ष	:	1961
3.	मानित विश्वविद्यालय स्तर का मान्यता वर्ष	:	1987
4.	कुलाधिपति का नाम	:	**डॉ. जानकी वल्लभ पट्नायक**
5.	कुलपति का नाम	:	**प्रो. हरेकृष्ण शतपथी**
6.	कुलसचिव का नाम	:	प्रो. सी. उमाशंकर
7.	विद्यापीठ के प्राधीकारी	:	
	7.1 बोर्ड ऑफ मेनेजमेंट के सदस्य	:	सूची संलग्न है
	7.2 विद्वत् परिषद के सदस्य	:	सूची संलग्न है
	7.3 वित्त समिति के सदस्य	:	सूची संलग्न है
8.	संस्थान का परिसर	:	41.48 एकड
9.	कुल छात्रों की संख्या	:	**2061**
10.	कुल अध्यापक कर्मचारियों की संख्या	:	81
11.	कुल अध्यापकेतर कर्मचारियों की संख्या	:	79
12.	आधारिक संरचना	:	

12.1 **छात्रावास :** विद्यापीठ के परिसर में सात (सप्ताचल) छात्रावासों का निर्माण किया गया है । (1) शेषाचल (2) वेदाचल (3) गरुडाचल (4) पद्माचल (5) विद्याचल (6) नीलाचल और (7) सिंहाचल (8) वकुलाचल को विद्यापीठ में अध्ययन करनेवाले छात्र एवं छात्राओं के निवास एवं भोजन हेतु आवश्यकतानुसार बनाए गए हैं । एक और छात्रवास सिंहाचल नाम से निर्माण किया गया है । वह संपूर्ण रूप से शोध छात्रों संबंधी है।

12.2 **शैक्षिक भवन :** शैक्षिक भवन का निर्माण सभी प्राध्यापक एवं छात्रों के अध्ययन हेतु कक्षाएँ बनाई गई हैं। बनाया हुआ परिसर 5365.78 वर्ग मीटर है । प्रस्तुत शैक्षिक भवन के पास ही दूसरा शैक्षिक भवन का निर्माण किया ।

12.3 **प्रशासनिक भवन :** इस भवन में कई कार्यालय हैं - कुलपति, कुलसचिव, वित्ताधिकारी, परीक्षा नियंत्रक, स्थापना कार्यालय और प्रशासनिक इकाइयाँ, वित्त और लेखा-परीक्षा इकाइ आदि । इस भवन का परिसर 1479.00 वर्ग मीटर है ।

12.4 **इंडोर स्टेडिएम :** इस इंडोर स्टेडिएम का निर्माण छात्र एवं कर्मचारियों के खेल-कूद हेतु अवश्यकतानुसार निर्माण किया गया है । इसमें बहुविध व्यायाम शाला के 16 कार्य केंद्र है । बनाया हुआ परिसर 850.00 वर्ग मीटर है ।

12.5 **खेल मैदान :** इस खेल मैदान को विश्वविद्यालय में सभी खेल - कूद हेतु बनाया गया है । इसका परिसर 5.00 एकड है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने रु. 65.00 लाख खेल मैदान की आधारिक संरचना हेतु मंजूर किया है ।

12.6 **शिक्षा भवन :** इसको प्राध्यापक एवं छात्रों के अध्ययन हेतु कक्षाएँ अवश्यकतानुसार निर्माण किया गया है । इस शिक्षा विभाग में मनः शास्त्र प्रयोग शाला और बहु-विध भाषा प्रयोगालय है। इसको 2005.50 वर्ग मीटर परिसर में निर्माण किया गया है ।

12.7 **अगाऊ कंप्यूटर केंद्र :** इस में छात्रों के अवश्यकतानुसार करीब 100 कंप्यूटर ई-प्रशिक्षण हेतु बनाए गए हैं । फिलहाल वि.अ.ए. के वित्तीय सहायता से उच्छ - स्थानीय कंप्यूटर केंद्र बनाया गया है।

12.8 **संस्कृत - नेट केंद्र :** इसमें उत्कृष्ठता केंद्र कार्यक्रम के निदेशक को कार्यालय, रामायण और महाभारत परियोजनाएँ चलाई जाती हैं । इस के अलावा, इस में आडियो - विडियो रिकार्डिंग हेतु ई-स्टूडियो विश्वविद्यालय के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए बनाई गई है ।

12.9 **संक्रमण निवास /अतिथि गृह :** अतिथि गृह में बारह कमरे हैं उसमें एक विशेष अतिथि के लिए उपयुक्त एवं एक शयनशाला है । इसके निर्माण का परिसर 433.00 वर्ग मीटर है । अतिथि गृह/संक्रमण निवास में मौजूदा मंजिल पर और एक मंजिल पुननिर्मित किया गया। इस वर्ष में अतिथिगृह में एक लिफ्ट को भी व्यवस्थित किया गया ।

12.10 **ग्रंथालय :** ग्रंथालय भवन में महत्वपूर्ण किताबों का संग्रह है । पत्रिकाएँ एवं पांडुलिपियाँ इसमें 98.568 किताबें और 3,897 पांडुलिपियाँ संग्रहित हैं । इसके ग्राहकों में 150 भारतीय पत्रिकाएँ एवं 10 विलायती पत्रिकाएँ हर साल आते हैं । वि.अ.ए. के सहायता से इस ग्रंथालय को इन्फ्लीबनेट कार्यक्रम के अधीन पूरे स्वचालित बनाया गया है । इसके निर्माण का परिसर 150.21.18 वर्ग मीटर है ।

12.11 **कर्मचारी मकान :** विद्यापीठ ने दो टाइप - V मकान, एक टाइप - IV मकान, एक टाइप - III मकान, एक टाइप - II मकान और दो टाइप - I मकान 22 विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को निवास हेतु बनाया गया है ।

12.12 **अनुसंधान और प्रकाशन भवन :** अनुसंधान और प्रकाशन वन डॉ. एम. पल्लंराजू, माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सकराकर, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 23, जनवरी, 2014 को उद्घाटित किया गया ।

12.13 **महिला सुविधाएँ केंद्र :** महिला छात्र एवं कर्मचारियों के सहायता के उन्नयन केलिए आयोजित केंद्र है ।

12.14 **आंध्र बैंक भवन :** बैंक कर्मचारियों तथा छात्रों की और जनता की रकम की लेन देन की आवश्यताओं की पूर्ति कर रही है ।

12.15 **डाक - घर :** विभागीय डाकॉघर विद्यापीठ के छात्र, कर्मचारी और जनता का भी सेवा कर रही है।

12.16 **विश्वविद्यालय कैंटिन भवन :** कैंटिन आई.आर.टी.सी. द्वारा संचालित है जो कर्मचारी, छात्र और जनता की जरूरतों की पूर्ति करती है ।

12.17 **ए.टी.एम. सुविधा :** आंध्र बैंक, विद्यापीठ के शाखा ए.टी.एम. की विस्तार सेवा परिसर में महिला छात्रायाँ/ कर्मचारियों की सेवार्थ संचलित है ।

12.18 **योग मंदिर भवन :** योग और ध्यान कक्षाएँ छात्रों की, कर्मचारियों तथा जनता की भी जरूरतों की पूर्ति के लिए है ।

13. **शैक्षिक कार्यक्रम :**

13.1 **औपचारिक कार्यक्रम :** प्राक - शास्त्री ; शास्त्री (बी.ए.) ; बी.ए. ; बी.एससी. आचार्य (एम.ए.), एम्.ए.(हिंदी) ; कंप्यूटर विज्ञान एवं भाषा तकनीकी में एम.एससी.

13.2 **अनुसंधान कार्यक्रम :** एम.फिल (विशिष्टाचार्य), पी.एच.डी.(विद्यावारिधी), डी.लिट (विद्यावाचस्पति)

13.3 **डिप्लोमा और प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम :** डिप्लोमा में मंदिर संस्कृति ; पौरोहित्य ; वेब तकनीकी ; योग विज्ञान ; प्राकृतिक भाषा प्रक्रमण ; संस्कृत एवं कानून ; प्रबंधन प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम : मंदिर संस्कृति ; पौरोहित्य ; प्रयोजन मूलक अंग्रेजी और ज्योतिष ।

13.4 **दूरस्थ शिक्षा :** प्राक - शास्त्री ; शास्त्री (बी.ए.) ; आचार्य (एम.ए.) ; संस्कृत में प्रमाण - पत्र; संस्कृत में डिप्लोमा और स्नातकोत्तर योग विज्ञान ।

13.5 **नवाचारी पाठ्यक्रम :** वि.अ.ए. के मदद से विद्यापीठ में निम्न पाठ्यक्रमों का नवाचारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है : शाब्दबोध में एम.ए. ; एम्.ए.आई.टि(प्राचीनी भारत प्रबन्धन तकनिकों में मास्टर (दो वर्ष))।

13.6 **सेतु पाठ्यक्रम :** स्नातकोत्तर में प्रवेश लेनेवालों को विद्यापीठ में छात्रों के ज्ञान विकास हेतु सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया जाता है ।

14. **परियोजनाएँ-**

14.1 **पारंपरिक शास्त्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र :** वि.अ.ए. ने विद्यापीठ में पारंपरिक शास्त्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता दी है और XI वी योजना के अंतर्गत 3.00 करोड रुपये की मंजूरी भी की है । सी.ओ.ई. के अंतर्गत निम्न कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है -

1. शास्त्र वारिधि (प्रमुख पारंपरिक शास्त्र के विषय पर अध्ययन)
2. प्रकाशन
3. संस्कृत स्वंय अध्यय कीट्स
4. लिपि विकास प्रदर्शिनी
5. संस्कृत - नेट गतिविधि का विस्तार
6. सामान्य भाषा मास्टर का प्रक्रमण
7. शास्त्रीक - डिस्कोर्सेस का आडियो-विडियो प्रलेखिकरण
8. आडियो-विडियो रिकार्डिंग केंद्र

9. पांडुलिपियों का डिजिटिलैजेशन
10. प्राचीन लिपियों के अध्ययन उपकरण
11. रीचुल्स में अर्टफ्याक्ट्स उपयोग प्रलेखीकरण
12. योग, दबाव प्रबंध एवं नीरोग केंद्र

14.2 **उत्कलपीठ –** उडीसा सरकार द्वारा प्रयोजित उत्कलपीठ अध्ययन केंद्र सन 2001 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में प्रारंभ किया गया है।

(1) श्री जगन्नाथ सुरक्षा वाहिनी, पुरी, हॉऊस खास, जगन्नाथ मंदिर, नईदिल्ली के सहयोग से उत्सल पीठ ने दिनांक 31 अक्टूबर और 1 नवंबर को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

(2) श्री जगन्नाथ संस्कृति पर पूरे संस्कृत कार्य का दूसरा वाल्युम उत्कलपीठ की ओर से प्रकाशन के लिए तैयार है।

(3) आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा ''सदाविशायक संग्रह'' उत्कलपीठ प्रकाशन के लिए प्रस्तुत किया है ।

(4) भगवान जगन्नाथ पर विशेष ग्रंथ विशेष संस्करण तैयार है ।

(5) भगवान जगन्नाथ अनुसंधान कार्य का एक ग्रंथ सूची तैयार है ।

(6) उत्कल पीठ द्वारा जयदेव साहित्य का एक विशेष संस्करण प्रकाशन के लिए तैयारी है ।

14.3 **सॉप (विशेष सहायता कार्यक्रम) :** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग - साप के मदद से तीन विभागों को अनुदान प्राप्त हुआ है - साहित्य विभाग और शिक्षा विभाग में चलाए जा रहे हैं ।

1. **साहित्य विभाग :** 1.4.2013 से 31.3.2014 तक के वि.अ.ए. के वित्तीय सहायता के अधीन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस.I स्तर को साहित्य विभाग में पाँच साल के लिए अनुदान दिया गया है । इसके लिए रुपये 31.00 लाख तथा दो अनुसन्धान अध्येयताओं की मंजूरी दी है । इस कार्यक्रम का विषय है - **''भारत में संस्कृत काव्यशास्त्र''।** प्रो. सी. ललिताराणी समन्वयक और डॉ. के. राजगोपालन सह समन्वयक हैं ।

2. **शिक्षा विभाग :** सन 2015-2020 से वि.अ.ए. के अधिन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस. I स्तर को शिक्षा विभाग को पाँच साल के लिए दिया गया है । इसके लिए रुपये 97.50 लाख की वित्तीय सहायता की मंजूरी दी है । इस कार्यक्रम का विषय है - **''भाषा विकास एवं सामग्री उत्पादन''** ।

3. **दर्शन विभाग :** सन् 2011-12 से वि.अ.ए. के अधीन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस.I स्तर दर्शना विभाग को पाँच साल के लिए दिया गया है। इसके लिए रुपये 14.72 लाख की वित्तीय सहायता तथा दो अनुसंधान अध्येयताओं की मंजूरी दी है। इस

कार्यक्रम का विषय है - नव्य न्याया (गंगेशोपाध्याय द्वारा तत्त्वचिंतामणि की टीकाएँ एवं उपटीकाएँ की महत्वपूर्ण सर्वेक्षण)

14.3 **योगी नारेयणी परियोजना :** राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने योगी नारेयणा दर्शन परियोजना दार्शनिक कार्यों को संस्कृत, हिंदी और तेलुगु भाषाओं में अनुवाद गोकुल एजुकेशनल फाउंडेशन, कैवारं, कर्नाटक के समझौता के साथ परियोजना को शुरू किया है। प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु समन्वयक है । कार्य प्रगति के लिए परियोजना अध्येता की नियुक्ति के लिए आवश्यक कदम लिया गया । दिनांक 16.12.2015 को (तिमाही) की परियोजना को शुरु करने के लिए किया गया है और प्राप्त रु. 4.68 लाख ।

14.3 **ई-पी.जी. पाठशाला :** स्नातकोत्तर विषयों संस्कृत (व्याकरण में आचार्य) (ई-पी.जी. पाठशाला) के लिए ई सामग्री विकास के उत्पादन के बारे में एल.आर.एफ.1-9/2013 पत्र संख्या के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मंजूर किया गया था । रु. 11.2 लाख की 16 कागजातों प्रयोजन के लिए आवंटित किया गया था । प्रो. एस. सत्यनारायण मूर्ति, प्रोफेसर, व्याकरण विभाग को प्रधान अन्वेषक के रूप में नियुक्त किया गया था ।

15. **पाठ्येतर गतिविधियाँ / पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ :**

15.1 **नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा उत्सव :** राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी तथा कुलसचिव प्रो.. सी. उमाशंकर, के देख रेख में दिनांक 27-30 जनवरी, 2015 तक नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव का आयोजन किया था । भारत भर से 200 छात्र तथा 20 टीम समारोह में भाग लेने के लिए आए थे । इस अवसर पर शेवलियर अवार्डि महामहोपाध्याय प्रो. एन.एस. रामानुज ताताचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रथम कुलपति उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे । समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. वी.आर. पंचमुखी पूर्व कुलाधिपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति थे । श्री प्रताप चंद्र साडंगी, अमृतवाणी सेवा प्रतिष्ठानम के अध्यक्ष एवं प्रो. के.ई. देवनाथन, कुलपति, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति समापन समारोह के सम्माननीय अतिथि थे ।

15.2 **वार्षिक खेल - कूद :** अलग-अलग विधाओं के इंडोर खेलों का आयोजन विद्यापीठ के कई छात्र एवं कर्मचारियों के लिए किया गया था ।

15.3 **राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ :** विद्यापीठ रा.से.यो.कार्यक्रमों के आयोजन करने का मूल उद्देश्य छात्रों में स्वतन्त्र कार्यकुशलता संबंध में शक्ति भरना है। इस उत्सव में श्रृंगेरी ने रोलिंग शील्ड प्राप्त किया था ।

रा से यो के सदस्य तिरुपति के उपशहरी प्रांतों में घूमकर रक्तदान, रक्त संचारण, हृदरोग, एच.आई वी के बारे में महत्वपूर्ण विचारों से अवगत करवाया। और स्वच्छभारत कार्यक्रम में भाग लिया ।

15.4 संगोष्ठियाँ / सम्मेलन / कार्यशालाएँ :

अ. शोध पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला : दिनांक 26-27 जुलाई, 2014 को साहित्य विभाग ने विद्यापीठ के छात्रों के लिए शोध पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था।

आ. तिरुक्कुरल के संदेश पर राष्ट्रीय संगोष्ठी : राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में श्री तिरुवल्लुवर के जीवन और कार्यों के आधार पर तिरुक्कुरल का संदेश, तिरुवल्लुवर की पवित्र सोच को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रतिष्ठित रूप से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था।

इ. सुशासन दिवस पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के उपलक्ष्य में सुशासन दिवस को एक प्रतिष्ठित ढ़ंग से आयोजन किया।

ई. मातृभाषा दिवस - 2015 : मातृभाषा एवं राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 21 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा बहुत ही प्रतिष्ठित रूप से मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विविध भाषाओं में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था ।

उ. ''संस्कृत काव्य में तकनीकी शब्दों के विश्वकोश'' पर साहित्य विभाग सॉप, द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी : ''संस्कृत काव्य में तकनीकी शब्दों के विश्वकोश'' दो दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन। दिनांक 3-4 मार्च 2015 को विद्यापीठ के परिसर में साप, साहित्य विभाग द्वारा आयोजित किया गया था ।

ऊ. ''भास्कराचार्य के जीवन एवं कार्य'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी : ''भास्कराचार्य : जीवन एवं कार्य'' पर दिनांक 8-12 दिसंबर 2014 को गणित विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला । डीएसटी - एसई आर बी (गणितीय विज्ञान) भारत सरकार, नईदिल्ली द्वारा प्रायोजित ।

15.6 उत्सवों का आयोजन /त्योहार :

(i) **संस्कृत सप्ताह का आयोजन :** दिनांक 15 से 11 अगस्त, 2014 तक विद्यापीठ में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया था।

(ii) **ओणम :** केरलावालों के नये वर्ष के उपलक्ष्य में पोंप और गैएटी का आचरण 7 सितंबर, 2014 विद्यापीठ में किया गया था ।

(iii) **पोंगल :** दिनांक 14 जनवरी, 2015 को उत्तरायण पवित्र काल और मकर संक्रांति धार्मिक त्योहार मनाया गया था।

लेखा

1.	योजनेतर अनुदान बजट प्राप्त	:	1889.06 लाख रुपये
	योजनेतर अनुदान बजट का व्यय	:	2124.65 लाख रुपये
2.	XII योजना अनुदान प्राप्त	:	-
	व्यय	:	281.38 लाख रुपये
3.	आय के स्रोत	:	वि.अ.ए., ति.ति.दे. / एम एच और डी. और अन्य से निधियाँ प्राप्त
4.	ति.ति.दे. अनुदान	:	100.00 लाख
7.	मां.सं.वि.मं. अनुदान (आर. एस.के.एस /		
	रा आई ओ टी	:	6.10 लाख रुपये
8.	उत्कृष्ठता केंद्र अनुदान	:	-----

लेखा परीक्षा की स्थिति

वर्ष 2014-15 का सांविधानिक लेखापरीक्षा को प्रधान निदेशक लोखापरीक्षा (सेंट्रल), हैदराबाद आं.प्र. दिनांक 15.7.2015 से 31.7.2015 किया गया और प्रतिवेदन प्राप्त हुआ ।

* * *

प्रबंधन बोर्ड के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी
कुलपति/अध्यक्ष

संयुक्त सचिव, (सी.यु. & एल.)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा
संकाय प्रमुख, साहित्य और संस्कृति संकाय
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
तिरुपति

प्रो. श्रीमति. एम.वी. रमणा,
संस्कृत विभाग,
आंध्र विश्वविद्यालय, वालटेअर,
विशाखपट्नम

प्रो. सिनीरुद्ध दास,
संस्कृत विभाग,
मद्रास विश्वविद्यालय, चेपौक,
चन्नै - 600 005

प्रो. राममूर्ति नाईडु,
सदस्य वि.अ.ए.
35, मौंटेन वियु, अपार्टमेंट
रोड.सं.2, बंजारा हिलस
हैदराबाद - 500 034

प्रो. ए.सि.शारंगी
केन्द्रीय सरकार, मा.सं.वि.मं. के नामित
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रो. राधाकांत ठाकुर
शैक्षिक संकाय प्रमुख
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

प्रो. रजनीकांत शुक्ला
शिक्षा विभाग के संकाय
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

डॉ. उन्निकृष्णन नंपियातिरि
सह आचार्य, ज्योतिष विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

प्रो. सी. उमाशंकर
कुलसचिव / सचिव
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

विद्वत परिषद के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी - कुलपति/अध्यक्ष

1. प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति, आर.एस.वि.,तिरुपति - अध्यक्ष
2. प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति संकाय, आर.एस.वि.,तिरुपति.
3. प्रो. आर.एल.एन्.शास्त्री,वेदवेदांग संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
4. प्रो. ओ.श्रीरामलाल शर्मा, दर्शन संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
5. प्रो.रजनी कान्त शुक्ला, संकाय प्रमुख, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति.
6. प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
7. प्रो.जी.एस.आर.कृष्ण मूर्ती, शैक्षिक समन्वयक, आर.एस.वि.,तिरुपति
8. प्रो.एम.एल.नरसिंह मूर्ति, विभागाध्यक्ष, अद्वैत वेदान्त विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
9. प्रो.जे.रामकृष्ण, विभागाध्यक्ष, व्याकरण विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
10. प्रो.जी.एस.आर.कृष्ण मूर्ती, विभागाध्यक्ष, साहित्य विाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
11. प्रो. सीएच.पी. सत्यनारायण, प्रभारी विभागाध्यक्ष, अनुसंधान तथा प्रकाशन विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
12. प्रो.आर.जे.रमाश्री , विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
13. डा.ए.श्रीपादभट्ट, विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग,आर.एस.वि.,तिरुपति
14. प्रो. प्रह्लाद आर जोशी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
15. प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित, विभागाध्यक्ष, द्वैतवेदान्तविभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
16. प्रो. वी.एस. विष्णुभट्टाचार्युलु, विभागाध्यक्ष, आगम विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
17. प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपत्कुमाराचार्युलु, विभागाध्यक्ष, न्याय विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
18. डॉ. सी. राघवन, विभागाध्यक्ष, विशिष्टाद्वैत वेदांतविभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
19. डॉ. आर. दीप्ता, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
20. प्रो. एस.सत्यनारायण मूर्ति, व्याकरण विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति.
21. प्रो.वी.पुरन्दर रेड्डी, अद्वैतवेदान्त विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
22. प्रो.टी.वी.राघवाचार्युलु, आगम विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
23. प्रो. एम.एस.आर. सुब्रह्मण्य शर्मा, अद्वैत वेदांत विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
24. प्रो. सी.ललिता राणी, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
25. प्रो. एन. लता, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
26. प्रो. वी.सुजाता, आंग्ल विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
27. प्रो.सत्यनारायण आचार्य, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
28. प्रो. उन्निकृष्णन नंपियातिरी, ज्योतिष विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
29. डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
30. डॉ. सी. रंगनाथन, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
31. श्री.पी.नागमुनि रेड्डी, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
32. डॉ. राधा गेविंद त्रिपाठी, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
33. डॉ. एस. दक्षिणा मूर्ति शर्मा, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
34. प्रो. के.सी. पाढी, अध्यक्ष, पी.जी. काउन्सिल, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, 752 003 ओड़िशा
35. प्रो. आर.सी. पंडा, व्याकरण विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वारणासी, 221 005
36. प्रो. ए.पी. सच्चिदानंद, प्राचार्य, राजीवगाँधी परिसर, शृंगेरी
37. कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
38. कुलपति, श्री लाल बहदूर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कुतुब संस्थाक्षेत्र, नई दिल्ली
39. कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्व विद्यालय, श्री विहार, पुरी

प्रो. सी. उमा शंकर - कुलसचिव / सचिव

वित्त समिति के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी कुलपती	अध्यक्ष
संयुक्त सचिव केन्द्रीय और मानितविश्वविद्यालयाएँ मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
संयुक्त सचिव, आई.एफ.डी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली	सदस्य
प्रो.के.राममूर्ति नाईडु 35, मौंटेन अपार्टमेंट रोड सं.2, बंजारा हिल्स हैदराबाद- 34	सदस्य
प्रो. एन.टी.वी.सुब्बा राव भूतपूर्व रैक्टर, श्री.प.म.वि. प्रोफेसर, राष्ट्रीय कानून स्कूल ऑफ भारत विश्वविद्यालय बेंगलूरु	सदस्य
वित्ताधिकारी	सचिव

विश्वविद्यालय के अधिकारी

1. **प्रो.हरेकृष्ण शतपथी**	कुलपति
2. **प्रो. सी. उमा शंकर**	कुलसचिव
3. **प्रो. सी. उमा शंकर**	परीक्षा नियंत्रक प्रभारी (01.01.2015 से)
4. **श्री.वी.जी.शिवशंकर रेड्डी**	उप कुलसचिव और वित्ताधिकारी प्रभारी (01.07.2013 से)
5. **डा.के.राजगोपालन**	जन-संपर्क अधिकारी (फरवरी, 2015 तक)
डा.एस. दक्षिणामूर्ति शर्मा	जन-संपर्क अधिकारी (मार्च, 2015 से)
6. **श्री.सी.वेंकटेश्वर्लु**	सहायक कुलसचिव (वित्त एवं लेखा)
7. **श्री.टी.गोविंदराजन**	सहायक कुलसचिव (शैक्षिक)
8. **श्रीमती एम. उषा**	सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
9. **श्री.सी.ईश्वरय्या**	सहायक परीक्षा नियंत्रक/वि.का.

विद्यापीठ के विविध संकाय अधिष्ठाता

शैक्षणिक कार्य	:	**प्रो. आर्.के.ठाकुर**
साहित्य और संस्कृति संकाय	:	**प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा**
वेद वेदांग संकाय	:	**प्रो. जे. रामकृष्ण**
दर्शन संकाय	:	**प्रो. वी.पुरन्दर रेड्डी**
शिक्षा संकाय	:	**प्रो. रजनीकांत शुक्ला**

विद्यापीठ के विभाग

❖ **शिक्षा शास्त्र संकाय:**

1. शिक्षा विभाग
2. शारीरिक शिक्षा विभाग

❖ **साहित्य एवं संस्कृति संकाय**

1. साहित्य विभाग
2. पुराणेतिहास विभाग
3. अंग्रेजी विभाग
4. तेलुगु विभाग
5. हिंदी विभाग

❖ **अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग**

❖ **दर्शन संकाय**

1. न्याय विभाग
2. अद्वैत वेदांत विभाग
3. विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग
4. द्वैत वेदांत विभाग
5. आगम विभाग
6. मीमांसा विभाग
7. सांख्य योग और योगविज्ञान विभाग
8. शाब्दबोध सिस्टम्स और कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स

❖ **वेद वेदांग संकाय**

1. व्याकरण विभाग
2. ज्योतिष विभाग
3. धर्मशास्त्र विभाग
4. वेद भाष्य विभाग
5. कंप्यूटर विज्ञान विभाग
6. इतिहास विभाग
7. गणित विभाग

प्राध्यापक वर्ग सूची

शिक्षा शास्त्र संकाय

❖ शिक्षा विभाग

1. प्रो. वी.मुरलीधर शर्मा, आचार्य
2. प्रो. रजनीकांत शुक्ला, आचार्य और संकाय प्रमुख
3. प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी, आचार्य
4. प्रो. एन्. लता, आचार्य
5. डा. पी. वेंकट राव, सह आचार्य
6. श्री पी. नागमुनि रेड्डी, सहायक आचार्य (चयन वर्ग)
7. के. कादम्बिनी, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)
8. डा. राधागोविंद त्रिपाठी, सहायक आचार्य
9. डा. एस. दक्षिणा मूर्ति शर्मा, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)
10. डा. एस. मुरलीधर राव, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)
11. डा. आर. चंद्रशेखर, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण की पदोन्नति हुई)
12. डा. ए. सच्चिदानन्द मूर्ति, सहायक आचार्य
13. डा. ए. सुनीता, सहायक आचार्या

साहित्य एवं संस्कृति संकाय

❖ साहित्य विभाग

1. प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, आचार्य एवं संकाय प्रमुख
2. प्रो. जी. एस. आर.कृष्णमूर्ति, आचार्य
3. प्रो. सी. ललिता राणी, आचार्या
4. डा. सत्यनारायण आचार्य, आचार्य
5. डा. आर. सदाशिव मूर्ति, सह आचार्य
6. डा. सी. रंगनाथन, सह आचार्य
7. डा. के. राजगोपालन, सह आचार्य
8. डा. प्रदीपकुमार बाग, सहायक आचार्य
9. डा. भारत भूषण रथ, सहायक आचार्य
10. डा. जे.बी. चक्रवर्ति, सहायक आचार्य
11. के.लीनाचंद्र, सहायक आचार्य
12. डा. श्वेतपद्म शतपथी, सहायक आचार्य
13. डा. ज्ञान रंजन पण्डा, सहायक आचार्य

❖ पुराणेतिहास विभाग

1. डा. पारमिता पण्डा, सहायक आचार्या

❖ अंग्रेजी विभाग

1. प्रो. वी. सुजाता, आचार्या
2. डा. आर. दीप्ता, सह आचार्या

❖ तेलुगु विभाग

1.डा. नल्लन्ना, सहायक आचार्य
2. डा. विजयलक्ष्मी, सहायक आचार्या

❖ हिंदी विभाग

डा. टी.लता मंगेश, सहायक आचार्या

❖ अनुसन्धान एवं प्रकाशन विभाग

1. डा. सी.एच.पी. सत्यनारायण, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, निदेशक, दूरस्त शिक्षण
2. डा. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल, सह आचार्य
3. डा. के. सूर्यनारायण, सह आचार्य
4. डा. सोमनाथ दास, सहायक आचार्य
5. श्री सी.नागराजु, सहायक आचार्य

दर्शन संकाय

❖ न्याय विभाग

1. प्रो. ओ.श्री रामलाल शर्मा,आचार्य
2. प्रो.पी.टी.जी. वाई. संपत्कुमाराचार्युलु,आचार्य

❖ अद्वैत वेदांत विभाग

1. प्रो. एम.एल. नरसिंह मूर्ति,आचार्य और विभागाध्यक्ष
2. प्रो.वी. पुरंदर रेड्डी, आचार्य और संकाय प्रमुख
3. डा.एम.एस.आर.सुब्रह्मण्य शर्मा,आचार्य
4. डा.के. गणपति भट्ट, सह आचार्य
5. डा. के. विश्वनाथ, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग

1. प्रो. के. ई. देवनाथन्, आचार्य
   (20.2.2014 का लीन लिया - एस.वी. वेदिक विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप नियुक्त हुए ।)
2. डा. सी. राघवन्, सह आचार्य

❖ द्वैत वेदांत विभाग

1. प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित,आचार्य
2. डा. नारायण,सहायक आचार्य

❖ **आगम विभाग**

1. प्रो.टी.वी. राघवाचार्युलु, आचार्य
2. प्रो. वी. एस. विष्णुभट्टाचार्युलु, आचार्य
3. डा. पि.टि.जि.रंग रामानुजाचार्युलु, सहायक आचार्य

❖ **मीमांसा विभाग**

डा. टी. एस.आर. नारायणन, सहायक आचार्य

❖ **सांख्य योग और योग विज्ञान विभाग**

डा. डी. ज्योति, सहायक आचार्या

वेद वेदांग संकाय

❖ **व्याकरण विभाग**

1. प्रो. एस. सत्यनारायण मूर्ति, आचार्य
2. प्रो. आर.एल. नरसिंह शास्त्री, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
3. प्रो. जे. रामकृष्ण,आचार्य एवं संकाय प्रमुख
4. डॉ. एन.आर.रंगनाथन ताताचार्य, सहायक आचार्य
5. श्री यशस्वी, सहायक आचार्य
6. श्री सन्तोष माजी, सहायक आचार्य

❖ **ज्योतिष विभाग**

1. प्रो. राधाकान्त ठाकुर, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. ए. श्रीपाद भट्ट, आचार्य
3. प्रो. वी. उन्निकृष्णन् नम्पियातिरी, आचार्य
4. डा. कृष्णेश्वर झा,सहायक आचार्य
5. डा. के.एस. लवकुमार,सहायक आचार्य (28.11.2014 को देहांत हुआ)

❖ **धर्मशास्त्र विभाग**

1. डा. शितांशु भूषण पण्डा, सहायक आचार्य
2. डा. सुधांशु शेखर मोहापात्र, सहायक आचार्य

❖ **वेद भाष्यम विभाग**

डा. निरंजन मिश्र, सहायक आचार्य

❖ **कंप्यूटर विज्ञान विभाग**

1. प्रो. आर.जे. रमाश्री, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. श्री. जी. श्रीधर, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ **शाब्दबोध विभाग**

डा. ओ.जी.पी. कल्याण शास्त्री , सहायक आचार्य

❖ **इतिहास विभाग**

डा. एस. आर. शरण्य कुमार, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ **गणित विभाग**

1. डा. वी. रमेश बाबु, सहायक आचार्य
2. डा. ए.चन्दुलाल, सहायक आचार्य

❖❖❖

प्रस्तावना

तिरुमला पर्वत के पादतल में स्थित यह राष्ट्रियसंस्कृत विद्यापीठ गत पाँच दशकों से संस्कृत के अध्ययन एवं अध्यापन की दृष्टि से छात्रों एवं विद्वानों का लक्ष्य हो गया है। यहाँ देश के विभिन्न भाग से विभिन्न धर्म जाति एवं भाषा के छात्र आते हैं जिससे यह विद्यापीठ एक छोटे भारत की तरह दिखता है। यहाँ अध्ययन एवं अनुसंधान केलिए उत्कृष्ट सुविधा एवं अत्यन्त अनुकूल वातावरण उपलब्ध है। नए पाठ्यक्रम, भव्यभवन, कम्पूटर आदि आधुनिक उपसाधनों ने संस्कृत अध्ययन - अध्यापन के क्षेत्र में इस विद्यापीठ को उन्नत बना दिया हे। तिरुपति शहर के मध्यभाग में अवस्थित विद्यापीठ परिसर विशाल तरू के छाया से, सुंदर बगीचे एवं मनोहर वन से अत्यंत आकर्षणीय लगता है। **स्थापना** - भरत सरकार द्वारा गठित केन्द्रीय संस्कृत आयोग की 1950 वर्ष में अनुशंसा पर पारंपरिक संस्कृत की आधुनिक अनुसंधान शैली के साथ प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षामंत्रालय द्वारा तिरुपति में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति सोसाइटी नाम से एक स्वयत्त संस्था पंजीकरण करवाया। विद्यापीठ का शिलान्यास 4 जनवरी, 1962 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा. एस. राधाकृष्णन् ने किया था। तिरुमल-तिरुपति-देवस्थान ट्रष्ट बोर्ड के तत्कालीन कार्यनिर्वबणाधिकारी डाँ.सी.अन्नाराव जी ने बयालीस एकड जमीन तथा भवन निर्माण हेतु 10 लाख रूपये दिये थे।

सुविख्यात विद्वान एवं राजनेता भारत के भूतपर्वमुख्य न्यायाधीश पतंजली शास्त्री विद्यापीठ सोसाइटी के अध्यक्ष रह चुके। उसके बाद प्राच्यविद्या के प्रसिद्ध विद्वान पी. राघवन तथा लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री.एम. अनन्तशयनम अय्यंगार जी अध्यक्ष हुए। डाँ. बी. आर. शर्माजी ने 1962-1970 तक प्रथम निर्देशक के रूप में काम किया है। श्री वेंकटराघवन, डॉ. मण्डन मिश् डॉ.आर.करुणाकरन, डॉ.एम.डी बाल सुब्रह्मण्यम एवं प्रो.एन.एस.रामानुज ताताचार्य ने क्रमशः प्राचार्य के रूप में अपने वैदुष्य एवं प्रशासनिक अनुभव से इस विद्यापीठ की सेवा की।

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ को अप्रैल, 1971 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संरक्षण में शिक्षामंत्रालय की स्वायत्त संस्था का रूप दिया गया। रजत जयंती महोत्सव के दौरान वर्ष 1987 में **श्री.पी.वी.नरसिंहाराव** जी भारत सरकार के तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के यू.जीयसी अधिनियम 1956 के अनुभाग 3 (राजपत्र अध्यादेश नं.एफ.9-285 यू - 3.16 - 111987) के अनुसार विद्यापीठ को **मानित विश्वविद्यालय** घोषित किया। **मानित विश्वविद्यालय** का औपचारिक रूप से उद्घाटन दिनांक 26-8-1989 को तत्कालीन राष्ट्रपति **आर. वेंकटरामन्** के द्वारा किया गया। विद्यापीठ ने शैक्षणिक सत्र 1991 - 1992 से मानित विश्वविद्यालय के रूप में काम करना शुरू किया। उस समय से अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसे पं.श्री पट्टाभिरामशास्त्री, प्रो. रमारंजन मुखर्जी और डॉ.वी.आर.पंचमुखी इस विद्यापीठ के कुलाधिपति रहे है। प्रो.एन.एस. रामानुज ताताचार्य, प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य और प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य ने क्रम से 1989 से 1994 , 1994 से 1999 और 1999 से 2004 तक कुलपति के रूप में इस विद्यापीठ की सेवा की है। वरिष्ठ आचार्य प्रो.के.ई.गोविन्दन प्रभारी कुलपति के रूप में दो वर्ष अप्रैल 2006 तक सेवा की है। दिनांक 16-06-2008 से असम के राज्यपाल **प्रज्ञानुवाचस्पति डॉ. जानकीवल्लभ पट्नायक** जी विद्यापीठ के कुलाधिपति पद पर विराजमन हैं। **प्रो.हरेकृष्णशतपथी जी विद्यापीठ के कुलपति हैं, वे 19 अप्रैल 2006 से कुलपति हैं।** अध्ययन - अध्यापन, शोध, प्रकाशन तथा संस्कृत के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार के क्षेत्र में विद्यापीठ की उपलब्धियों को देखते हुए विद्यापीठ को निम्न उपाधियों से प्रोत्साहित एवं अलंकृत किया गया है।

- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पारंपरिक शास्त्रीय विषय के क्षेत्र में उत्कृष्टता केन्द्र का मंजूर हुआ है।**
- **राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने 2003 में ए$^{+}$ श्रेणी से प्राधिकृत किया है।**
- **राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठम मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा नियुक्त 'टांडन समिति' द्वारा सबसे अच्छा मानित विश्वविद्यालय के स्थान पर दिया गया है ।**

I. शैक्षणिक - कार्यक्रम

अ. शैक्षिक

संस्कृत पढनेवाले छात्रों के लिए विद्यापीठ औपचारिक अध्यापन, व्यावसायिक एवं अनौपचारिक रुप से कई पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है। 2014-2015 के लिए निम्न पाठ्यक्रमों को चलाया जा रहा हैं -

I. औपचारिक शिक्षा :

1. स्नातक पाठ्यक्रम

1. प्राक् - शास्त्री (इंटरमीडियट के समकक्ष)
2. शास्त्री (बी.ए. समकक्ष)
3. शास्त्री वेदभाष्य (बी.ए.समकक्ष)
4. बी.ए.
5. बी.एस.सी.

2. स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

1. आचार्य (एम्.ए.के समकक्ष) 14 शास्त्रों में
2. आचार्य संस्कृत में (शाब्दबोध प्रणाली तथा भाषा तकनीकी)
3. एम. एससी. कम्प्यूटर विज्ञान और भाषा तकनीकी

वि.अ.ए के नवाचारी कार्यक्रम

4. एम.ए.हिंदी
5. तुलनात्मक सौन्दर्य शास्त्र (साहित्य) में पी.जी.डिप्लोमा
6. एम.ए.आई.एम.टी

3.शोध कार्यक्रम

1. एम्.फिल्.(पांडुलिपि शास्त्र और पुरालिपि शास्त्र को मिलाकर 11 शास्त्रों में)
2. एम्.फिल (शिक्षा शास्त्र)
3. विद्यावारिधि -(पीएच्.डी.समानांतर) सभी शास्त्रों/साहित्य/शिक्षा शास्त्र
4. विद्यावाचस्पति (डि.लिट्.समानांतर) सभी शास्त्रों और शिक्षा में

4.वृत्तिक पाठ्यक्रम-

1. शिक्षा शास्त्री (बी. एड्. समानांतर)
2. शिक्षा आचार्य (एम्, एड्. समानांतर)

II सायंकालीन एवं अंशकालिक कार्यक्रम

1. स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. योग विज्ञान
2. प्राकृति भाषा संसाधन
3. वेब तकनीकी

2. डिप्लोमा पाठ्यक्रम-

1. मंदिर संस्कृति
2. पौरोहित्य
3. संस्कृत एवं कानून डिप्लोमा
4. प्रबंधन और प्राच्य अभिविन्यास

3. प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

1. मंदिर संस्कृति
2. पौरोहित्य
3. प्रयोजनमूलक अंग्रेजी
4. ज्योतिष
5. ई-अधिगम

4. विद्यापीठ के निम्न वृत्ति आभिविन्यास कार्यक्रम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वित्तीय सहायता से चलाए जानेवाले पाठ्यक्रम

1. भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.
2. वेब तकनीकी शास्त्र
3. पुराणेतिहास
4. वास्तु शास्त्र
5. संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक और रचनात्मक लेखन

प्रवेश प्रक्रिया - विद्यापीठ के शैक्षणिक-सत्र जून-जुलाई से शुरु होता है और अप्रैल-मई में परिक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं अर्ध वार्षिकीय परीक्षा केवल नियमित शास्त्री तथा आचार्य पाठ्यक्रम मे होती हैं। शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षा आचार्य में नही होती है। प्राकशास्त्री, शास्त्री, बि.ए. पाठयक्रम में प्रवेश के लिए पूर्वपरीक्षा के प्राप्तांक एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार को आधार माना जाता है। आचार्य (एम्.ए.) पाठयक्रम, शिक्षाशास्त्री (बि.एड) शिक्षा आचार्य(एम.एड) और विद्यावारिधि में नामांकन हेतु विद्यालय स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर विद्यापीठ द्वारा प्रवेश परीक्षा ली जाती है। नेट-स्लेट-एम.फिल-पी.एच.डी उपाधिवालो को विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा से छुट दी गई है। वे नियमित या अंश कालिक के आधार पर अनुसंधान कर सकते हैं। सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश की सूचनाएँ विश्वविद्यालय की वेबसाईट- http://www.rsvidyapeetha.ac.in पर उपलब्ध है ।

शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के स्नातकोत्तर स्तर तक के कार्यक्रम जून में ही शुरु हुए। शिक्षा शास्त्री (बी.एड) और शिक्षा आचार्य (एम.एड) और विद्यावारिधी (पी.एच.डी) के अतिरिक्त सभी पाठ्य क्रमों के लिए योग्यता परीक्षा और मौखिक के आधार पर प्रवेश दिये गये है। शिक्षा-शास्त्री (बि.एड.) शिक्षा आचार्य (एम.एड) और विद्यावारिधि (पि.एच.डी) के प्रवेश राष्ट्रीय स्थरीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा क्रमशः CPSST-CPSAT औरCVVT की नामावली में आयोजित की गई नेट, स्लेट, एम.फिल, पी.एच.डी,धारकों को CVVT से छूट दी गयी है । शोधार्थी अपने शोध कार्य को नियमित या रेगुलर और निजी या प्राईवेट के रूप में आगे बढा सकते है। सभी शास्त्रों के पाठ्यक्रम को केवल संस्कृत के माध्यम से ही पढाया जाता है। और परीक्षा संस्कृत में भी आयोजित की जाती है। आधुनिक विषयों के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के लिए संबंधित भाषा शिक्षा का माध्यम और परीक्षा का माध्यम है।

परीक्षाएँ - स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियों के लिए अर्ध वार्षिकीय के अनुरूप परीक्षाएँ ली जाती है । प्राकशास्त्री (इंटर मीडियट) के लिए वार्षिक पैटर्न का पालन किया जाता है। अन्य नाँन सेमिस्टर डिप्लोमा उपधियाँ पी.जी.डिप्लोमा परीक्षाएँ मार्च और अप्रैल में रखी गयी है ।

छात्रों की भर्ती

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			प्रा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु
1	प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	117	72	189	27	24	51	63	29	92	14	7	21	13	12	25	-	-	-	-	-	-
2	प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	118	64	182	35	26	61	46	12	58	18	6	24	19	20	39	-	-	-	-	-	-
	कुल (1 & 2)	235	136	371	62	50	112	109	41	150	32	13	45	32	32	64	-	-	-	-	-	-
3	शास्त्री प्रथम वर्ष	106	55	161	39	18	57	59	20	79	-	7	7	8	10	18	-	-	-	1	-	1
4	शास्त्री द्वितीय वर्ष	87	62	149	34	26	60	38	26	64	9	4	13	6	6	12	-	-	-	-	-	-
5	शास्त्री तृतीय वर्ष	68	26	94	37	16	53	22	7	29	7	3	10	2	-	2	-	-	-	-	-	-
	कुल (3 - 5)	261	143	404	110	60	170	119	53	172	16	14	30	16	16	32	-	-	-	1	-	1
6	बी.एससी. प्रथम वर्ष	10	10	20	7	8	15	2	1	3	1	0	1	-	-	-	-	1	1	-	-	-
7	बी.एससी. द्वितीय वर्ष	7	16	23	4	4	8	2	11	13	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
8	बी.एससी. तृतीय वर्ष	5	3	8	4	2	6	1	1	2	0	0	0	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (6 - 8)	22	29	51	15	14	29	5	13	18	2	1	3	-	-	-	-	1	1	-	-	-
9	बी.ए. प्रथम वर्ष (कुल 9)	20	9	29	3	4	7	11	4	15	2	-	2	4	1	5	-	-	-	-	-	-
10	शास्त्री वेदभाष्यम प्रथम वर्ष	4	-	4	4	-	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
11	शास्त्री वेदभाष्यम द्वितीय वर्ष	13	-	13	13	-	13	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
12	शास्त्री वेदभाष्यम तृतीय वर्ष	8	-	8	8	-	8	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (9 - 12)	25	-	25	25	-	25	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
12	शिक्षा शास्त्री (बि.एड्)	105	49	154	59	27	86	26	15	41	14	7	21	6	-	6	-	-	-	-	-	-
	स्नातक कुल (1-13)	668	366	1034	273	155	428	270	126	396	66	35	101	58	49	107	-	1	1	1	-	1
	स्नातक कुल (3-13)	433	230	663	212	105	317	161	85	246	34	22	56	26	17	43	-	1	1	-	-	-
14	आचार्य प्रथम वर्ष	130	103	233	56	42	98	60	54	114	11	5	16	3	2	5	-	-	-	-	1	1
15	आचार्य द्वितीय वर्ष	132	85	217	65	43	108	49	37	86	17	4	21	1	1	2	-	-	-	-	-	-
	कुल (14 & 15)	262	188	450	121	85	206	109	91	200	28	9	37	4	3	7	-	-	-	-	1	1
16	एम.ए. (सं.) शाब्दबोध प्रथम वर्ष	1	1	2	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
17	एम.ए. (सं.) शाब्दबोध द्वितीय वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (16 & 17)	1	1	2	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
18	एम.एससी. प्रथम वर्ष	4	3	7	2	2	4	2	-	2	-	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
19	एम.एससी. द्वितीय वर्ष	7	-	7	3	-	3	3	-	3	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (18 & 19)	11	3	14	5	2	7	5	-	5	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-

पु. - पुरुष, स्त्री - स्त्री, कु. - कुल

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			शा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु
20	एम.ए.ऐ.एम.टि. प्रथम वर्ष (2012-13 से शुरू प्रशासन)	4	1	5	2	1	3	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
21	एम.ए.ऐ.एम.टि. द्वितीय वर्ष	8	3	11	5	1	6	1	2	3	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (20 & 21)	12	4	16	7	2	9	3	2	5	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
22	एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष (२०१३-१४ से प्रवेश प्रारंभ)	8	3	11	4	1	5	-	2	2	3	-	3	-	-	-	1	-	1	-	-	-
23	एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष	5	3	8	2	-	2	1	-	1	-	1	1	-	-	-	2	2	4	-	-	-
	कुल (22 & 23)	13	6	19	6	1	7	1	2	3	3	1	4	-	-	-	3	2	5	-	-	-
24	शिक्षा-आचार्य (एम.एड)	30	14	44	22	4	26	7	2	9	1	7	8	-	1	1	-	-	-	-	-	-
	पी.जी. कुल (14-25)	329	216	545	162	95	257	125	97	222	35	18	53	4	4	8	3	2	5	-	1	1
	व्यावसायिक पाठ्यक्रम कुल (13 & 24)	140	58	198	81	32	113	33	17	50	15	14	29	6	1	7	140	58	198	-	-	-
25	एम.फिल.	41+9	22+1	63+10	25+2	16+1	41+3	11+4	5	16+4	5+2	1	6+2	1	-	1	-	-	-	-	-	-
	कुल (23)	50	23	73	27	17	44	15	5	20	7	1	8	1	-	1	-	-	-	-	-	-
26	विद्यावारिधि २०१२-१३	60+8 68	21+3 24	81+11 92	43+8 51	15 15	58+8 66	10 10	5+3 8	15+3 18	4	1	5	2	-	2	1	-	1	1	-	1
27	विद्यावारिधि २०१३-१४	69	21	90	50	16	66	11	4	15	6	1	7	2	-	2	-	-	-	-	-	-
28	विद्यावारिधि २०१४-१५	48	15	63	33	14	47	8	1	9	5	-	5	2	-	2	-	-	-	-	-	-
	कुल (26-28)	185	60	245	134	45	179	29	13	42	15	2	17	6	0	6	1	0	1	1	0	1
	कुल (01-28)	1232	665	1897	597	312	909	439	241	680	123	56	179	69	53	122	4	3	7	2	1	3
	प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम																					
29	मंदिर संस्कृति मे प्रमाणपत्र	1	-	1	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
30	ज्योतिष मे प्रमाणपत्र	5	1	6	4	-	4	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
31	प्रयोजनमूलक अंग्रेजी	5	-	5	1	-	1	1	-	1	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (29-31)	11	1	12	6	-	6	2	1	3	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			शा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु
	डिप्लोमा पाठ्यक्रम																					
32	पौरोहित्य में डिप्लोमा	2	3	5	1	2	3	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
33	मंदिर संस्कृति में डिप्लोमा	4	-	4	3	-	3	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (32 & 33)	6	3	9	4	2	6	2	1	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम																					
34	योगा में पी.जी. डिप्लोमा (सायंकालिन कार्यक्रम)	24	12	36	17	6	23	6	5	11	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
35	पी.जी. नेचुरोपती (सायंकालिन कार्यक्रम)	15	8	23	6	4	10	8	4	12	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
36	तुलनात्मक सौन्दर्य शास्त्र में पी.जी. डिप्लोमा में भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य	12	8	20	9	6	15	3	2	5	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
37	पौरोहित्य में पी.जी. डिप्लोमा	14	1	15	9	1	10	4	-	4	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (34 - 37)	65	29	94	41	17	58	21	11	32	3	1	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	अन्य प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम																					
38	**भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.**	14	-	14	5	-	5	7	-	7	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
39	वेब तकनीकी	1	10	11	-	5	5	-	4	4	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
40	संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक और रचनात्मक लेखन में प्रमाणपत्र	7	-	7	3	-	3	4	-	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (38 & 40)	22	10	32	8	5	13	11	4	15	3	1	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	अन्य डिप्लोमा पाठ्यक्रम																					
41	**भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.**	5	1	6	1	1	2	1	-	1	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
42	वेब तकनीकी	-	1	1	-	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
43	संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक और रचनात्मक लेखन में	4	-	4	4	-	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (41-43)	9	2	11	5	2	7	1	-	1	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	अड्वान्सड डिप्लमो																					
44	**भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.**	5	1	6	4	1	5	-	-	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (44)	5	1	6	4	1	5	-	-	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग भर्ती	1350	711	2061	665	339	1004	476	258	734	136	58	194	69	53	122	4	3	7	2	1	3

पु. - पुरुष - 1350, स्त्री - स्त्री - 711, कु. - कुल - 1350+711 = 2061 (डीडीई के छात्रों को छोडकर)

* कुल शारीरिक विकलांग अतिरिक्त

एस्.सी., एस्,टी., ओ.बी.सी.के लिए छात्रवृत्तियाँ :

सरकार द्वारा एस्.सी., एस.टी., ओ बी.सी.के छात्रों के लिए घोषित छात्रवृत्ति विद्यापीठ के द्वारा निरंतर दी जाती है।

आरक्षण नियम पालन

विद्यापीठ में भारत सरकार एवं वि.अ.ए. के अनुसार समय-समय पर लागु होनेवाले आरक्षण नियम एस.सी.,एस.टी.और ओ.बी.सी. छात्रों के संबंध में जैसा भी नियम है उसके अनुसार प्रत्येक शैक्षिक वर्ष के पाठ्यक्रम जैसे प्राक्-शास्त्री, शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शात्रि (बी.एड्), शिक्षा आचार्य (एम.एड). एम.फिल और विद्यावारिधी (पी.एच.डी) और शिक्षक और शिक्षकेतर पदों के नियुक्ति के संबंध में भी आरक्षण का पालन किया जाता है।

योग्यता छात्रवृत्तियाँ :

योग्यता छात्रवृत्तियाँ छात्रों को गत परीक्षा के प्राप्त अंकों की प्रतिशतता के आधार पर दी जाती है। प्राक्शस्त्री प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को, शास्त्री प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्रों को तथा आचार्य प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को छात्र वृत्ति दी जाती है।

आ. व्यावसायिक पाठ्यक्रम :

शिक्षा संकाय

शिक्षा विभाग माध्यमिक विद्यालय के सेवा पूर्व एवं सेवारत-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाता है। यह विभाग संस्कृत सीखने एवं शिक्षा-शोध को विकसित करने के लिए स्वतः अध्ययन उपकरण तैयार कर रहा है। निम्नलिखित पाठ्यक्रम विवरण इस प्रकारक है -

क्र.सं	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	सीट की संख्या	भर्ती
1	शिक्षा-शास्त्री(बी.एड्)	एक वर्ष	154	154
2	शिक्षा-आचार्य(एम्.एड्).	एक वर्ष	44	44
3	शिक्षा शास्त्र में एम्.फिल्.	एक वर्ष	10	10
4	विद्यावारिधी(पीएच.डी)	2-5 वर्ष		22

अनौपचारिक शिक्षा :

इग्नू की दूरशिक्षा परिषत् ने विद्यापीठ के प्रस्ताव को स्वीकृत किया और 2003-04 से दूर शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ करने की अनुमति दी। **दूर शिक्षा को डा.सी.एच्.पी. सत्यनारायण,** आचार्य, शोध एवं प्रकाशन विभाग निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

वर्ष 2014-15 में चलाए जानेवाले प्राठ्यक्रमों का विवरण एवं भर्ती निम्न है :

विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा केंद्र द्वारा निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए हैं, जिसका विवरण इस प्रकार है-

क्रमं.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	भर्ती
1.	प्राक्-शास्त्री	2 वर्ष	72
2.	शास्त्री/बी.ए.	3 वर्ष	4
3.	बी.ए.	3 वर्ष	61
4.	आचार्य	2 वर्ष	397
5.	योग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष	41
6.	संस्कृत में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	1 वर्ष	77
7.	संस्कृत में डिप्लोमा	1 वर्ष	39

हर साल में दो बार समस्त पाठ्यक्रमों के लिए संपर्क कक्षाओं का आयोजन विद्यापीठ परिसर में किया जाता है।

आ. अनुसंधान

i. प्रवेश:

विद्यापीठ ने **विद्यावारिधी** (पीएच.डी.) साहित्य में /व्याकरण/ज्योतिष (फलित और सिद्धांत), न्याय/ अद्वैत वेदांत/ विशिष्टाद्वैत वैदांत/द्वैत वेदांत/ वेदभाष्य/ आगम / और शिक्षा शास्त्र में दी जाती है।

विश्वविद्यालय उन छात्रों को विद्यावारिधी की उपाधि प्रदान करती है, जिन्होंने अपना शोधकार्य पूरा कर लिया हो तथा शोधप्रबंध का मूल्यांकन विद्यापीठ द्वारा निर्धारित विशेषज्ञ से करा लिया गया हो।

वि.अ.ए. नए नियमों के अनुसार उपाधि, संस्कृत में विद्यावारिधी लिखा रहेगा और अंग्रेजी में **डाक्टर ऑफ फिलासोफी** होगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के निर्णयानुसार विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) तीन मानित विश्वविद्यालयों यानि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, एस्.एल्.बि.एस्.आर्.एस्.विद्यापीठ के लिए कार्यक्रम में प्रवेश के लिए आयोजित करने के लिए एक संयुक्त प्रवेश परीक्षा के फैसले के अनुसार राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पहली परीक्षा CVVET-2011 आयोजित की गई है। रोटेशन के आधार पर वर्ष 2014 में यह CVVET का आयोजन करने के लिए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली की बारी है।

संयुक्त विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा (CVVET) का आयोजन सभी केन्द्रों में अगस्त 2014 को किया गया है। सभी योग्य और चयनित उम्मीदवारों का अनुसंधान पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया गया है। पी.एच.डी. छात्रों की संख्या एवं विभिन्न विभागों का विवरण नीचे तालिका में प्रस्तुत है।

विद्यापीठ से पीएच.डी.उपाधि प्राप्तकर्ताओं की सूची

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	विभाग	मार्गदर्शक का नाम	पुरस्कार की तारीख
1.	कुचि श्रीसामीराजा	अद्वैतवेदांत	प्रो. एम.एल.एन. मूर्ति	4.4.2014
2.	शिवगणेश नागोतु	साहित्य	प्रो. सी.एच.पी. सत्यनारायण	7.4.2014
3.	एन.वी. लोवा शिवचिंता	साहित्य	प्रो. एन.लता	7.4.2014
4.	आर. अनंत लक्ष्मी	साहित्य	प्रो. एन.लता	11.04.2014
5.	एस. चिन्ना सुब्बाराव	साहित्य	प्रो.पी.वेंकटराव	11.04.2014
6.	बुद्धिराजु कामाक्षी	साहित्य	प्रो.जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति	11.04.2014
7.	देवेन्द्र कुमार शर्मा	शिक्षा शास्त्र	प्रो. रवि शंकर मेनोन	15.04.2014
8.	सुनील कुमार शर्मा	शिक्षा शास्त्र	प्रो. रवि शंकर मेनोन	15.04.2014
9.	धन्या .पी.वी	शिक्षा शास्त्र	डा. एस. दक्षिणा मूर्ति	21.04.2014
10.	विद्या सागि	साहित्य	डा. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल	25.04.2014
11.	दिनकर मराठे	फलित ज्योतिष्य	डा. उन्निकृष्णन् नंपियातिरी	18.06.2014
12.	राज किशोकर पाणी	फलित ज्योतिष्य	प्रो. राधा कांत ठाकुर	18.06.2014
13.	प्रदीप भारद्वाज	फलित ज्योतिष्य	प्रो. राधा कांत ठाकुर	18.06.2014
14.	नारायणन् नंपूतिरी एन.टी	फलित ज्योतिष्य	डा. उन्निकृष्णन् नंपियातिरी	18.06.2014
15.	पी. माधव राव	शिक्षा शास्त्र	प्रो. मुरलीधर शर्मा	19.06.2014
16.	प्रसन्न कुमार पण्डा	साहित्य	प्रो. सत्यनारायण आचार्य	25.06.2014
17.	रामकृष्ण उडुपा ए	ज्योतिष्य	प्रो. ए.श्रीपाद भट्ट	19.06.2014
18.	ए.वी.किरण	ज्योतिष्य	प्रो. राधाकांत ठाकुर	19.06.2014
19.	रामकृष्ण पेजथाया	ज्योतिष्य	प्रो. श्रीपाद भट्ट	19.06.2014
20.	प्रमोद कुमार बुटोलिया	शिक्षा शास्त्र	प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा	19.06.2014
21.	एम. राजशेखर	साहित्य	प्रो. जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति	25.06.2014
22.	उमा महेश्वर राव बी	पुराणेतिहास	डा. परामिता पण्डा	26.07.2014
23.	अमरनाथ शर्मा	आगम	प्रो.टी.वी.राघवाचार्युलु	26.07.2014
24.	जयकृष्णन नंपूतिरि एन.डी	फलित ज्योतिष्य	डा. उन्निकृष्णन् नंपियातिरि	25.087.2014
25.	एम. राजशेखर	साहित्य	प्रो.जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति	25.06.2014
26	के. शिवकुमार	शिक्षा शास्त्र	प्रो.वी.मुरलीधर शर्मा	25.08.2014
27.	अंतर्यामि महापात्र	फलित ज्योतिष्य	प्रो. राधाकांत ठाकुर	20.08.2014

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	विभाग	मार्गदर्शक का नाम	पुरस्कार की तारीख
28.	प्रियरंजन दाश	धर्मशास्त्र	डा. सितांशु भूषण पण्डा	25.08.2014
29.	प्रियदर्शिनी महापात्र	अद्वैत वेदांत	डा. के.गणपति भट्ट	25.08.2014
30.	पंपाराणी गिरि	साहित्य	प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी	15.09.2014
31.	बी. रमेश बाबु	पुराणेतिहास	डा. परामिता पण्डा	14.10.2014
32.	प्रतिभा. एस	साहित्य	प्रो.जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति	14.10.2014
33.	एम.डी.अब्दुल मुजीब	शिक्षा शास्त्र	प्रो.एन.लता	27.10.2014
34.	प्रछिति दिलीप दबिर	व्याकरण	प्रो.एस.सत्यनारायण मूर्ति	28.10.2014
35.	अविनाश नल्लूरी	साहित्य	डा. राणी सदाशिवमूर्ति	28.10.2014
36.	नटेश. एल	अद्वैत वेदांत	डा.विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल	03.11.2014
37.	अशोक आर्या	व्याकरण	प्रो. जे.रामकृष्ण	03.11.2014
38.	सुनिता कर	सांख्य योग	प्रो.वी.पुरन्दर रेड्डी	03.11.2014
39.	प्रदीप कुमार बाग	साहित्य	डा. सोमनाथ दाश	07.11.2014
40.	रबीन्द्र नाथ मैटी	साहित्य	डा. सोमनाथ दाश	12.11.2014
41.	श्रीराम ए. एस्	शिक्षा शास्त्र	प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी	12.11.2014
42.	एन. सुब्रह्मण्य भट्ट	साहित्य	डा. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल	16.11.2014
43.	आर. रविकिरण पाय	शिक्षा शास्त्र	प्रो. एन.लता	16.11.2014
44.	दिनानाथ दास	साहित्य	डा.विरूपाक्ष वी.जड्डीपाल	16.11.2014
45.	बिरेन्द्र कुमार साडंगी	साहित्य	प्रो. सी.एच.पी.सत्यनारायण	16.11.2014
46.	वीणा राव	साहित्य	डा.राणी सदाशिव मूर्ति	24.11.2014
47.	लक्ष्मी श्रीकांत वै	पुराणेतिहास	प्रो.टी.वी.राघवाचार्युलु	08.12.2014
48.	एन. आर.मुरलीधर	साहित्य	प्रो.के.रामसूर्यनारायण	08.12.2014
49.	गोविंद प्रसाद शर्मा	फलित ज्योतिष्य	प्रो. राधाकांत ठाकुर	30.12.2014
50.	मुरलीकृष्णा. टी	ज्योतिष्य	डा. उन्निकृष्णन् नंपियातिरि	30.12.2014
51.	टी.भारती	साहित्य	प्रो.जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति	30.12.2014
52.	कुमुदा राव. एच.ए.	व्याकरण	प्रो.एस. सत्यनारायणमूर्ति	30.12.2014
53.	चित्तरंजन नायक	ज्योतिष्य	डा.कृष्णेश्वर झा	25.01.2015
54.	सुप्ति कुमार	साहित्य	डा. के. सूर्यनारायणा	28.01.2015
55.	के. एन. एस. रामम	शिक्षा शास्त्र	डा. दक्षिणा मूर्ति शर्मा	29.01.2015
56.	प्रिय ओम प्रकाश सतुवा	शिक्षा शास्त्र	डा. एम.मुरलीधर शर्मा	16.11.2014

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	विभाग	मार्गदर्शक का नाम	पुरस्कार की तारीख
57.	श्रीकांत अंगलकुडुरु	साहित्य	प्रो. सी.एच.पी.सत्यनारायण	24.1.2014
58.	अवंतिक किशोर देशमुख	व्याकरण	प्रो.एस. सत्यनारायण	08.12.2014
59.	उमाकांत बारिक	शिक्षा शास्त्र	प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा	13.02.2015
60.	सावंत राजेन्द्र माणिकराव	शिक्षा शास्त्र	प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा	16.02.2015
61.	रुद्र नरसिंह मिश्रा	शिक्षा शास्त्र	प्रो. रविशंकर मेनोन्	18.02.2015
62.	राकेश दास	व्याकरण	प्रो. के.वि.आर.के.आचार्युलु	20.02.2015
63.	बी. रामेश बाबु	पुराणेतिहास	डा.परमिता पण्डा	14.10.2014
64.	शिव कुमारी काटुरी	व्याकरण	प्रो. एस.सत्यनारायण मूर्ति	13.03.2015
65.	संजीव कुमार डी.	द्वैत वेदान्त	प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित	20.03.2015

इ-प्रकाशन

सन् 2014-15 में विद्यापीठ ने कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है, वे निम्न हैं -

	ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रधान सम्पादक
1.	द एपोक आफ विवेकानंद इन मार्डन इंडिया	डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति	प्रो. एच.के. शतपथी
2.	संस्कृत शिक्षा	प्रो. सत्यनारायण आचार्य	प्रो. एच.के. शतपथी
3.	विदग्ध विलास	पं. श्री रघुनाथ त्रिपाठी	प्रो. एच.के. शतपथी
4.	स्तोत्रमाला	पं. मोहननायक	प्रो. एच.के. शतपथी
5.	नरेटिव लिटरेचर्स इन इंग्लीश और संस्कृत	डॉ. आर. दीप्ता	प्रो. एच.के. शतपथी
6.	श्री सत्यविजय महाकाव्यम्	पुल्या उमामहेश्वर शास्त्री	प्रो. एच.के. शतपथी
7.	महस्विनी (वाल्युम. 8)	डॉ. के. सूर्यनारायणा	प्रो. एच.के. शतपथी
8.	विश्वायनम	प्रो. हरेकृष्ण शतपथी	प्रो. एच.के. शतपथी

शेमुषी - विद्यापीठ वार्ता पत्रिका

विद्यापीठ में मासिक रूप में शेमुषी नामक से पत्रिका निकाला जाता हैं। इस वार्ता पत्रिका में विद्यापीठ के समस्त समाचारों को प्रकाशित किया जाता है और उसे भारत के समस्त विश्वविद्यालय एवं गण्यमान्य व्यक्तियों तक पहुंचाया जाता है। साहित्य विभाग के सह-आचार्य डा. के. राजगोपालन् इस शेमुषी के संपादक है।

विभागीय पत्रिकायों

1. शिक्षा विभाग - शिक्षालोक
2. साहित्य विभाग - रसधुनी

ई. प्रशिक्षण

अ. उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र -

उद्देश्य - विद्यापीठ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की वित्तीय सहायता के साथ अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ और अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों के लिए उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र शैक्षणिक वर्ष 2007-2008 से आरंभ किया गया था। ये अनुशिक्षण केंद्र अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अल्पसंख्यक श्रेणियों के लिए शिक्षण कक्षाओं का आयोजन करता है। अन्यश्रेणियों तथा जिसे शिक्षण की जरूरत होती है उन्हें भी कक्षाओं में भाग लेने की अनुमती दी जाती है। शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के लिए अनुशिक्षण कक्षाएँ -

उपचारात्मक कोचिंग कक्षाओं को सितंबर 2014 को शुरू किया और मार्च 2015 को बंद कर दिया। कक्षाओं को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। वर्ष 2014-15 में उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र द्वारा पाठ्यक्रम की पूर्ती - उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र द्वारा सभी शास्त्रों - (1) आचार्य प्रथम वर्ष (2) आचार्य द्वितीय वर्ष (3) शास्त्री प्रथम वर्ष (4) शास्त्री द्वितीय वर्ष (5) शास्त्री तृतीय वर्ष (6) प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष (7) प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष और (8) शिक्षा शास्त्री (बी.एड) के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्याक श्रेणियों के छात्रों के लिए कक्षाएँ आयोजित किया गया। 569 छात्रों ने इस शिक्षा से लाभान्वित हुए। 49 शिक्षकों को.शिक्षण हेतु नियुक्त किया गया। उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र ने पढने की सामग्री दिया तथा समय समय पर परिक्षाएँ रखते थे।

आ. 25 संस्कृत प्रशिक्षण शिबिर :-

संस्कृत अध्ययन के बिना व्यक्ति एक सच्चा भारतीय या एक सच्चा विद्वान नहीं बन सकता। (महात्मा गाँधी)

माँ सरल संस्कृत उपयोग के महत्व पर जोर देती है। संस्कृत के ज्ञान के बिना सच्चा भारतीय बन नहीं सकता। ''जैसे फ्रांस में जन्मा बच्चा फ्रेंच जानता है उसी प्रकार भारत में पैदा हुआ हर बच्चे को संस्कृत का ज्ञान होना चाहिए (माँ. 11.11.1967)

संस्कृत इस देश की आम जनता की रोजमर्रा की जीवन से दूर जला गया। हिंदू संस्कृति उसका विशिष्ट स्थान है। - सर मिर्जा इस्माइल।

राष्ट्रीय एकता की भावना को जगाने और संस्कृत के माध्यम से छात्रों की बीच मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए 25 संस्कृत प्रशिक्षण शिबिरों को सफलतापूर्वक विद्यापीठ द्वारा आयोजित किया गया। प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति ने प्रशिक्षण शिबिरों का उद्घाटन किया। प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी संयोजक, प्रो. सत्यनारायण आचार्य सह समन्वयक और प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति निरीक्षक थे। 25 संस्कृत प्रशिक्षण शिबिर आयोजन किया और प्रत्येक शिबिर एक महान संस्कृत संत के नाम से नामित किया गया था।

इ. नए छात्रों के लिए प्रेरणा कार्यक्रम (कैरियर काउंसिलिंग सेल के तहत आयोजित)

विद्यापीठ का कैरियर काउंसिलिंग सेल छात्रों में संस्कृत बोलने की क्षमता को बढ़ावा देने, प्रतिस्पर्धी परीक्षण कठोरता को चुनौती देने संचार की क्षमता के विकास में छात्रों के समर्थन के उद्देश्य से कार्य कर रहा है। यह भी छात्रों के भीतर छिपे विभिन्न विषयों के सामाजिक मूल्यों का प्रशिक्षण है।

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, माननीय कुलपति सीसीसी के तहत आयोजित 23.6.2014 को नए छात्रों के लिए प्रेरणा कार्यक्रम का उद्घाटन किया । प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, साहित्य विभाग के अध्यक्ष और शैक्षिक समन्वयक कार्यक्रम में भाग लेकर छात्रों को अपना संदेश दिया था । डॉ. विद्याधर हरिचंदन संस्कृत सीखने में छात्रों को मार्गदर्शन दिया था । प्रो. सत्यनारायण आचार्य, समन्वयक, कैरियर काउंसिलिंग सेल द्वारा ''भारत में मौजूद संस्कृत शिक्षा प्रणाली'' के बारे में विस्तार व्याख्यान दिया था । कार्यक्रम के अंतर्गत हिडिंबा भीमसेन - एक संस्कृत टेलीफिल्म डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति द्वारा निर्देशित किया गया जो छात्रों को खूब मनोरंजित किया था ।

ई. भारतीय प्रशासनिक सेवा के अध्ययन केंद्र :-

विद्यापीठ के छात्रों के लिए आई.ए.एस. कोचिंग का एक विशेष केंद्र विद्यापीठ ने आरंभ किया था । डॉ. अरविंदराव, पुलिस के पूर्व महानिदेश, भारत सरकार ने उद्घाटन करते हुए कहा कि आंध्रप्रदेश के आई.ए.एस. अधिकारियों में केंद्र सरकार, राज्यों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में महत्वपूर्ण और रणनीतिक पदों पर हैं । उन्होंने विद्यापीठ के सभी संस्कृत छात्रों को आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी की सभी देखभाल का सुझाव दिया । उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा के उम्मिदवारों को अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति ने समारोह की अध्यक्षता की । प्रो. सी. उमाशंकर, कुलसचिव ने स्वागत भाषण दिया एवं समारोह का संचालन किया था । प्रो. आर.के. ठाकुर धन्यवाद ज्ञापित किया । प्रो. नागसाई, पूर्व प्रधनाचार्य, एस.वी. आर्टस् कॉलेज, टी.टी.डी. आई.ए.एस. अध्ययन केंद्र के अतिथि प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किए गए । डॉ. वी. रमेश बाबू केंद्र के समन्वयक हैं ।

उ. अंग्रेजी विभाग - क्रैशकोर्स :-

दिनांक 24-26 अप्रैल, 2014 को अंग्रेजी विभाग ने तीन दिन की कार्यशाला का आयोजन क्रैश सामग्री तैयारी करने के लिए किया गया । प्रो. केशवराव, अंग्रेजी विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रो. हरि पद्मारानी, अंग्रेजी के प्रोफेसर, एस.पी. महिला विश्वविद्यालय, तिरुपति और प्रो. वाई.एस. शारदा, अंग्रेजी प्रोफेसर, एसपी. महिला विश्वविद्यालय, तिरुपति से विशेषज्ञ आए थे । विभाग के संकाय सदस्य प्रो. वी. सुजाता और डॉ. आर. दीप्ता के साथ प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति एवं डॉ. आर. सदाशिव मूर्ति, साहित्य विभाग तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे ।

दिनांक 16 और 17 जून 2014 को क्रैश कोर्स के लिए सामग्री तैयार की दोदिन की समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी । प्रो. केशव राव, प्रो. हरिपद्मारानी और प्रो. वाई. एस. शारदा समीक्षा बैठक में भाग लेकर क्रैश कोर्स की सामग्री पर बहूमूल्य सुझाव दिए थे ।

दस दिवसीय अंग्रेजी प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम दिनांक 4 अगस्त 2014 को आयोजित किया गया जिन में शास्त्री द्वितीय वर्ष से, शास्त्री तृतीय वर्ष से और आचार्य प्रथम वर्ष से 50 छात्रों को छुनकर उन्हें अंग्रेजी के चार कौशलों का शिक्षण दिया गया । कॉलेज के घंटों के बाद 5.30 बजे से 7.30 बजे कक्षाएँ आयोजित की गई थी । विभाग के संकाय सदस्य प्रो. वी. सुजाता और डॉ. आर. दीप्ता विभाग के अन्य तीन अतिथि शिक्षकों की सक्रिय मदद से पाठ्यक्रम में कक्षाएँ लिया था ।

दस दिवसीय प्रथमिक क्रैश कोर्स किए गए - संस्कृत छात्रों के लिए दिनांक 9 फरवरी 2015 से अंग्रेजी में अड्वान्स लर्निंग कोर्स का आयोजन किया गया । यह पाठ्यक्रम पहले से भी उच्च स्तरीय है और भाषण एवं लेखन कौशलों के साथ व्याकरण पर केंद्रित किया गया था । संस्कृत शिक्षकों के लिए तीसरा क्रैश कोर्स शीर्षक से सामग्री की तैयारी प्रगति पर है ।

उ. संगोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाएँ

अ. शोध पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला :

दिनांक 26-27 जुलाई, 2014 को साहित्य विभाग ने विद्यापीठ के छात्रों के लिए शोध पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था । कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथीजी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया । श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं साहित्य और संस्कृति के संकाय प्रमुख प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा जी ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की । साहित्यविभागाध्यक्ष प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति जी कार्यशाला के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का उल्लेख किया । डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति और डॉ. भरत भूषण रथ समन्वयक थे । प्रो. सीएच.पी. सत्यनारायण, डॉ. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल, प्रो. सी. ललिताराणी, प्रो. सत्यनारायण आचार्य, डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, डॉ. सी. रंगनाथन, डॉ. के. राजगोपालन, डॉ. भरतभूषण रथ कार्यशाला के विशेषज्ञ थे ।

आ. तिरुक्कुरल के संदेश पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यीपठ, तिरुपति में श्री तिरुवल्लुवर के जीवन और कार्यों के आधार पर तिरुक्कुरल का संदेश, तिरुवल्लुवर की पवित्र सोच को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रतिष्ठित रूप से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नईदिल्ली द्वारा 30 जनवरी 2015 दिनांकित पत्र संख्या के निर्देशानुसार विद्यापीठ के सक्रिय साहित्यिक परिषदों से एक वाग्वर्धिनी परिषद को कार्यक्रम का संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई । वाग्वर्धिनी परिषद ने एक सहज तरीके से कार्यक्रम का आयोजन किए थे । पूरे भारत से 17 (सत्रह) प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लेकर तिरुक्कुरल पर अपने बहुमूल्य प्रपत्र समर्पित किया था । विभिन्न संकाय सदस्यों, शिक्षकेतर कर्मचारी और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों ने भी सक्रिय रूप से संगोष्ठी में भाग लिया ।

कार्यक्रम का आरंभ राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के पद्मश्री रमारंजन मुखर्जी सभा भवन में दिनांक 7 मार्च, 2015 को 10 बजे किया गया था । श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.ई. देवनाथन संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलन किया था । प्रो. देवनाथन ने धर्म के पथ प्रदर्शक महान संत तिरुवल्लुवर पर सराहनीय कार्य करने वाले तिरुक्कुरल का उल्लेख किया । उन्होंने तिरुक्कुरल के कुछ पद सुनाकर उन पदों में छिपे भावार्थ को समझाया । महामहोपाध्याया पी.आर. रंगराजन इस संगोष्ठी के सारस्वत अतिथि एवं प्रतिष्ठित वक्ता थे । प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख सम्माननीय अतिथि थे ।

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष थे । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में तिरुक्कुरल के पद को कृपापूर्वक जनता को प्राप्त पद के रूप में उल्लेख किया तथा ग्रंथ को सभी प्राचीन शास्त्रों और आधुनिक विषयों का सार कहा ।

डॉ. सी. रंगनाथन, संगोष्ठी के समन्वयक समारोह का संचालन किया था और डॉ. भरत भूषण रथ, सह समन्वयक धन्यवाद समर्पण किया था ।

इ. सुशासन दिवस पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी :-

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निर्देशानुसार राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के उपलक्ष्य में सुशासन दिवस को एक प्रतिष्ठित ढ़ंग से आयोजन किया । कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने एक सहज तरीके से कार्यक्रम का संचालन करने के लिए वाग्वर्धिनी परिषद को सौंपा । वाग्वर्धिनी परिषद विद्यापीठ की सबसे प्रतिष्ठित और सक्रिय शैक्षिक परिषद है । वाग्वर्धिनी परिषद के समन्वयक डॉ. सी. रंगनाथन और सहसमन्वयक डॉ. भरतभूषण रथ ने सफलतापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया था । इस संदर्भ में परिषद ने दिनांक 20 दिसंबर 2014 को विद्यापीठ के छात्रों के लिए वक्तृत्व प्रतियोगिता का आयोजन किया था । सर्वश्रेष्ठ तीन विजेताओं को पुरस्कार दिया गया यानी प्रथम पुरस्कार रु. 15000/- द्वितीय पुरस्कार रु. 10,000/- तथा तृतीय पुरस्कार रु. 5,000/- इसी क्रम में परिषद ने सुशासन दिवस के उपलक्ष्.य में दिनांक 23-24, दिसंबर 2014 को द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था । समाज में सुशासन बनाये रखने के प्रति प्रकटित सबसे अच्छे तीन प्रपत्र प्रस्तुतकर्ताओं के नवीन विचारों के प्रत्येक प्रपत्र को पांच हजार रुपये की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया । कार्यक्रम सुसंपन्न हुई थी । भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस समारोह दिनांक 23-24 दिसंबर 2014 को विद्यीपीठ ने ''सुशासन दिवस'' के रूप में चिह्नित करते हुए ''सुशासन को बढ़ावा देने में नवाचार एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग'' पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था । दिनांक 23 दिसंबर 2014 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया था । दिनांक 23 दिसंबर 2014 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के आंतरिक स्टेडियम में आरंभ किया था । श्री वाजपेयी जी के शुभचिंतक, डॉ. अगराल ईश्वर रेड्डी, आंध्रप्रदेश के विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष, संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलन किया था, डॉ. रेड्डीजी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अपने विशेष क्षणों पर प्रकाश डाला । सुशासन के लिए उन्होंने कुछ नुस्के दिए थे । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति ने उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष थे । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्राचीन सुशासन प्रणाली वर्तमान समाज को किस प्रकार मार्गदर्शन देता है उसका उल्लेख किया । प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख और प्रो. सी. उमाशंकर विद्यापीठ के कुलसचिव समारोह के अतिथि थे । डॉ. सी. रंगनाथन संगोष्ठी के समन्वयक ने संचालन किया तथा डॉ. भरत भूषण रथ सहसमन्वयक ने धन्यवाद समर्पण किया था । इस विशेष अवसर पर वाग्वर्धिनी परिषद ने अतिथियों द्वारा वाग्वर्धिनी पत्रिका का लोकार्पण किया । सभी शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी एवं छात्रछात्राओं ने उद्घाटन समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिए थे ।

समापन समारोह :-

दिनांक 24 दिसंबर 2014 को सुशासन दिवस के समापन समारोह को रमारंजन मुखर्जी सभा भवन में आयोजित किया गया । महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या समारोह के मुख्य अतिथि थे । अपने भाषण में उन्होंने सुशासन का मार्गदर्शन दिया । विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्णशतपथी अपने अद्भुत संदेश द्वारा सभाभवन में उपस्थित दर्शकों को प्रोत्साहित किया । मानवता को अपनाकर हम समाज के हर कोने में सुशासन को कैसे स्थापित कर सकते हैं, भाषण का मुख्य सार था । कुलपति ने समाज को लाभान्वित करने के लिए संगोष्ठी के सभी प्रपत्र को विशेष मात्रा में प्रकाशित करने के लिए घोषित किया । अतिथियों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्रों से पुरस्कृत किया गया । सभी प्रपत्र प्रस्तुतकर्ताओं को रु.1000/- दिया गया था । प्रत्येक विशिष्ट प्रपत्र

को रु. 5000/- दिया गया । अतिथियों के सम्मान के बाद संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. सी. रंगनाथन ने धन्यवाद समर्पण किया तथा डॉ. भरतभूषण रथ, सहसमन्वयक ने संचालन किया था ।

ई. मातृभाषा दिवस - २०१५

मातृभाषा एवं राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 21 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा बहुत ही प्रतिष्ठित रूप से मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विविध भाषाओं में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था । मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली, 30 जनवरी 2015 दिनांकित पत्रसंख्या के अनुसार विद्यापीठ के सक्रिय साहित्यिक परिषदों में से एक माने जानेवाले वाग्वर्धिनी परिषद को इस कार्यक्रम संचालन का भार सौंपा गया । समन्वय डॉ. सी. रंगनाथ तथा सह समन्वयक डॉ. भरतभूषण रथ समारोह को बहुत ही सहजतरीके से आयोजन किया था । परिषद ने उनके अपने मातृभाषा में विद्यापीठ के सभी छात्रों के लिए केवल प्रकार के प्रतियोगिताओं का आयोजन किया था । वे चार प्रतियोगिताएँ हैं - निबंध, भाषण, क्विज़, सामूहिकगीत । 178 (एक सौ अठहत्तर) छात्र अर्थात प्राकशास्त्री (इंटरमीडियट) स्तर से विद्यावारिधी (पीएच.डी.) स्तर तक अपने अपने मातृभाषा में आयोजित प्रतियोगिताओं भाग लिए । प्रतिभागियों द्वरा कुल ग्यारह भाषाओं का उपयोग किया गया था । वे -

(1) बंगाली (2) हिंदी (3) कन्नड (4) मराठी (5) मलयालम (6) मैथिली (7) उडिया (8) ओलचिकी (9) संस्कृत (10) तमिल और तेलुगु ।

मातृभाषा दिवस समारोह -

पद्मश्री रमारंजन मुखर्जी सभाभवन में सुबह 10बजे को मातृभाषा दिवस का शुभारंभ हुआ था । प्रो. पी.वी. अरुणाचलम, द्रविड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, प्रख्यात भाषा विशेषज्ञ समारोह के मुख्य अतिथि थे । वैदिक काल से अब तक भारतीय भाषाओं के इतिहास को उन्होंने बहुत ही प्रभावी ढंग से बताया । प्रो. सर्वोत्तम राव, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तेलुगु विभाग के पूर्व आचार्य एवं प्रमुख भाषाविद समारोह के विशिष्ट अतिथि थे । उन्होंने मातृभाषा एवं मातृभूमि के कुछ मधुर कविताओं को सस्वर वाचन द्वारा समझाया । प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख ने कहा कि - मातृभाषा हमारे भीतर छिपे बुरे सोच को शुद्ध कर देता है । समारोह में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने मातृभाषा के महत्वपूर्ण मूल्यों पर प्रकाश डाला । उन्हेंने यह भी कहा कि विद्यापीठ पहले से ही वाग्वर्धिनी परिषद, तुलसीदास हिंदी परिषद और अन्नमय्य साहित्य कला परिषद जैसे विभिन्न मातृभाषा परिषदों को बढ़ावा देने के बारे में बताया ।

डॉ. सी. रंगनाथन, समन्वयक परिचयात्मक भाषण दिया तथा समारोह का संचालन किया । डॉ. भरतभूषण रथ सहसमन्वयक धन्यवाद समर्पित किया ।

उ. संस्कृत काव्य में तकनीकी शब्दों के विश्वकोश'' पर साहित्य विभाग सॉप, द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी -

सलाहकार समिति के संकल्प के अनुसार ''संस्कृत काव्य में तकनीकी शब्दों के विश्वकोश'' दो दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । दिनांक 3-4 मार्च 2015 को भारत के समय से तकनीकी शब्दों की परियोजना को विद्यापीठ के परिसर में आयोजित किया गया था । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के

कुलपति, मुख्यअतिथि थे । उन्हेंने साप, डी.आर.एस.-2 को पाँच साल के लिए यूजीसी द्वारा साहित्यविभाग को मंजूर किया गया प्रतिष्ठित परियोजना कहा तथा उन्हेंने साहित्य विभाग के विद्वानों को साप डीआरएस-2 के तेजी से प्रगति के लिए शोध कार्य करने के लिए कहा । प्रो. सूर्यमणिरथ आर.एस.संस्थान, पुरी परिसर, प्रो. पी. वरप्रसाद मूर्ति, संस्कृत विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटुर, आंध्रप्रदेश, डॉ. डी. रामकृष्ण, संस्कृत के सह आचार्य, मारिस स्टेल्ला कॉलेज, विजयवाडा, प्रो. शारदा सामन्तराय, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, प्रो. पद्मनाभम्, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति संगोष्ठी में उपस्थित थे । प्रो. जी श्रीनिवासु, कांचीपुरम के श्री चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती महाविद्यालय के कुलसचिव समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे । प्रो. सुदर्शन शर्मा, साहित्य और संस्कृति के संकाय प्रमुख ने विद्वानों का स्वागत किया । तथा प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, साहित्यविभागाध्यक्ष संगोष्ठी के संचालक थे । प्रो. सी. ललिताराणी, सॉप के समन्वयक ने संगोष्ठी के मुख्य लक्ष्य एवं उद्देश्यों का उल्लेख किया । डॉ. सी. रंगनाथन एवं प्रो. सत्यनारायणाचार्य ने संचालन किया था । डॉ. के. राजगोपालन, साप के उप समन्वयक ने वंदनार्पण किया था । संगोष्ठी को संपन्न करने के लिए साहित्य विभाग के संकाय सदस्य तथा प्रोजेक्ट फेलोस् ने सारे इंतजाम बखूबी ढंग से किया था ।

ऊ. ''भास्कराचार्य के जीवन एवं कार्य'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी :-

''भास्कराचार्य : जीवन एवं कार्य'' पर दिनांक 8-12 दिसंबर 2014 को गणित विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला । डीएसटी - एसई आर बी (गणितीय विज्ञान) भारत सरकार, नईदिल्ली द्वारा प्रायोजित -

पहले दिन :- दिनांक 8 दिसंबर 2014

प्राचीन भारतीय गणित पर पाँच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला सुबह 10 बजे वैदिक प्रार्थना के साथ आरंभ हुआ था । राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने सत्र का उद्घाटन किया । अधयक्ष ने प्राचीन भारतीय विद्वानों के वैज्ञानिक योगदान की जानकारी का उल्लेख किया । उन्होंने भास्कराचार्य के स्तुति करते हुए श्लोकों की रचना कर गेय रूप प्रस्तुत किया । प्रो. एस.जी. डानी, विशिष्ट अतिथि, टी.अई.एफ.आर-आइ.आइ.टी. मुंबई, कार्यकारी सदस्य, गणित इतिहास के अंतराष्ट्रीय बॉडी ने भास्कराचार्य के गणित को भारतीय गणितज्ञों के इतिहास के प्रमुख व्यक्ति के रूप में उल्लेख किया । प्राचीन गणित अपनी गुणवत्ता तथा ज्ञान को भावी पीढी को पहुँचाने के वजह से भारतीय गणित कई शताब्दियों तक जीवित हैं । मुख्य अतिथि प्रो. कन्नन, पूर्वकुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने भास्कराचार्य पर विशेष रूप से इस अवसर पर श्लोकों की रचनाकर उनको सुनाया । उन्होंने गणित और खगोल विज्ञान में भास्कराचार्य के योगदान के बारे विदेशी गणितज्ञों के विचारों को व्यक्त किया । द्रविडियन विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, प्रो. पी.वी. अरुणाचलम 'भास्कराचार्य के योगदान' पर संक्षिप्त भाष ण दिया । उद्घाटन सत्र के दौरान, श्री सिंगमपल्ली सत्यनारायण ने भास्कराचार्य का रंगीन चित्र बनाया और विशिष्ट अतिथियों ने उस चित्रपट को माल्यार्पण किया था ।

उद्घाटन सत्र के तुरंत बाद प्रो. डानी ने भास्कराचार्य के कार्यों पर पूर्व व्याख्यान दिया था । उन्होंने महेश्वर के गणितीय तथा खगोलीय कार्य का उल्लेख किया ।

दोपहर के सत्र में प्रो. वी. कन्नन ने 'विदेशी आचार्यां के दृष्टि में भास्कराचार्य' का प्रशंसा करते हुए एक

विस्तृत भाषण दिया । इस शताब्दी समारोह में श्री सिंगम्पल्ली सत्यनारायण ने तत्काल ही बहुत ही दिलचस्प चित्रों को खींच कर प्रदर्शित किया ।

दूसरे दिन :- दिनांक 9 दिसंबर 2014

शाम के सत्र में प्रो. बालचंद्रराव ने ''भास्कराचार्य के करण कुतुहल कार्य के महत्व'' पर व्याख्यान दिया । दूसरा व्याख्यान भास्कराचार्य की खगोलीय उपकरणों का अवलोकन श्री पी.पी.एस. हरिप्रसाद द्वारा दिया गया ।

डॉ. पद्मजा वेणुगोपाल ''भास्कराचार्य के करण कुतुहला में ग्रहण'' पर भाषण दिया । सुश्री शैलजा द्वारा ''कुछ चमकीले सितारों की अवधि पर प्रच्छादन'' पर भाषण दिया गया । सुश्री वनजा द्वारा भास्करा के करण कुतुहल के ग्रहयुति, सुश्री रूपा द्वारा ''भास्करा के कार्य में प्रतिगामी गति की घटना और ग्रहों की दृश्यता'' पर भाषण दिया गया ।

दूसरे दिन का अंतिम व्याख्यान अश्वथनारायण द्वारा ''एक सही त्रिकोण का नया दृष्टिकोण'' - विषय पर दिया गया ।

तीसरे दिन :- दिनांक 10 दिसंबर 2014 (बुधवार)

''लीलावती की पेडगोगिकल निहितार्थ'' - विषय प्रो. सुधाकर अगरकर के व्याख्यान द्वारा सत्र का आरंभ हुआ था ।

उन्होंने तीन घंटों के दौरान उच्च तकनीकी उपकरणों के प्रयोग करते हुए समस्या समाधान का आयोजन किया। दोपहर के सत्र में ई.आर.वेणुगोपाल हेरूर ने ''बह्मगुप्ता तीरम्स में भास्कराचार्य का कठोरविश्लेषण'' पर भाषण दिया ।

प्रो. बी. पानिक्कर ''ब्रह्मगुप्ता और भास्कर के समीकरणों को हल करने के चक्रवाला विधि'' पर भाषण दिया।

प्रो. गुरुप्रसाद द्वारा भास्कराचार्य के बीजगणित पर भाषण दिया गया ।

चौथे दिन :- दिनांक 11 दिसंबर 2014 (गुरुवार)

दिन के पहले व्याख्यान के दौरान 1114 से 2014 ई तक की गणितीय लेखन प्रो. यल. राधाकृष्णा द्वारा दिया गया । ''भास्करा के खगोल विज्ञान'' पर प्रो. एम.एस. श्रीराम ने आकर्षणीय व्याख्यान दिया । प्रो. वेंकटेशमूर्ति ने भास्कराचार्य के जीवन और कार्यक्षेत्र पर भाषण दिया । तदनंतर प्रो. पी.वी. अरुणाचलम ने भास्करा चार्य के ''ट्रिग्नोमेट्री एक नमूना पर वक्तव्य को प्रस्तुत किया । श्री पी.एस.एन. शास्त्री भास्कराचार्य को श्रद्धांजलि घटित किया । शाम का सत्र राष्ट्रीय संस्कृत के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा संपन्न हुआ ।

पाँचवाँ दिन : दिनांक 12 दिसंबर 2014

दिन का पहला व्याख्यान प्रो. बुस्नूरमुथ द्वारा ड्योफेण्टैन ईक्वेशनों तथा भास्कराचार्य की गणितीय शैली का एक संक्षिप्त सार को प्रस्तुत किया ।

डॉ. वेंकटराव ने भास्कराचार्य के कार्य के संदर्भ में गणितीय सौंदर्य पर वक्तव्य को प्रस्तुत किया ।

प्रो. एम.डी. श्रीनिवास ने ''सिद्धांत सिरोमणि और वासनाभ्यास - भारतीय शास्त्रीय खगोल विज्ञान'' पर व्याख्यान दिया गया ।

डॉ. राजेन्द्ररेड्डी, योग और तनाव प्रबंधन के योग प्रदर्शन कर कार्यशाला सत्र को संपन्न किया ।

प्रो. के. ई. देवनाथन, कुलपति, वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, प्रो. पी.वी. अरुणाचलम, पूर्व कुलपति, द्रविडियन विश्वविद्यालय, प्रो. सी. उमाशंकर, कुलसचिव, आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति, प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख और डॉ. वी. रमेशबाबू गणित विभाग के अध्यक्ष कार्यशाला के समापन समारोह में उपस्थित थे ।

ऋ. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ''पूर्वी और पश्चिमी सौंदर्य सिद्धांत' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (पी.जी. डिप्लोमा - सौंदर्य शास्त्र में)

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति पूर्वी और पश्चिमी सौंदर्य को लोकप्रिय बनाने के लिए पूर्वी और पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र पर सिद्धांतों पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया । वैश्विक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक सौंदर्यशास्त्र में पी.जी. डिप्लोमा अभिनव कार्यक्रम यु.जी.सी. द्वारा प्रायोजित हैं । इस कार्यक्रम को सहज तरीके से आयोजित किया गया था । पूरे भारत से 61 (इकसठ) प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में भाग लेकर उनके बहुमूल्य पत्र प्रस्तुत किया । संकाय सदस्य, शिक्षकेतर कर्मचारी एवं राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के छात्र संगोष्ठी में सक्रिय रूप से भाग लिए थे ।

उद्घाटन :-

दिनांक 22-23 मार्च, 2015, पूर्वी और पश्चिमी सौंदर्य सिद्धांत पर राष्ट्रीय संगोष्ठी पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । दिनांक 22 मार्च 2015 9.30 बजे सौंदर्यशास्त्र में पी.जी.डिल्पोमा सेल, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आरंभ किया गया । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, आर.एस. विद्यापीठ के कुलपति मुख्य अतिथि थे । उन्होंने दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन समारोह का आरंभ किया । प्रो. शतपथी जी पूर्वी और पश्चिमी सौंदर्यशास्त्र के पहलुओं पर प्रकाश डाला उन्होंने दोनों साहित्य को एक सिक्के के दो पक्ष कहा । प्रो. विश्वनाथ राव, प्रख्यात वक्ता एवं शोधकर्ता ने सौंदर्यशास्त्र पर बीजभाषण दिया । उन्होंने पश्चिमी कविताओं को पूर्वी कविताओं के साथ तुलना किया था । प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख सम्माननीय अतिथि थे ।

प्रो. एस. सुदर्शनशर्मा, साहित्य एवं संस्कृति के संकाय प्रमुख राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह के अधय्क्ष थे । डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, सह आचार्य, साहित्य विभाग ने संचालन किया था । साहित्य विभाग के प्रो. सत्यनारायणाचार्य, संगोष्ठी तथा सौंदर्यशास्त्र में पी.जी. डिप्लोमा ने राष्ट्रीय संगोष्ठी का लक्ष्य एवं उद्देश्यों का उल्लेख किया । प्रो. सी.उमाशंकर, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलसचिव ने धन्यवाद समर्पण किया ।

II. पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ

(अ) वाग्वर्धिनी परिषद्

शैक्षिक वर्ष 2014-15 के लिए, वाग्वर्धिनी परिषद को 4.7.2014 को उद्घाटन किया गया । प्रो. अलेख चंद्र साडंगी, पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (उडीसा) समारोह के मुख/य अतिथि थे । प्रो. राधाकांत ठाकुर सम्माननीय अतिथि थे । राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो.. हरेकृष्णशतपथी जी समारोह के अधय्क्ष थे । इस सुअवसर पर संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे । डॉ. सी. रंगनाथन - समन्वयक और डॉ. भरतभूषण रथ - सहसमन्वयक समारोह का आयोजन किया था ।

इस वर्ष वाग्वर्धिनी परिषद ने तेरह साप्ताहिक प्रतियोगिताओं के सत्र को सफलता पूर्वक संपन्न किया और छात्रों को संस्कृत बोलने के कुछ विशेष टिप्स बताया ।

विद्यापीठ के छात्र ने पूरे भारत में 10 विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार और पदकों को जीत लिया था । हमारे छात्रों ने प्रतियोगिताओं में भाग लेकर जो पुरस्कार जीते हैं । वे निम्न प्रकार हैं -

(1) जिला स्तरीय प्रतियोगिता, तिरुपति में - इस्कान में तीसरा स्थान - दिनांक 21-25 जुलाई 2014

(2) दिनांक 12-16 जनवरी, 2015 पुरी उडीशा के जय उत्सव में तीन पुरस्कार ।

(3) दिनांक 3-9 नवंबर 2014 विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, कालिदास समारोह में दूसरा स्थान ।

(4) दिनांक 26-27 फरवरी, 2015 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ।

(5) दिनांक 24-26 दिसंबर, 2014 श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय युवा महोत्सव में दूसरा स्थान ।

(6) दिनांक 21-24 मार्च 2015 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नईदिल्ली - अखिल भारतीय शास्त्रार्थ स्पर्धा में दूसरा स्थान।

(7) दिनांक 27-30 जनवरी 2015 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति आंध्रप्रदेश - अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव में दूसरा स्थान ।

(8) माम्बलम संस्कृत विद्यालय, चेन्नई में शास्त्र प्रतियोगिता में पहला स्थान ।

(9) आंध्रप्रदेश के राज्य स्तरीय अंतर विश्वविद्यालय एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया ।

आयोजित कार्यक्रम :-

शैक्षिक वर्ष 2014-15 के दौरान वाग्वर्धिनी परिषद ने कई कार्यक्रमों का आयोजन किया था । कार्यक्रम विवरण निम्न प्रकार हैं -

(1) कालिदास जयंती के अवसर पर कालिदास काव्यपाठ प्रतियोगिता विद्यापीठ स्तर पर ।

(2) नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव दिनांक 27-30 जनवरी, 2015

(3) द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सुशासन दिवस पर दिनांक 23-24 दिसंबर, 2014.

(4) सुशासन दिवसर पर भाषण, क्विज और साहित्यिक प्रतियोगितायाँ ।

(5) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में शास्त्रीय स्पर्धा, 53 वें राज्य स्तरीय प्रतियोगिता, दिनांक 26-27 फरवरी 2015.

(6) दिनांक 21 फरवरी 2015 को मातृभाषा दिवस समारोह ।

(7) मातृभाषा दिवस के दौरान विभिन्न मातृभाषाओं में साहित्य एवं सांस्कृतिक प्रतियोगितायाँ ।

(8) तिरुक्कुरल संदेश पर राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 7 मार्च 2015 ।

(9) वार्षिक दिवस के अवसर पर वार्षिक साहित्यिक प्रतियोगितायाँ ।

समापन :- हमेशा की तरह 27.03.2015 को वाग्वर्धिनी परिषद को आयोजित किया गया था । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति एवं प्रो. राधाकांतठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख को आमंत्रित किया गया । विजेताओं और प्रतिभागियों को पुरस्कार तथा प्रमाणपत्रों से पुरस्कृत किया गया ।

(आ) मैक्स मुलर क्लब

मैक्स मुलर अंग्रेजी क्लब छात्रों के लाभ के लिए अंग्रेजी विभाग द्वारा चलाया जानेवाला एक स्वैच्छिक संगठन है । इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों के लेखन तथा भाषण कौशलों में सुधार लाना । इस प्रयोजन हेतु अंग्रेजी के साप्ताहिक सत्र हर शनिवार को आयोजित किया जाता हैं जिनमें भाषण, लेखन, क्विज, वादविवाद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । वर्ष 2014-15 के दौरान दिनांक 10 जुलाई 2014 को मैक्समुलर क्लब को माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी द्वारा उद्घाटित किया गया । प्रो. राधाकांत ठाकुर सम्माननीय अतिथि थे । शैक्षिक वर्ष के पूरे तेरह सत्रों में 100 छात्रों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए । वर्ष 2014-15 के दौरान दिनांक 27 मार्च 2015 को मैक्समुलर क्लब का समापन समारोह का आयोजन किया गया । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति मुख्य अतिथि थे और प्रो. राधाकांत ठाकुर सम्माननीय अतिथि थे । विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया । छात्रों में के. हरिबाबु आचार्य प्रथमवर्ष चैम्पियन और छात्राओं में बी.एससी. - द्वितीय वर्ष की छात्रा आर. श्रीहिता चैम्पियन थी । प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष का छात्र वाचस्पति मित्र को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ था । डॉ. आर. दीप्ता समन्वयिका ने क्लब के विविध गतिविधियों का विवरणात्मक प्रतिवेदन प्रस्तुत की थी।

(इ) तुलसीदास हिंदी परिषद

वर्ष 2014-15 के दौरान 6.8.2014 को तुलसीदास हिंदी परिषद को उद्घाटित किया गया । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति, पी.टी. चाँदे, पूर्व कुलपति, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर मुख्य अतिथि थे ।

छात्रों में छिपी भाषण कौशलों को बाहर लाना ही इस परिषद का मुख्य उद्देश्य है । विविध प्रतियोगितायाँ - क्वीज, लेखन, भाषण, नाटक का आयोजन किया गया पूरे 10 सत्रों का आयोजन किया गया । विद्यापीठ के विविध विभागों के सदस्यों ने परिषद के निर्णायक पद को सुशोभित किया ।

वर्ष 2014-15 के दौरान 26.3.2015 को समापन समारोह का आयोजन किया गया । प्रो. एच.के. शतपथी, आर.एस. विद्यापीठ के कुलपति मुख्य अतिथि थे । प्रो. आर.के. ठाकुर, शैक्षिक संकाय ने समारोह की अध्यक्षता की और विभिन्न सत्रों के विजेताओं को इस अवसर पर पुरस्कारों से पुरस्कृत किया ।

(ई) अन्नमय्या साहित्य कलापरिषद

अन्नमय्य कला परिषद का आरंभ 30.7.2011 को तेलुगु विभाग में आरंभ किया गया । छात्रों में तेलुगु भाषण कौशलों को सक्षम बनाना परिषद का मुख्य उद्देश्य है ।

छात्रों में प्रतियोगिता स्तर को बढ़ावा देने के लिए प्राक-शास्त्री, शास्त्री, आचार्य स्तर तक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इसके साथ तेलुगु भाषा दिवस, कविताओं की शताब्दी उत्सव और विशेष व्याख्यान परिषद का मुख्य उद्देश्य है ।

वर्ष 2014-15 के दौरान 28.7.2014 को परिषद का उद्घाटन किया गया । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी, कुलपति ने छात्रों को तेलुगु साहित्य में सक्षम होने के लिए खूब तेलुगु किताबों का पठन करने का संदेश दिया । डॉ. डी. नल्लन्ना, सहायक आचार्य समन्वयक हैं ।

वर्ष 2014-15 के दौरान 9 सत्र का आयोजन किए गए थे । उद्घाटन सत्र 3.8.2014 के दौरान प्राक्शास्त्री छात्रों के लिए दोस्ती का महत्व, शास्त्री छात्रों के लिए और तेलुगु भाषा का महत्व एवं आचार्य छात्रों के लिए श्रावण मास का महत्व का आयोजन किया गया । दिनांक 10.8.2014, 17.8.2014, 24.8.2014, 7.9.2014, 21.11.2014, 15.2.2015 और 22.2.2015 को प्राकशास्त्री, शास्त्री और आचार्य छात्रों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था । डॉ. जे.बी. चक्रवर्ती, डॉ. ए. चंदूलाल, डॉ. मुखरन्ना, डॉ. श्रीनिवास मूर्ति, डॉ. मल्लिका ने प्रतियोगिताओं के निर्णायक थे । डॉ. सी. रंगनाथन, श्री जी. लक्ष्मीनारायण और वी. सेतुराम ने भी अपने परिषद का सेवा किया था ।

दिनांक 21.3.2015 उगादी महोत्सव का आयोजन किया गया था । डॉ. आर. सदाशिव मूर्ति जी पंचांग का श्रवण किया था । प्रो. एच.के. शतपथी, कुलपति मुख्य अतिथि थे । प्रो. सी. उमाशंकर, कुलसचिव, और प्रो. एस. एस. शर्मा, साहित्य एवं संस्कृति के संकाय प्रमुख उपस्थित थे । कर्मचारी गण तथा छात्रों ने बहुत ही सक्रिय रूप से भाग लेकर कविताओं को सुनाया था ।

दिनांक 29.3.2015 को समापन समारोह के दिन विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए ।

(उ) सांस्कृतिक कलापरिषद

सांस्कृतिक कला परिषद् का उद्देश्य विद्यापीठ के छात्रों में सांस्कृतिक कला, ज्ञान को विकसित करना है। इस वर्ष भी स्वतन्त्रता दिवस, संस्कृत सप्ताह समारोह, गणतंत्र दिवस और अखिल भारतीय संस्कृत प्रतिभा उत्सव आदि में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। डा. आर. सदाशिव मूर्ति इस परिषद के संयोजक थे।

(ऊ) प्रयोजनमूलक संस्कृत :

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संस्थापित यह प्रयोजनमूलक संस्कृत पाठ्यक्रम नोडाल केंद्र

विश्वविद्यालय में चलाया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के केंद्र द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है और अलग-अलग प्रयोजनमूलक संस्कृत विषयों पर समयानुसार संगोष्ठियों का आयोजन तथा राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण ज्ञान का विकास किया जाता है । इस केंद्र में आडियो दृश्य प्रयोगालय एवं ग्रंथालय है । यह केंद्र यज्ञ एकाग्रता, वैदिक संस्कार आदि पर आडियो-विडियो प्रलेखन आदि बनाया गया है। इस केंद्र द्वारा वैज्ञानिक आवरण से प्राक्-शास्त्री एवं शास्त्री छात्रों के लिए नियमित अध्यापन चलाया जाता है । यह प्रयोजनमूलक संस्कृत इकाई में अर्चकत्वं और पौरोहित्य में प्रमाण-पत्र डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

(ऋ) सेतु पाठ्यक्रम

विद्यापीठ में विभिन्न कार्यक्रमों में भर्ती लिए छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया । वर्ष 2014-15 के शैक्षिक सत्र के लिए 3-7-2014 से 10-7-2014 तक आयोजित किया गया । 200 से अधिक संख्या में विभिन्न शास्त्रों से अर्थात् साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष्य, धर्मशास्त्रा, वेदांत, विशिष्टाद्वैत वेदांत, द्वैत वेदांत, मिमांसा, पुराण के विभाग छात्र सेतु पाठ्यक्रम में भाग लिए थे । हमारे विद्यापीठ के प्रोफेसर को ही नहीं बल्की बाहर से भी विभिन्न विषयों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया । प्रो. सत्यनारायणाचार्य, असाहित्यविभाग, और डॉ. ए. सच्चिदानन्दमूर्ति, सहायक आचार्य, शिक्षाविभाग समन्वयक और सह समन्वयक थे । इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए छात्रों को विविध शास्त्र - साहित्य, दर्शना, कंप्यूटर, व्याकरण, शिक्षा शास्त्र और अंग्रेजी में अध्ययन को सुविधाजनक बनाने के लिए किया गया है।

(ए.) प्रो. एम.एम. पट्टाभिरामशास्त्री जी प्रथम कुलाधिपति के स्मृति में विस्तार व्याख्यान शृंखला :-

प्रो. महामहोपाध्याय पट्टाभिरामशास्त्री, मिमांसा एवं साहित्य के महान विद्वान तथा विद्यापीठ के प्रथम कुलाधिपति के योगदान पर पट्टाभिरामशास्त्री व्याख्यानमाला का शुरूआत किया । इस योजना के तहत कई प्रख्यात विद्वानों को आमंत्रित किया और संस्कृत साहित्य एवं भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान देने के लिए अनुरोध किया । प्रतिवेदन के तहत वर्ष के दौरान पट्टाभिरामशास्त्री व्याख्यानमाला को राघवेंद्रमठ, मंत्रालय के परमपूज्य श्री श्री श्री सुबुदेन्द्र तीर्थ स्वामीजी द्वारा उद्घाटित किया गया । दीपप्रज्वलन करते समनय स्वामीजी ने विद्यापीठ परिवार को आशिर्वचन दिए थे । वाचस्पति डॉ. वादिराज पंचमुखी, पूर्वकुलाधिपति मुख्य अतिथि थे । कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने उद्घाटन सत्र का अध्यक्ष थे । डॉ. ए.वी. नागसंपिगे, निर्देशक, पूर्णप्रज्ञसम्शोधना मंदिरम, बंगलूर ने 22-7-2014 को 'साक्षी प्रामाण्यम्' पर पहला व्याख्यान दिया था ।

III. पाठ्येतर गतिविधियाँ

(अ) खेलकूद प्रतियोगिता

वर्ष 2014-15 के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पूरा होने के बाद सभी छात्र-छात्राओं को हर रोज सुबह 6 बजे से 7:00 बजे तक प्रशिक्षण हेतु मैदान में उपस्थित रहने की सूचना दी जाती है। यह कार्यक्रम हर साल चलाया जाता है ताकि छात्र दक्षिण अंचल अंतर विश्वविद्यालय स्पर्धा और अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय स्पर्धाओं को खेलने हेतु तैयार रहे। उसके बाद मुक्त व्यायाम हेतु सभी छात्र-छात्रोओं को इंडोर सभांगण में अलग-अलग खेलों का परिचयात्मक तैयारियाँ करवायी जाती है। ताकि विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर जीत हासिल करें।

इंडोर सभांगण सुबह 6:00 बजे से 8: 00 बजे तक और 3:00 बजे से 7:00 बजे तक शाम में खुला रहता है। ताकि विद्यापीठ से सभी कर्मचारी और छात्र अलग-अलग खेल उपकरणों से भरपूर फायदा उठाएं ।

खेलों में भाग लेने हेतु छात्रों को बहुविध व्यायाम शाला में जो निरन्तर व्यायाम कर अपने चित को खेलों में दौडता है उसी को अंतर विश्वविद्यालय खेलो में चुना जाता है। इसके बाद दो माह तक उन छात्रों को नापा जाता है। उसके बाद उसको वार्षिक खेलों के सम्बन्ध में चुना जाता है। जो चुने जाते है वें छात्र अखिल भारतीय और अखिल विश्वविद्यालय खेलों में खेलने योग्य होते है । उन्ही को ज्यादा तैयार भी किया जाता है ।

अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता

1. अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता -

अखिलभारतीय अंतर विश्वविद्यालय बालबैडमिंटन प्रतियोगिता (पुरुष) दिनांक 20 से 24 दिसंबर 2014 तक एस.आर.एम.विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु में आयोजित किया गया था । 8 छात्रों की एक टीम डा. सी. गिरिकुमार प्रभारी खेल सचिव शारीरिक शिक्षा विभाग, आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति के मार्गदर्शन में भाग लिया था । (1) वी. पवन (बी.एड) (2) सी. साई संतोष (आ-1) (3) के. ब्रह्मय्या (आ-1) (4) डी. काशी विश्वनाथ (शा-111) (5) पी. साई कुमार (शा-11) (6) डी. श्रीनिवास राव (शा-1) (7) टी. रामबाबू (शा-11) (8) एस. जमाल भाषा (पीएच.डी.) - प्रतिभागी थे ।

2. अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय एथलटिक प्रतियोगिता (पुरुष और स्त्री)

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय स्वास्थ्य विज्ञान द्वारा दिनांक 15 से 20 जनवरी 2015 को अल्वारकी शिक्षा फाउण्डेशन मूडाबिद्री, मंगलूर, कर्नाटक में आयोजित किया गया था । 6 छात्रों का एक दल डा. सी. गिरिकुमार प्रभारी खेल सचिव शारीरिक शिक्षा विभाग, आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति के मार्गदर्शन में भाग लिया था । (1) नितय बेरा (एम.ए.2) (2) राजेश कुमार (एम.ए. - 1) (3) कृष्ण गोपाल पाठक (शा-3) (4) राजु लाल माली (शा.3) (5) मूलचंदशर्मा (शा.2) (6) के. रेड्डय्या रेड्डी (बी.एससी.2) - प्रतिभागी थे ।

दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताएँ -

1. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय वालीबाल (पुरुष) प्रतियोगिता - कृष्णा विश्वविद्यालय, मछिलीपट्नम द्वारा पी.बी. सिद्धार्थ कालेज, विजयवाडा, आंध्रप्रदेश में दिनांक 8 से 12 अक्टूबर 2014 तक आयोजन किया गया । 8 छात्रों का एक दल भाग लिया था । (1) नागराजु (आ.1) (2) दिलीप कुमार आचार्य (आ.2) (3) बत्तुल श्रीनिवास राव (आ.2) (4) रजत कुमार नायक (आ.2) (5) हरिपाद बेरा (आ.2) (6) पुन्नमकृष्ण (सा.2) (7) अर्जुन मण्डल (शा.1) (8) मिलन बनचूर (शा.1) - प्रतिभागी थे ।

2. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय शतरंग (पुरुष और स्त्री) प्रतियोगिता -

दिनांक 14 से 19 अक्टूबर 2014 वी.आई.टी. विश्वविद्यालय वेलूर, तमिलनाडु द्वारा आयोजित किया गया था । पाँच छात्रों का एक दल भाग लिया था । (1) सुनीला एस (आ.1) (2) पी. हरीष बाबू (शा.3) (3) डी. दुर्गा प्रसाद (बी.एड.) (4) एस. लक्ष्मी सुधाकर (बी.एड.) (5) अयाचित शंतनू (आ.2) (6) आर. श्रीधर (आ.2)

3. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय क्रिकेट (पुरुष) प्रतियोगिता -

अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई द्वारा जे.जे. कालेज इंजनीयरिंग एवं तकनीकी, तिरुचुरापल्ली, तमिलनाडु में दिनांक 17 से 26 नवंबर 2014 तक आयोजित किया गया । 14 छात्रों का एक दल भाग लिया था जो निम्न प्रकार है - (1) ए. राकेश (एम.फिल.) (2) मणिभद्र (एम.फिल.) (3) अजित कुमार साहु (एम.फिल.) (4) पंकज उपाध्याय (आ.2) (5) ओबय्या (आ.2) (6) के. दुर्गा प्रसाद (आ.1) (7) आर. श्रीकांत भाषा (आ.1) (8) श्रीकांत जेना (आ.1) (9) शिवादित्य (आ.1) (10) एस. महेश (आ.1) (11) के. वंशीकृष्णा (आ.1)

4. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय फुटबाल (पुरुष) प्रतियोगिता -

केलिकट विश्वविद्यालय केरला द्वारा दिनांक 13 से 22 दिसंबर, 2014 तक आयोजित किया गया था । 12 छात्रों की एक दल भाग लिया था । (1) अजित कुमार साहु (एम.फिल.) (2) व्यासखान के.बी. (आ.1) (3) प्रभात कुमार पण्डा (शा.1) (4) बिश्वजीत तपनो (शा.2) (5) नरेश कुमार गडत्या (शा.2) (6) बेसिल कुजुर (शा.2) (7) रमाकांत साहु (शा.2) (8) सुरेंद्र कुमार (शा.1) (9) बिक्रम साहु (शा.1) (10) झंकटेश्वर प्रधान (शा.1) (11) प्रताप कुजुर (शा.1) (12) पेमा शेरिंग (शा.1) - प्रतिभागी थे ।

5. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय कब्बड्डी (पुरुष) प्रतियोगिता -

वेलस विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु द्वारा दिनांक 20 से 24 दिसंबर, 2014 तक आयोजित किया गया था । 10 छात्रों की एक दल भाग लिया था । (1) उमा नरसिंह मूर्ति (एम.फिल.) (2) सी. श्रीकांत (आ.2) (3) टी. रामगंगय रेड्डी (आ.1) (4) वेन्नं सुरेश (आ.1) (5) आर. श्रीकांत भाषा (शा.1) (6) जे. जनार्धन (शा.1) (7) बि. गणपति (शा.3) (8) पी. कृष्णा (शा.3) (9) ओ. साम्बशिवराव (शा.2) (10) एम. कृष्णाराव (शा.2) - प्रतिभागी थे ।

(आ) राष्ट्रिय सेवा योजना -

विद्यापीठ रा.से.यो.का उद्देश्य में निस्वार्थ सेवा मनोभावों का निर्माण करना है। विद्यापीठ में पाँच रा.से.यो.इकाइयाँ है। चार लडको के लिए एक इकाई लडकियों के लिए । रा.से.यो. कार्यक्रम वर्ष 2014-15 के लिए विद्यापीठ छात्रों के नामांकन के साथ शुरु किया गया। सभी रा.से.यो.इकाईयों द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रत्येक इकाई में 100 स्वयं सेवको को वर्ष 2014-15 के लिए रा.से.यो.के अंतर्गत दर्ज किया गया। इस प्रकार विद्यापीठ ने रा.से.यो. के पाँच इकाईयों में 500 स्वयं सेवको को एकत्रित किया ।

उद्देश्य - विद्यापीठ रा.से.यो.इकाइयाँ अपने सेवाओं से समाज के कई लोगों के जीवन में बदलाव लाने को प्रेरित करता हैं।

रा.से.यो. कार्यक्रम-विशेष शिबिर -

विद्यापीठ के सभी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों ने एक प्रकार से जादू सा बदलाव लाना चाहता है । रा.से.यो. एक ऐसा मंच है जो समाज की सेवा करता है। और कई चेहरों पर मुस्कान ला दें । समाज के लिए एक प्रकार सा त्यौहार सा निर्माण करना चाहते हैं। जहाँ पर अपनी चालाकियों को उजागर कर सकें । यह कोई आसान काम नहीं है फिर भी आगामी वर्षों के लिए विरासत में काम आ सकें ।

इकाई सं	कार्यक्रम अधिकारी	विशेष शिबिर जिन गाँवों को अपनाया	स्वयं सेवकों की संख्या
1.	डा. भरत भूषण रथ	मामंडूर (गाँव)	50
2.	डॉ. परामिता पण्डा	नडिमपल्ली	50
3.	डॉ.जे.बी.चक्रवर्ती	कंदुलवारिपल्ली	50
4.	डॉ. ए. सच्चिदानंद मूर्ति	नारावारिपल्ली	50
5.	डॉ. सी. गिरिकुमार	गुरप्पगारिपल्ली	50

सामाजिक तथा आर्थिक प्रतिकूल स्थितियों को दृष्टि में रखते हुए विद्यापीठ रा.से.यो.इकाइयों ने चित्तूर जिला के उपरोक्त पिछडे गाँवों में जागरुकता लाने हेतु चुना था। रा.से.यो.लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्यक्रम अधिकारियों के नेतृत्व में स्वयंसेवको ने 7 दिनों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया । पहले तीन विशेष शिबिर दिनांक 14 से 20 दिसम्बर तक चलाया गया। अगले दो इकाइयाँ अर्थात् 4 और 5 वीं इकाइयाँ दिनांक 28 फरवरी, 2013 से 6 मार्च 2013 तक विशेष शिबिर चलाया गया। रा.से.यो.के संयोजक और कार्यक्रम अधिकारियों के नतृत्व में शिबिरों को प्रभावपूर्ण डंग से आयोजित किया था । निम्न योजनाओं द्वारा चुने हुए गाँवों में विकास लाया ।

सर्वे - रा.से.यो. के संयोजनाधिकारी के आदेशानुसार सभी छात्र सदस्यों को गाँव में घूमकर मुफ्त सर्वे किया गया। एक-एक घर जाकर उनको सरदार द्वारा प्राप्त सुविधाएँ, शिक्षा व्यवस्था, गैर सरकारी सुविधा आदि की जानकारि और आरोग्य संबधि जानकारी भी ली गई थी। उसके बाद हम अपनी ओर से कुछ बदलाव लाने हेतु नए विचार प्रकट करते हैं। यह सुनकर गाँव का सरपंच और विद्यालय मुख्याध्यापक सभी काफी प्रभावित हुए थे ।

श्रमदान - स्कूल और गाँव के चारों तरफ साफ सफाई की। खेल मैदान साफ कर उसका एक आकार भी दिए थे ।

हमने अलग-अलग तरह के 25 प्रकार पौधों का रोपन किया । स्कूल के चारों ओर बीज रोपण कर काफी सुंदर बनाया। स्कूल भवन को चूने से लेपन कर सफेद बनाया। इसके लिए स्कूली बच्चों और ग्रामीण से रा.से.यो.इकाईयों के सदस्यों की काफी प्रशंसाये प्राप्त हुई थीं।

गाँववालो से नाटक - समूह के सदस्यों ने स्कूल के वातावरण पर तेलुगु भाषा में एक नाटक का आयोजन किया। उसमें महिला शिक्षा संबंधी महत्व दिया गया था । तंबाकु सेवन से होने वाली हानि, शराब लेने से होने वाली बुराई पर प्रकाश डाला। इससे गाँव वाले बहुत प्रभावित हुए। हमारे सामने गाँव वालों ने यह निर्णय लिया कि शराब और धूमपान सेवन नहीं करेंगे।

आपदा प्रबंधन -बाढ और अकाल जैसे अलग-अलग परिस्थितियों का मुकाबला करना तथा आपदाओं से जीवन को कैसे बचाया जाए, इस पर एक उपयोगी व्याख्यान दिया गया। झूठी परिस्थितियों में कर्तव्यों का बोध करवाया गया। विविध आधुनिक और जीवत तकनीकों से गाँववालों को गतिविधियों का संचालन करना सिखाया ।

साक्षारता कार्यक्रम -रा.से.यो.स्वयं सेवको ने गाँवों में घूमकर स्कूल आयु के बच्चों और उनके अभिभाषकों को एक स्थान पर एकत्रित किया। उनको बालाश्रम द्वारा होने वाली हानियाँ और शिक्षा के महत्व के बारे में बताया। बच्चों के माता-पिता ने व्याख्यानों से प्रभावित होकर बच्चों को पास वाले स्कूल में भर्ती करवाया। यह एक मुश्किल काम था। लेकिन हम ने इसे आसान तरीके से पूरा किया ।

संस्कृति और जागरूकता कार्यक्रम :

इस वर्ष विद्यापीठ ने ग्रामीणों को नए विचारों से उत्तेजित की सोच से व्याख्यानों करने और भारतीय विरासत तथा संस्कृति पर नाटक जैसे पुराणों का प्रवचन, सनातन धर्म में सांप्रदायिक सद्भाव को अपनाया ।

स्वयं सेवकों ने ग्रामीणों में ए.आई.डी.एस. और उसकी जटिलताओं, नियंत्रित करने के लि, इस खतरनाक प्रभावित सिंड्रोम से सावधानी से जीवन व्यतीत करने की जागरूकता का सर्वश्रेष्ठ तरीकों से प्रयास की ।

पर्यावरण जागरुकता -

* ग्रमामीणों को पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और वृक्षारोपण के महत्व के बारे में बताया गया ।
* शौचालय उपयोग और उन्हे एवं घर और परिस प्रांतो को साफ सुथरे तरीके से रखने में अभ्यसिव करना ।
* गाँवों में मंदिरों को साफ करने चूने से लेपन कर सफेद बनाया तथा मंदिरों को एक नया रूप दिया ।
* सदस्य गाँव के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों के काँलनियों के जाकर प्रथमचिकित्सा, परिसर नियोजन, विभिन्न संक्रमकरोंगों जैसे (मलेरिया टाइफाइड आदि) और रोगाणु रोकथाम पर व्याख्यान दिया। एड्स संबन्धी जानकारी भी दी गई थी ।
* बच्चों के लिए 'संस्कत पढो' शिबिर कार्यक्रम का आयोजन किया ।
* दूसरी ओर कार्यक्रम अधिकारियों और सदस्यों ने गाँव वालों को धर्म और मूल्य प्रणाली तथा संरक्षण पर व्याख्यान दिए। इसके लिए सभी की ओर से रा.से.यो.इकाइयों को अच्छी प्रशंसा प्राप्त हुई ।

✔ रक्तदान शिबिर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में 30 मार्च 2014 को आयोजित किया गया । रक्तदान से मानव जीवन की बचाव का शिक्षण छात्रों को दिया गया । उन में से करीबन 50 व्यक्तियों ने 125 इकाइयों की रक्त दान किया जो श्री वेंकटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्था द्वारा सराहना की गई ।

एक दिन शिबिर -

एक दिन शिबिर कार्यक्रम भी रा.सं.वि.परिसर प्रांत में आयोजित की जाती है । 45 एकड भूमि पर विभिन्न इमारतों जैसे पुस्तकालय, शैक्षिकभवन, छात्रावास, प्रशासनिक भवनों का निर्माण किया गया । एक बडा मैदान भी है जिसमें नियमित से रा.से.यो कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। इन इकाइयों ने पुस्तकालय परिसर प्रांत में स्वच्छता एवं हरा भरा पौधों का रोपण करवाया । इन इकाइयों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम सूचीबद्ध है -

कंकडे और पत्थरों को निकालकर बैडमिंटन, वॉलीबाल, और खो खो मैदान को समतल बनाया तथा क्रिकेट पिच को सीधा किया ।

* राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भव से संबंधित एन.एस.एस. सेल तिरुपति में एक बडी रैली के साथ कुलसचिव, प्रो. हरेकृष्ण शतपथी द्वारा उद्घाटित किया तथा एकत्रित राशि भेजी गई ।
* दिनांक 24 फरवरी 2014 श्री अर. गोकुल कृष्ण, युवा अधिकारी और प्रधान के की उपस्थिति में विद्यापीठ के स्वयं सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने राष्ट्रीय युवा नीति कार्यक्रम में भाग लिया । इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने रैली कार्यक्रम में भाग लिया ।

संकाय सदस्यो द्वारा संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों में भागीदारी-

आचार्य (प्रो.) एस्. एस्. मूर्त्ति :

(१) २०१५ मार्च २३ से २६ तक श्री श्रृङ्गेरी शारदापीठ सपरकरा, अद्वैतवेदान्त सभा,क्रिमेलता, पश्चिम गोदावरी (जिला) आन्ध्रप्रदेश द्वारा आयोजित विद्वत् सम्मेलन में भाग लिये ।

(२) २०१४, सितम्बर ८ से सितम्बर ११ तक श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणामनय श्री शारदापीठम्, श्रृंगेरी द्वारा आयोजित श्री महागणपति व्याख्यार्थ विद्वत् सभा में भाग लिये ।

आचार्य (प्रो.) आर्. एल्. नसिंह शास्त्री

(१) २०१४ दिसंबर से दिसंबर ३ तक एस. जी. एस. वेदनिधि अकादमी मास्टर्स इन्सिट्यूट, अवदूल दत्तपीठम्, मैसूर और महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जैनी से मिलकर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में लक्ष्य-लक्षण समन्वय के वेदवेदांगों से संबंधित "स्वर उच्चारण" विषय पर अतिथि वक्ता के रूप में भाषण दिये ।

आचार्य (प्रो.) जे. रामकृष्ण

(१) २०१५ मार्च २३ से मार्च २५ तक श्री श्रृंगेरी शारदापीठ सपरकरा, प्रिमेषला, पश्चिम गोदावरी (जिला), आन्ध्रप्रदेश द्वारा आयोजित विद्वत् सम्मेलन में भाग लेकर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

(२) २०१४ अक्तूबर १३ से १५ तक एस. वी. वेद विज्ञानपीठम्, धर्मगिरि, तिरुमला द्वारा आयोजित २६ वाँ श्रीवेंकटेश्वर वेदशास्त्र आगम विद्वत् सम्मेलन में व्याकरण उत्तर भाग के परीक्षक के रूप में भाग लिये ।

डॉ. एन. आर. आर. ताताचार्य :

(१) २०१५ मार्च २३ से २५ तक श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीविहारी, पुरी, ओडिस्सा, यू. जी. सी. के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

श्री यशस्वी :

(१) २०१४ , दिसंबर ३० से २०१५ जनवरी ४ तक गौहती विश्वविद्यालय, गौहती (असम) के द्वारा आयोजित ४७ वाँ अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन में भाग लेकर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

आचार्य (प्रो.) ए. श्रीपाद भट्ट

(१) दिनांक १० और ११ जुलाई २०१४ को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नईदिल्ली के गोपनीय कार्यक्रममें भाग लिये ।

(२) दिनांक १२ और १३ मार्च २०१५ को श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीविहार, पुरी में आयोजित ज्योतिषविज्ञान सम्बन्धी सभा में भाग लिये ।

(३) १७ दिसंबर २०१४ को इंडियन इन्स्टूट ऑफ आस्ट्रोफिसिक्स, बेंगलोर द्वारा भास्कराचार्य नामक विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लेकर "गोलाध्याया" नामक शीर्ष पर भाषण दिये ।

प्रो. वी. उन्निकृष्ण नपियातिरी

(१) दिनांक १८ और २० मार्च २०१५ को केरल विश्वविद्यालय पलायम में आयोजित संस्कृत विशेष ज्योतिष जून् २०१५ प्रश्नपत्रों (बी. ए. CBCS) की तैयारी में भाग लिये ।

(२) दिनांक ५ और ६ फरवरी २०१५ को सरकारी संस्कृत महाविद्यालय, तिरुवनंतपुरम्, केरल में मेडिकल आस्ट्रोलाजी नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिये ।

(३) दिनांक ५ से ७, २०१४ तक केरल विश्वविद्यालय पलायम, तिरूवनंतपुरम् में आयोजित स्नातक स्तर के प्रश्न पत्रों मे समिति सदस्य के रूप में भाग लिये ।

डॉ. सितांसु भूषण पण्डा

(१) स्नातकोत्तर विभाग, धर्मशास्त्र, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीविहार, पुरी, ओडिस्सा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "समाजे स्मार्तधर्मेषु गुणधर्मस्य महत्त्वम्" नामक विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

डॉ. निरंजन मिश्र

(१) २०१४ जुलाई ७ से १० तक OTV ओडिस्सा दूरदर्शन लिमिटेड, पुरी मे रथयात्रा, बाहुडा यात्रा आदि कार्यक्रमों में व्याख्याता के रूप में का किया ।

(२) दिनांक ६ और ७ अप्रैल २०१५ को श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी द्वारा वेद/कर्मकांड नामक विषय के लिए प्रश्न-पत्रों की समिति सदस्य के रूप में भाग लिये ।

(३) उत्कल पीठ और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति के तत्त्वावधान में श्रीजगन्नाथ संस्कृत सुरक्षा वाहिनी के भगवान जगन्नाथ मंदिर के आंगन में आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिये ।

प्रो (श्रीमती) आर. जे. रमाश्री :

(१) दिनांक ४ जुलाई २०१४ को श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति के कंप्यूटर विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन (NCDMA-2014) में भाग लेकर "इन्ट्रडक्शन टु कंप्यूटर्स स्पीच एण्ड लैंग्वेज प्रोसेसिंग" नामक विषय पर भाषण दिये ।

(२) दिनांक २० जून २०१४ को श्री कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय अनंतपुरम् के कंप्यूटर विभाग द्वारा आयोजित एम. सी. ए. VI सेमिष्टर प्रायोजन की मौखिकी परीक्षक के रूप में भाग लिये ।

(३) दिनांक १३ जुलाई २०१४ को श्रीविद्यानिकेतन इंजनीयरिंग महाविद्यालय, रंगमपेट, एम. सी.ए. VI सेमिष्टर छात्रों के प्रायोजन कार्यक्रम के अंतर्गत मौखिकी बाह्यपरीक्षक के रूप में रहे ।

(४) दिनांक २५ और २६ मार्च २०१५ को केन्द्रीय विद्यालय तिरुपति और केन्द्रीय विद्यालय वेंकटगिरि के अंशकालिक अध्यापकों की चयन समिति के सदस्य के रूप में भाग लिये ।

(५) दिनांक १९ और २० अगस्त २०१४ को भारतीयार विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर, कंप्यूटर विभाग द्वारा आयोजित पी.एच.डी. मौखिकी में बाह्यपरीक्षक के रूप में भाग लिये ।

(६) दिनांक २ सितंबर २०१४ को विक्रमसिंहपुरी विश्वविद्यालय, नेल्लूर के कंप्यूटर विभाग द्वारा आयोजित एम. सी. ए. II और IV सेमेष्टर के बाह्यपरीक्षक (मौखिकी) के रूप में भाग लिये ।

(७) श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय, काँचीपुरम्, तमिलनाडू में पी.एच.डी. के शोधार्थियों के लिए मौखिकी का आयोजन और परीक्षक के रूप में भाग लिये ।

(८) सरकारी महिला महाविद्यालय, मदनपल्ली में आयोजित ३१ वार्षिकोत्सव में विशेष अतिथि के रूप में भाग लेकर भाषण दिये ।

डॉ. श्रीधर

(१) योगिवेमन विश्वविद्यालय, कडपा में दिनांक १३ अगस्त २०१४ को एम.सी.ए. II सेमेस्टर छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया गया ।

(२) दिनांक २७ मार्च २०१५ को केन्द्रीयविद्यालय-२ सी. आर. एस, तिरुपति के अंशकालिक अध्यापकों के चयन में विषय विशेषज्ञ के रूप में भागलिये ।

(३) श्रीवेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति में कंप्यूटर साइन्स और कंप्यूटर अप्लिकेशन विषय में परीक्षक के रूप में भाग लिये ।

(४) श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति के स्ख्याशास्त्रविभाग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भागलिये ।

(५) डा. वी. एस. कृष्ण, सरकारी महाविद्यालय, विम्खपटनम्, में आयोजित (CAMCAT 2014) में भाग लेकर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. ए. चन्दुलाल

(१) दिनांक १७ फरवरी से २१ फरवरी २०१५ तक काकतीय विश्वविद्यालय, वारंगल, तेलंगाणा के गणित विभाग के द्वारा आयोजित (ICOVP-2015) में भाग लेकर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

प्रो. पी. टी. जी. वाई. संपतकुमाराचार्युलु

(१) श्री श्री श्री त्रिदंडी चिन श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी, सीतानगरम्, विजयवाडा के आश्रम में आयोजित उभय वेदान्त पंडित सभा में भाग लेकर प्रवचन प्रस्तुत किया गया ।

प्रो. एम. एल. नरसिंहमूर्ति

(१) २०१४, जून १६ से १८ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, राजीवगाँधी क्याम्पस, श्रृंगेरी में "शोध प्रद्धति, हस्तलेखन और शास्त्रानुशीलन" नामक विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिये ।

(२) २०१४ जून ३० से जुलाई ४ तक इस्कान बेंगलोर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भागलिये ।

(३) २०१४ जुलाई १६ से १८ तक श्री रमेशंखरा प्रसाद, बेंगलोर द्वारा आयोजित "वेदान्त चिन्तन गोष्ठी" नामक संगोष्ठी में भाग लिये ।

(४) दिनांक मार्च २०१५ को गोकले इन्स्टूट ऑफ पब्लिक अफैर्स, बेंगलोर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में "विद्यामया स्वामीगलु जीवमुक्ति विवेषाहा ओंदु अवलोकन" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया ।

(५) श्री श्री जगत्गुरु शंकराचार्य महासंस्थानम्, दक्षिणामान्य श्रीशारदापीठ, श्रृंगेरी में दिनांक २६ जनवरी २०१५ को १२० वाँ वार्षिकोत्सव (अमृतमहोत्सव) में भाग लिये ।

(६) २०१४ दिसंवर २२ से २४ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्रृंगेरी में आयोजित सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम (यूथ फेस्टिवल्स ऑफ इंटर कालेजस) में जज के रूप में रहे ।

प्रो. एम. एस. एस. शर्मा

(१) दिनांक १० और ११ नवंबर २०१४ को श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री विहार, पुरी में पी.एच.डी विद्यावारिधि उपाधि के निमित्त आयोजित मौखिकी के लिए परीक्षक के रूप में रहे ।

डॉ. के. गणपति भट्ट

(१) दिनांक १९ फरवरी २०१५ को सरकारी संस्कृत महाविद्यालय, तिरुवनंतपुरम् में आधुनिक युग में संस्कृत शिक्षा का विषय और चुनौतियाँ नामक विषय पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिये ।

(२) दिनांक १२ और १३ फरवरी २०१५ को शारदा विज्ञानम महाविद्यालय, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया ।

(३) दिनांक ३ मार्च २०१५ को श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडी के वेदांत विभाग द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिये ।

डा. के. विश्वनाथ

(१) २०१४ अगस्त ११ से १३ तक जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य स्वामीगल के ८० वाँ जन्मोत्सव के अवसर पर श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालयम्, काँचीपुरम में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रपत्र प्रस्तुत किया गया।

प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित

(१) २०१४ आगस्त ११ से १४ तक श्री गुरुसार्वभौम संस्कृत विद्यापीठ, श्रीराघवेन्द्र स्वामी मठ, मंत्रालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय तत्वमंजरी पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

(२) श्रीगुरु सार्वभौम संस्कृत विद्यापीठ, मंत्रालयम, कर्नूल (जिला), आन्ध्रप्रदेश द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "द्वैत वेदान्त" पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया है ।

(३) २०१५ जनवरी २७ से २९ तक श्री पेजवरा अधोक्षज मठ, उडिपी द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिये।

डॉ. नारायण

(१) २०१५ जनवरी २७ से २९ तक भारतीय दर्शन शास्त्र के संबंध में श्री प्रेजवरा अधोक्षण मठ, उडिपी द्वारा आयोजित कार्यशाला में भाग लिये ।

(२) एच. एच. श्री विद्याशालिस्थ स्वामी जी, श्रीबंधरकेरी मठ, उडिपी के ६० जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए ।

(३) दिनांक १० अक्तोबर और १३ अक्तोबर से १५ अक्तोबर २०१४ तक श्रीवेंकटेश्वर वेद विज्ञानपीठ, धर्मगिरि, तिरुमल में २६ वाँ श्रीवेंकटेश्वर वेद शास्त्र आगम विद्वत सम्मेलन में परीक्षक के रूप में रहे ।

प्रो. वी. एस. विष्णुभट्टाचार्युलु

(१) दिनांक ११ और १२ जुलाई २०१४ को हिन्दू धर्म प्रचार परिषद तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति आस्थानमंडपम द्वारा आयोजित आगम सम्मेलन में उपस्थित रहे ।

(२) दिनांक २५ और २६ अप्रैल २०१५ को जे.एस.एस. हाईस्कूल, लक्ष्मीपुरम्-मैसूर, कर्णाटक में वर्ष २०१४-१५ के लिए आयोजित आगम वार्षिक परीक्षा के मौखिक परीक्षक के रूप में रहे ।

डा. (श्रीमती) डी. ज्योति

(१) २०१४ अक्तोबर १७ से १९ तक श्रीवेकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति के दर्शन विभाग द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में योगदर्शन पुराण इति हासों पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(२) दिनांक २३ और २४ दिसंबर २०१४ को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा ई गवर्नेस नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिये ।

(३) दिनांक ७ और ८ फरवरी २०१५ को श्रीवेंकटेश्वर प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति तिरुमल देवस्थानम, तिरुपति द्वारा रामायण में योग नामक शीर्षक पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिये ।

(४) श्रीवेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय, तिरुपति में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में "अंत:करण शोधना" नामक शीर्षक पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(५) दिनांक २५ और २६ मार्च २०१५ को मंगलोर विश्वविद्यालय, मंगलगंगोत्री में आयोजित बी.ओ.एस सभा में बाह्य सदस्य के रूप में रहे ।

प्रो. सुदर्शनशर्मा

(१) दिनांक ५ और ६ अगस्त २०१४ को यू जी सी नई दिल्ली में कार्य प्रस्तुत किया गया ।

(२) दिनांक ११ और १२ अगस्त २०१४ को आयोजित संस्कृत-सप्तोत्सव सभा में उपस्थित रहें।

(३) २०१४, सितंबर ८ से १२ तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा उज्जैन में नियोजित गोपनीय कार्यक्रम में भाग लिये ।

(४) दिनांक ३ और ४ फरवरी २०१५ को हैदराबाद में आयोजित संस्मरण महासभा के अध्यक्ष के रूप में भाग लिये ।

(५) दिनांक २० फरवरी से २२ फरवरी २०१५ तक तथा २५ से २६ फरवरी २०१५ तक भारतीय वेद महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, नईदिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रहें ।

(६) २०१५ अप्रैल ८ से १४ तक महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, गौहति में रेफ्रेशर कोर्स संचालित किया गया, उस में भाग लिये ।

प्रो. जी. एस. आर. कृष्णमूर्ति

(१) दिनांक ३० जून तथा १ और २ जुलाई २०१४ को इस्कान मल्टिविजन थियेटर, हरेकृष्ण हिल, बेंगलोर में इस्कान और भारतीय विद्याभवन द्वारा उपनिषद संदेश नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिये।

(२) दिनांक १३ और १४ अगस्त २०१४ को श्रीसाईबाबा राष्ट्रीय महाविद्यालय-अनंतपुरम् में आयोजित "संस्कृत दिवस" के समापन समारोह के उपलक्ष्य में व्याख्यान प्रस्तुत किये ।

(३) दिनांक ३० जुलाई २०१४ को श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय, काँचीपुरम् के संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग में आयोजित "डाक्टरल कमेटी" की सभा में उपस्थित रहे ।

(४) दिनांक २२ और २३ दिसंबर २०१४ को राजीवगाँधी, कॉम्पस, श्रृंगेरी में आर. एस. संस्थान द्वारा आयोजित युवमहोत्सव में सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों केलिए जज के रूप में रहे ।

(५) दिनांक ७ और ८ जनवरी २०१५ को श्रीमेजती गुरवय्या डिग्री कालेज- गुन्टूर, आन्ध्रप्रदेश में आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाषण दिये ।

(६) दिनांक १८ और १९ दिसंबर २०१४ को श्री वेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय, तिरुपति में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में पधारें ।

(७) दिनांक १५ दिसंबर २०१४ को उस्मानिया विश्वविद्यालय - हैदराबाद में तेलंगाणा सरकार के सम्माननीय सचिव द्वारा गठित एक समिति की सभा में उपस्थित रहें ।

(८) दिनांक ८ और ९ सितंबर २०१४ को कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीचामराजेन्द्र संस्कृत महाविद्यालय, चामराजपेट, बेंगलोर द्वारा आयोजित गाँधी स्मृति राष्ट्रीय संस्कृत कवि संगम कार्यक्रम में भाग लिये ।

(९) दिनांक १९ सितंबर २०१४ को. आर. एस. संस्थान, श्रृंगेरी में आयोजित स्थानीय शोध मंडल सभा में उपस्थित होकर बाह्य विषय-विशेषज्ञ के रूप में रहे ।

(१०) दिनांक २२ और २३ सितंबर २०१४ को आर.एस.संस्थान, भोपाल में आयोजित "सेन्टर ऑफ स्टडीस इन नाट्यशास्त्र" कार्यक्रम में भाग लेकर उसके मूल्यांकन सदस्य के रूप में रहे ।

(११) २०१४ जनवरी २ से ४ तक गौहती विश्वविद्यालय, गौहती (असम) में साहित्य अकादमी और संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित ४७ वाँ अधिवेशन (AIOC) में प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

प्रो. ललितारानी

(१) दिनांक ३ और ४ जुलाई २०१४ को इस्कान और भारतीय विद्याभवन द्वारा इस्कान, बेंगलोर में "उपनिषद संदेश" नामक शीर्षक पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रहे ।

(२) दिनांक ३० और ३१ मार्च २०१५ को यू.जी.सी. नईदिल्ली में आयोजित गोपनीय कार्यक्रम में उपस्थित रहें ।

(३) २०१४ अक्तोबर १२ से १७ तक सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकन्डरी एजूकेशन शिक्षा सदन, दिल्ली में आयोजित संस्कृत विषयक कार्यशाला में भाग लिये ।

(४) दिनांक १५ और १६ सितंबर २०१४ को कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलोर द्वारा "संस्कृतसाहित्य में विद्यमान नारी की भूमिका" नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर कालिदास काव्येषु वनिताधर्मः नामक रीष्क पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

प्रो. सत्यनारायण आचार्य

(१) दिनांक २०१४ नवंबर २८ से ३० तक सरकारी यूजी. हाईस्कूल, सिंहपडा, नयागढ (जिला) ओडिस्सा में आयोजित सरकारी यूजी हाईस्कूल के स्वर्णजयंती उत्सवों में शामिल रहे ।

(२) दिनांक २०१५ फरवरी ९ से १६ तक संसी महाविद्यालय, संसी, मालदा, पश्चिमबंगाल के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (संस्कृत साहित्य उपदेश) में भाग लेकर मुख्य वक्ता के रूप में भाषण दिये ।

(३) २०१४ सितंबर १ से ४ तक ओडिस्सा चेयर और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीट तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में तथा जगन्नाथ संस्कृतसुरक्षा वाहिनी के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में, हाउज, खास-नईदिल्ली द्वारा भगवानजगन्नाथ से संबधित १२ उत्सवों पर एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(४) २०१५ जनवरी २१ से २३ तक कृष्णप्रिया देवी महिला कालेज दापल्ली, नयागड (जिला) ओडिस्सा के वार्षिकोत्सव में दिनांक २३ जनवरी २०१५ को मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिये ।

डॉ. रानी सदाशिव मूर्ति

(१) दिनांक २३ और २४ जून २०१४ को केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम् में सेन्टर पर वेदान्त स्टडीस के द्वारा आइडोलॉजिकल रीसेर्च ट्रेडिसन्स एण्ड इन्नोवेशन्स विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिये ।

(२) २०१५ मार्च १७ से २० तक श्रीवेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय तिरुपति में राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन-२०१५ में प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(३) दिनांक ४ और ५ मार्च २०१५ को आन्ध्रविश्वविद्यालय-विशाखपटनम् के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेकर व्याख्यान प्रस्तुत किये ।

(४) दिनांक १८ और १९ फरवरी २०१५ को सरकारी संस्कृत महाविद्यालय तिरुवनंत पुरम् में आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित रहे ।

(५) २०१४ नवंबर ७ से १० तक भारत धर्म प्रचार परिषद के द्वारा श्रीमान महाभारत सारस्वत यज्ञ विषय पर मुंबई में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।

(६) २०१५ फरवरी २० से २३ तक केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम् के वेदान्त अध्ययन केन्द्र द्वारा "साइन्टफिक क्लालेड्ज सिस्टेम इन एन्सिन्ट संस्कृत टेक्स्टस" शीर्षक पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

(७) दिनांक ४ और ५ फरवरी २०१५ को एस. आई. ई. एम.ए (SIEMA) कोयंबत्तूर में यू.पी.एफ (UPF) द्वारा आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित होकर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

डॉ. सी. रंगनाथन

(१) दिनांक १९ और २० मार्च २०१५ को श्री वेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय तिरुपति में आयोजित "राष्ट्रिय वैदिक सम्मेलन - २०१५" में उपस्थित होकर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

(२) दिनांक २४ से २६ फरवरी २०१५ तक अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत महासम द्वारा धर्मभूषणम् से संबंधित कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।

(३) दिनांक १३ मार्च २०१५ को मद्रास विश्वविद्यालय-चेन्नई में आयोजित गोपनीय कार्यक्रम में भाग लिये ।

(४) दिनांक ६ नवंबर २०१४ को श्री ब्रह्मतंत्र स्वतंत्र परेकला स्वामी मठ-मैसूर के श्रीमद् वेदान्त देसिका विहारसभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित होकर व्याख्यान प्रस्तुत किये ।

(५) दिनांक ५ फरवरी २०१५ को श्रीरंगम के श्रीमदानंदवम् आश्रम में आयोजित तिरुप्पावनी महोत्सव में उपस्थित रहे ।

(६) २०१४ अवतूबर १० और १३ से १५ अक्तोबर तक श्री वेंकटेश्वर वेद विज्ञान पीठम्, धर्मगिरि, तिरुमल तिरुपति देवस्थानम द्वारा संचालित २६ वाँ श्रीवेंकटेश्वर वेद शास्त्र आगम विद्वत् सम्मेलन में दिव्य प्रबंधम के लिए परीक्षक के रूप में रहे ।

डॉ. के. राजगोपालन

(१) दिनांक १९ और २० मार्च २०१५ को श्रीवेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय तिरुपति के राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन-२०१५ में उपस्थित होकर "वेद-पुराणों" पर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

(२) २०१५ मार्च ९ से १३ तक श्री श्री श्री त्रिदंडी चिन्न श्रीमन्नारायण रामानुज जीयर स्वामी, सीतानगरम्-विजयवाडा के उभय वेदान्त पंडित सभा के आश्रम में प्रवचन प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. भरत भूषण रथ

(१) २०१४ सिंतबर १ से ४ तक ओडिस्साचेयर और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में जगन्नाथ संस्कृतसुरक्षा वाहिनी के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में, हाउज, खास-नईदिल्ली द्वारा भगवान जगन्नाथ से संबंधित १२ उत्सवों पर एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(२) दिनांक २४ अक्तूबर २०१४ को उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय - हरिद्वार, देहरादून में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में उपस्थित रहे ।

डॉ. जे. बी. चक्रवर्ती

(१) २०१४ सितंबर १३ से १५ तक यजी एजूकेशनल सोसाइटी, श्री सूर्यासदन, गरिविडि, विजयनगरम (जिला), आन्ध्रप्रदेश के द्विदिवसीय सम्मेलन संस्कृत वाङ्मय अध्ययन-अध्यापन विश्लेषण संगोष्ठी में भाग लेकर मूल्यशिक्षा पर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

डॉ. लीनाचन्द्रा

(१) २०१४ सिंतबर १५ से १७ तक कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय-बैंगलोर के राष्ट्रीय सम्मेलन " संस्कृत साहित्य में विद्यमान नारी की भूमिका" नामक विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. श्वेतपद्मा शतपथी

(१) दिनांक २४ सितंबर २०१४ को उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय-हरिद्वार, देहरादून में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में उपस्थित होकर प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

(२) २०१४ सितंबर १ से ४ तक ओडिस्सा चेयर और राष्ट्रीय संस्कृतविद्यापीठ तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में जगन्नाथ संस्कृत सुरक्षा वाहिनी के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में, हाउज, खास-नईदिल्ली द्वारा भगवान जगन्नाथ से संबंधित १२ उत्सवों पर एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. ज्ञानरञ्जन पण्डा

(१) २०१५ फरवरी ३ से ७ तक उत्तर ओडिस्सा विश्वविद्यालय, ताकतपुर, दरिपडा में यू.जी.सी. आर्थिक सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

(२) दिनांक २५ जनवरी २०१५ को चिंतामणी संस्कृत महाविद्यालय-फतेपुर, बालसोर ओडिस्सा के वार्षिकोत्सव के संदर्भ में विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किये गये ।

(३) २०१४ सितंबर १ से ४ तक ओडिस्सा चेयर और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में जगन्नाथ संस्कृत सुरक्षा वाहिनी के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में, हाउज, खास-नईदिल्ली द्वारा भगवान जगन्नाथ से संबंधित १२ उत्सवों पर एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. (श्रीमती) वी. सुजाता

(१) दिनांक २७ मार्च २०१५ को केन्द्रीय विद्यालय K.V.No.2 सी.आर.एस्. (CRS) तिरुपति के अंशकालिक अध्यापकों की चयन समिति सदस्य के रूप में उपस्थित हुए ।

(२) दिनांक ३१ मार्च २०१५ को श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय-तिरुपति के अंग्रेजी विभाग में आयोजित बी. ओ. एस. (BOS) सभा में उपस्थित रहे ।

(३) दिनांक २ सिंतबर २०१४ को मदनपल्ली इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी एण्ड साइन्स-मदनपल्ली के अंग्रेजी विभाग में आयोजित (BOS) सभा में सदस्य रहे ।

डॉ. आर. दीप्ता

(१) दिनांक २५ और २६ मार्च २०१५ को केन्द्रीय विद्यालय-१, तिरुपति और केन्द्रीय विद्यालय वेंकटगिरि- KV No.1, तिरुपति के अंशकालिक अध्यापकों की चयन समिति के सदस्य के रूप में रहे ।

(२) २०१४ सिंतबर १५ से १७ तक कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय-बेंगलोर में "संस्कृत साहित्य में महिला की भूमिका" नामक विषयपर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किये गये ।

(३) दिनांक ७ और ८ जनवरी २०१५ को श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय - तिरुपति में "अंग्रेजी में उदीयमान साहित्य" नामक विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

(४) दिनांक ७ और ८ जनवरी २०१५ को श्रीपद्मावती महिला विश्वविद्यालय-तिरुपति में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र के अध्यक्ष स्थान ग्रहण किये थे ।

(५) दिनांक ५ मार्च २०१५ को श्रीवेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय तिरुपति में आयोजित अंग्रेजी कार्यशाला में विशेष अतिथि के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किये थे ।

(६) दिनांक दिसंबर २०१४ को अंतर्राष्ट्रीय पत्र एशिया-पशिफिक-समाजशास्त्र में एक लेख प्रकशित हुआ जो ISSN नंबर 2229-5801

डॉ. डी. नल्लन्ना

(१) दिनांक १३ जून २०१४ को "श्री मदान्ध्र भागवत में मानवीय मूल्य" नामक शोध सामग्री संकलन के लिए श्रीकृष्णदेवराय विश्वविद्यालय-अनंतपुरम् के तेलुगु विभाग में गये ।

(२) दिनांक १ जनवरी २०१५ को प्रमुख शोध प्रायोजन कार्यक्रम के अंतर्गत "श्री मदान्ध्र भागवत में मानवीय मूल्य" नामक शोध सामग्री संकलन के लिए तेलंगाणा विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग का दर्शन ।

(३) दिनांक २६ दिसंबर २०१४ को प्रमुख यू.जी.सी. शोध प्रायोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री मदान्ध्र भागवत में मानवीय मूल्य नामक शोध सामग्री संकलन के लिए दक्षिण प्रान्तीय भाषाओं का केन्द्र, मानस गंगोत्री-मैसूर का दर्शन और वहाँ के अध्यापकों से मुलाकात हुई ।

(४) दिनांक ४ और ५ दिसंबर २०१४ को मुख्य शोध प्रायोजन कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमधान्ध्र भागवत में मानवीय मूल्य नामक शोध सामग्री संकलन के लिए श्रीपोट्टिश्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय राजमन्ड्री (प्रांगण) के साहित्यपीठम्, पुस्तकालय का दर्शन ।

डॉ. वाई. विजय लक्ष्मी

(१) दिनांक ११ और १२ दिसंबर २०१४ को प्राच्य महाविद्यालय से संम्बद्ध श्री वेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय-तिरुपति में बी.ए.ओ.एल (BAOL) कोर्स के लिए सदस्य के रूप में रहे ।

(२) दिनांक २४ फरवरी २०१५ को सरकारी महिला महाविद्यालय-श्रीकालहस्ती के तेलुगु विभाग में आयोजित यू.जी.सी. राष्ट्रीय संगोष्ठी में आधुनिक साहित्य में बालकों की समस्याओं का चित्रण नामक शीर्षक पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

डॉ. टी. लता मंगेश

(१) दिनांक २५ और २६ मार्च २०१५ को केन्द्रीय विद्यालय - १, तिरुपति और केन्द्रीय विद्यालय वेंकटगिरि के अंशकालिक अध्यापकों की नियुक्ति के लिए आयोजित साक्षात्कार समिति के सदस्य रहे ।

(२) दिनांक ११ और १२ दिसंबर २०१४ को श्री वेंकटेश्वर वेद विश्वविद्यालय-तिरुपति से सम्बद्ध प्राच्य महाविद्यालय के बी.ए.ओ.एल. (BAOL) कोर्स के लिए हिन्दी विषय के सदस्य के रूप में रहे ।

डॉ. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल

(१) २०१४ अक्तूबर १४ से १६ तक पांडिचेरी या पुद्दिचेरी में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में उपस्थित रहे ।

(२) दिनांक १८ जुलाई २०१४ को श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडी के संस्कृत विभाग में आयोजित पी.एच.डी.की मौखिकी में पधारें ।

(३) २०१४ सितंबर ८ से १३ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान-एकलव्य काम्पस अगर्तला में आयोजित कार्यशाला में भाग लेकर व्याख्यान प्रस्तुत किये ।

डॉ. सोमनाथ दास

(१) नवंबर १६ से २३, २०१४ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान पुस्तकालय, श्रीसदाशिव कॉम्पस, पुरी का दर्शन।

प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा

(१) २०१५ जनवरी २७ से २ फरवरी २०१५ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मुंबई में आयोजित २०१४ वार्षिक शिक्षाशास्त्री प्रायोगिक परीक्षाओं में बाह्य परीक्षक के रूप में रहे ।

प्रो. रजनीकान्त शुक्ल

(१) २०१४ जून १७ से २४ जून २०१४ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान-नईदिल्ली में आयोजित गोपनीय परीक्षाओँ के परीक्षक के रूप में रहे ।

प्रो. पी. वेंकट राव

(१) २०१५ जनवरी १८ से २५ जनवरी २०१५ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान-त्रिस्सूर केरल में आयोजित शिक्षा शास्त्री प्रायोगिक परीक्षाओं के बाह्य परीक्षक के रूप में कार्य किये ।

डॉ. राधागोविन्द त्रिपाठी

(१) २५ मई २०१५ से २७ मई २०१५ तक श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय-श्रीविहार, पुरी, ओडिस्सा में एस.एस.ई.टी. (SSET-2015) की सभा में भाग लिये ।

(२) १ सितंबर २०१४ से ४ सितंबर २०१४ तक ओडिस्सा चेयर और राष्ट्रीय संस्कृतविद्यापीठ तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में जगन्नाथ संस्कृत सुरक्षा वाहिनी के जगन्नाथ मंदिर के प्रांगण में, हाउज, खास-नईदिल्ली द्वारा भगवान जगन्नाथ से संबंधित १२ उत्सवों पर एक प्रपत्र प्रस्तुत किये ।

डॉ. आर. चन्द्रशेखर

(१) दिनांक २६ फरवरी २०१५ और २७ फरवरी २०१५ को श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वविद्यालय-काँचीपुरम् में बी.एड.संस्कृत प्रायोगिक परीक्षाओं का आयोजन ।

(२) ९ फरवरी २०१५ से १७ फरवरी २०१५ तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्रृंगेरी में आयोजित शिक्षा शास्त्र प्रायोगिक परीक्षाओं के बाह्य परीक्षक के रूप में कार्य किये ।

(३) दिनांक ११ और १२ दिसंबर २०१४ को श्रीवेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय-तिरुपति से प्राच्य महाविद्यालय के बी.ए.ओ.एल. (BAOL) कोर्स केलिए संस्कृत विषय के सदस्य के रूप में रहे ।

डॉ. ए. सच्चिदानन्दमूर्ति

(१) दिनांक १३ फरवरी २०१४ को एस. के. आर (S.K.R.) सरकारी महाविद्यालय (महिला) कडपा में संस्कृत साहित्य में शिक्षा और मानवीय मूल्य नामक विषय पर अतिथि भाषण प्रस्तुत किये ।

(२) दिनांक १ नवंबर २०१४ को श्रीचन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वमहाविद्यालय काँचीपुरम् में बी.एड.के छात्रों के लिए संस्कृत-शिक्षण पद्धति पर भाषण दिये ।

श्री बी. चन्द्रशेखरम्

(१) संस्कृत टेष्ट टू स्पीच् सिन्थेसिस-२०१४ नामक विषय पर श्रीवेकंटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति की और से पी.एच.डी. की उपाधि मिली ।

IV . विशेष कार्यक्रम

(अ) संस्कृत सप्ताह समारोह (5 से 11 अगस्त 2014 तक) -

पिछले वर्षों के जैसे, भगवान श्री वेंकटेश्वर की कृपा से इस वर्ष भी राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में दिनांक 5.8.2014 से 11.8.2014 संस्कृत सप्ताह समारोह, श्रावण पूर्णिमा के शुद्ध दिन पर मानव विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशन भव्य महोत्सव मनाया गया ।

उद्घाटन समारोह महोत्सव - 5.8.2014

विद्यापीठ के दर्शकों से भरे इंडोर स्टेडियम में बहुत ही भव्यता के साथ समारोह का उद्घाटन किया गया । इस शुभ अवसर पर विद्वान, छात्र, कलाकार, मीडिया सदस्य और विद्यापीट के कर्मचारी भी उपस्थित थे ।

स्वागत भाषण

प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति एक लोकप्रिय कवि और विद्वान ने अपने स्वागत भाषण में दिन बदिन संस्कृत साहित्य अतुलनीय प्रभाव से प्रभावित कर रही है और उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृत साहित्य में भारत के महान संतों द्वारा दिया गया पूरा ज्ञान निक्षिप्त है ।

प्रो. के.ई. देवनाथन - मुख्य अतिथि :

प्रो. के.ई. देवनाथन, कुलपति, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे । प्रो. देवनाथन ने संस्कृत को भारतीयों के जीवन माना है । संस्कृत और संस्कृति के अभाव में मनुष्य का भविष्य अंधेरा होता है । संस्कृत शिक्षा सार्वभौमिक मूल्य का होता है । इसीलिए संस्कृत के पंडित संस्कृत में छिपे ज्ञान रूपी खजाना को संरक्षण को अपनी बडी जिम्मेदारी मानते हैं । संस्कृत शिक्षा से सभी के दिलों शुद्ध और निर्मल बना सकते हैं ।

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी - अध्यक्ष

महामहोपाध्याय प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, माननीय कुलपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा विद्वानों की तथा सभा की प्रशंसा को जीता । उनके अमूल्य भाषण संस्कृत छात्रों को बहुत ही लाभान्वित किया था । उन्होंने संस्कृत समुदाय के सभी सदस्यों के जीवन को संस्कृत की भावना से भर कर अमर बनाने के लिए कहा । वैयाकरण पतंजलि के समर्पण और श्रद्धा के कारण हम वैशविक नागरिकों पर विचार कर सकते हैं । डा. राणी सदाशिव मूर्ति, समन्वयक ने संस्कृत सप्ताह समारोह को उद्घाटन सत्र की तुलना किया -

सप्ताहिक समारोह के हिस्से के रूप में भजन संध्या आध्यात्मिक - ऊर्जा ; विद्यापीठ की छात्रों के लिए आयोजित किया गया । गीत गान स्पर्धा, रस प्रश्न, श्लोक अंत्याक्षरी, आशुभाषण, स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के छात्रों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था । स्कूल स्तर श्लोकगीत प्रतियोगिता, स्कूल और कॉलेज स्तर छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी, राष्ट्रीय संगोष्ठी, संस्कृत कवितागोष्ठी, रस संध्या, शास्त्र विनोद एवं पुराण प्रवचनों का आयोजन किया गया ।

दिनांक 11.8.2014 को समापन समारोह मनाया गया । डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, साहित्य के सह आचार्य और साप्ताहिक समारोह के समन्वयक ने समारोह के सफल संपन्न के लिए सतत प्रयास किया ।

आ) स्वतन्त्रता दिवस समारोह

15 अगस्त , 2014 को सुबह 8.15 बजे विद्यापीठ में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया । विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने ध्वज फहराकर सभी को संबोधीत करते हुए भाषण दिया । उन्होंने अपने भाषण में त्री-रंगों का महत्त्व बताते हुए कई शहीदों के विचारों का अवलोकन किया । उन्होंने सभी संस्कृत विद्वानों से निवेदन किया कि इस संस्था के लिए कुछ नया कर दिखाए ।

शैक्षिक संकाय अधिष्ठाता, प्रो. आ.के. ठाकुर, कई संकाय अधिष्ठाताओं, कुलसचिव प्रो. सी उमाशंकर, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी और विद्यापीठ के छात्र इस समारोह में उपस्थित थे ।

इ) हिंदी दिवस समारोह

दिनांक 14 सितंबर 2014 विद्यापीठ में हिंदी दिवस का उद्घाटन प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, रा.सं. विद्यापीठ तिरुपति द्वारा किया गया । प्रो. एच.के. शतपथी जी समारोह की अध्यक्षता की । इस अवसर पर 15 दिनों पखवाडा का योजन भी किया गया था । इस उपलक्ष्य पर आयोजित भाषण, निबंध, हिंदी गायन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों पुरस्कृत किया गया ।

डॉ. टी. लतामंगेश, सहायक आचार्या, हिंदी विभाग समारोह में स्वागत तथा धन्यवाद भाषण दिया ।

ई) गणतन्त्र दिवस -

दिनांक 26 जनवरी, 2015 के सुबह 8.15 बजे विद्यापीठ में गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया था। कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने ध्वज फहराकर उपस्थित सभी को संबोधित कर भाषण दिए । शैक्षिक संकाय अधिष्ठाता प्रो. आर.के. ठाकुर, कई संकाय अधिष्ठाताओं, कुलसचिव प्रो. सी. उमाशंकर, शिक्षक - शिक्षकेतर कर्मचारी और विद्यापीठ के छात्रों ने इस समारोह में भाग लिए था।

उ) अम्बेडकर जयंती

124 जन्मदिन समारोह के अवसर पर दिनांक 14 अप्रैल 2014 को डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयंती को राष्ट्रयी संस्कृत विद्यापीठ ने धूम धाम से मनाया था । प्रो. सी. उमाशंकर, कुलसचिव, मुख्य अतिथि और कर्मचारियों ने डॉ. अम्बेडकर के तस्वीर को माल्यार्पण किया था । समारोह के मुख्य अतिथि ने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर द्वारा लिखित संविधान आदर्शवादी प्रकृति को दर्शाता है तथा समाज में शांति और सद्भाव स्थापित करने में सहायक होता है । इस कार्यक्रम में प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति उपचारात्मक कोचिंग सेंटर के समन्वयक हर किसी को समान न्याय के लिए प्रयास करने के लिए कहा तथा छात्रों से अनुरोध किया कि यह सब केवल शिक्षा, अच्छे व्यवहार और विचारों की मदद से प्राप्त किया जा सकता है । डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयंती के अवसर पर विद्यापीठ के छात्रों के लिए भाषण, निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, समारोह के अंतिम पडाव पर विद्यापीठ के कुल सचिव द्वारा पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया ।

ऊ) नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्रों का प्रतिभा उत्सव -

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी तथा कुलसचिव प्रो.. सी. उमाशंकर, के देख रेख में दिनांक 27-30 जनवरी, 2015 तक नवीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव का आयोजन किया था । डॉ. सी. रंगनाथन वाग्वर्धिनी परिषद के समन्वयक समारोह के संयोजक और डॉ. भरत भूषण रथ, वाग्वर्धिनी परिषद के सह समन्वयक समारोह के सह संयोजक थे । समारोह को संचालन की सुविधा के लिए शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों के विभिन्न समितियों का गठन किया गया । भारत भर से 20 टीम समारोह में भाग लेने के लिए आए थे । इस अवसर पर शेवलियर अवार्डि महामहोपाध्याय प्रो. एन.एस. रामानुज ताताचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रथम कुलपति उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे । समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. वी.आर. पंचमुखी पूर्व कुलाधिपति, राष्ट्रीय संस्कडत विद्यापीठ, तिरुपति थे । श्री प्रताप चंद्र साडंगी, अमृतवाणी सेवा प्रतिष्ठानम के अध्यक्ष एवं प्रो. के.ई. देवनाथन, कुलपति, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति समापन समारोह के सम्माननीय अतिथि थे ।

चार दिन के इस प्रतिभा महोत्सव 2015 में निम्न संस्थान भाग लिए थे -

प्रतिभागी संस्थायाँ :

1. श्री सूर्यपुर संस्कृत महाविदद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
2. दर्शनम संस्कृत महाविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
3. ब्रह्मर्षि संस्कृत महाविद्यालय, दकोर रोड, नदीयद, गुजरात
4. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, राजीव गाँधी परिसर, शृंगेरी, कर्नाटक
5. एस.एम.एस.पी. संस्कृत स्नातक स्नातकोत्तर अध्ययन केन्द्रम, उडुपी, कर्नाटक
6. पूर्णप्रज्ञा विद्यापीठ, बंगलूरु, कर्नाटक
7. कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विदद्यालय, रामटेक, महाराष्ट्रा
8. पुने विश्वविद्यालय, पुने, महाराष्ट्रा ।
9. श्री लाल बहादूर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराई, नई दिल्ली.
10. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री सदाशिव परिसर, पुरी, ओडिशा ।
11. श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वति विश्व महाविद्यालय, एनत्तुर, काँचीपुरम्, तमिलनाडु
12. श्री अहोबिल मठ संस्कृत कॉलेज, मधुरान्तकम ।
13. कालियाचौक बी.के.ए. किशोर संस्कृत महाविद्यालय,पश्चिम बंगाल ।
14. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर ।
15. श्री रंगलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बृंदावन, मथुरा, उत्तरप्रदेश ।
16. संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

17. कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बंगलूर, कर्नाटक
18. श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
19. श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्रप्रदेश
20. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आंध्रप्रदेश

दिनांक 27 जनवरी 2015 10 बजे महोत्सव का उद्घाटन महामहोपाध्याय, शेवलियर सम्मान से सम्मानित प्रो. एन.एस. रामानुज ताताचार्य, आर.एस. विद्यापीठ के प्रथम कुलपति द्वारा किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य अतिथि ने प्रतियोगियों को प्रभावित किया तथा संस्कृत शास्त्र में छिपे महत्वपूर्ण अंशों पर प्रकाश डाला. प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति समारोह की अध्यक्षता की । अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्हों ने संस्कृत वक्तृत्व कौशल को विकसित करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया । प्रो. राधाकांत ठाकुर, सैक्षिक संकाय प्रमुख गणमाणय अतिथियों, प्रतिभागी दलों एवं निर्णायक गणों का स्वागत किया था । डॉ. सी. रंगनाथन, वाग्वर्धिनी परिषद के समन्वयक ने समारोह के मुख्य लक्ष्य और उद्देश्यों का विवरण दिया था । प्रो. सी. उमाशंकर, कुलसचिव समारोह में उपस्थित थे । डॉ. भरत भूषण रथ, सह समन्लवयक ने धन्यवाद समर्पण किया था ।

दिनांक 30 जनवरी 2015 को समापन समारोह का आयोजन किया गया । डॉ. वी.आर. पंचमुखी, राष्ट्रीयसंस्कृत विद्यापीठ के पूर्व कुलाधिपति समारोह के मुख्य अतिथि थे । श्री प्रताप सारंगी, अमृतवाणी सेवा प्रतिष्ठानम के अध्यक्ष, सम्माननीय अतिथि ने छात्रों के मूल्यवान संदेश को दिया था । प्रो. के.ई. देवनाथन, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति समापन समारोह के सारस्वत अतिथि थे । डॉ. सी. रंगनाथन, समन्वयक कार्यक्रम का विवरणात्मक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था । गण माण्य अतिथियों ने विजेताओं पुरस्कार वितरित किया था। प्रथम पुरस्कार विजेता का स्वर्ण पदक, रु. 1000/- एवं प्रमाण पत्र, द्वितीय पुरस्कार विजेता को रजत पदक - रु.750/- एवं प्रमाणपत्र, तृतीय पुरस्कार विजेता को कांस्य पदक - रु.250/- एवं प्रमाणपत्र वितरित किया गया था। प्रो. हरेकृषख्ण शतपथी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कलपति समारोह की अध्यक्षता की थी । इस बार रोलिंग शील्ड राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, राजीवगाँधी परिसर, शृंगेरी के छात्रों ने जीता । डॉ. भरत भूषण रथ सह समन्वयक ने धन्यवाद समर्पण किया था ।

ऋ) गण्यमान्यों की भेंट :

कई गणमान्य व्यक्तियों, शिक्षाविदों, प्रख्यात संस्कृत विद्वान और देश विभिन्न भागों से शैक्षिक, प्रशासनिक, पाठ्यक्रम तथा सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के संबंध में विश्वविद्यालय का दौरा किया ।

क) अन्नदानम परियोजना :

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के पुराने छात्र एवं शिक्षक संघ वालों ने यह निर्णय लिया कि देश के कोने-कोने से अध्ययन हेतु आए गरीब एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को विद्यापीठ के छात्रावासों में मुफ्त रूप से खाना देना। इससे उनकी पढाई के लिए मन चिंता मुक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त रखरखाव के लिए अन्य आवर्ती अनुदान रु. 50 लाख

है । करीब 2061 छात्र विद्यापीठ में देश के अलग-अलग इलाके से आए रहते हैं। तकरीबन 1573 छात्र विद्यापीठ के हॉस्टलों में रहकर इस मुफ्त खाने का उपयोग लेंगे। इस संघ के विद्वानों, प्रोफेसरों, प्राचार्यों, शिक्षकों एवं अधिकारियों आदि आकर अन्नदानम् परियोजना व्यवस्था में बडे उदार मन से चावल और रूपये देने का निर्णय लिए हैं।

साथ ही तिरुमल देवस्थानम, तिरुपति ने 15 लाख रूपये का दान किया है। यह आवर्ती अनुदान बच्चों को कम खर्चे में बोजन देने के लिए दिया गया है। इस कम खर्चे का भोजन का उद्घाटन दिनांक 29 जुलाई, 2008 को माननीय कुलाधिपति जी ने किया है।

संकायकों के पुरस्कार एवं सम्मानन

(1) प्रो. के.ई. देवनाथन, विशिष्टाद्वैत वेदांत के प्रोफेसर, वर्तमान में श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय तिरुपति के कुलपति के रूप में प्रतिनियुक्त, आंध्रप्रदेश, तिरुचानूर के पौलरम शेषभट्टार ट्रस्ट ने ''शास्त्र रत्नम'' उपाधि से सम्मानित किया ।

(2) श्रीनिधि स्वामी जयंती समारोह के शुभ अवसर पर विल्लूर आशुकवि ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा प्रो. आर.के. ठाकुर, ज्योतिष्य के प्रोफेसर को ''कविकलाभा'' उपाधि एवं रु. 5000/- नकद से सम्मानित किया था ।

(3) प्रो. विष्णुभट्टाचार्युलु, आगम के प्रोफेसर को वैखानस पडित मण्डली द्वारा हिंदू धर्म प्रचार परिषद, टी.टी.डी, तिरुपति द्वारा आओडिजित सभा में ''वैखानस सार्वभौम'' उपाधि से सम्मानित किया गया ।

(4) श्री निधि स्वामी जयंती समारोह के शुभ अवसर पर विल्लूर आशुकवि ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा प्रो. सत्यनारायण आचार्य, साहित्य के प्रोफेसर को ''कविकलाभा'' उपाधि एवं रु. 5000/- नकद से सम्मानित किया था ।

(5) डॉ. चक्रवर्ती रंगनाथन, सह आचार्य, साहित्य विभाग को पौलरम शेषभट्टार ट्रस्ट ने ''दिव्यप्रबंध रत्नम'' उपाधि से सम्मानित किया ।

(6) डॉ. के. गणपति भट्ट, अद्वैत वेदांत के सह आचार्य, पौलरम शेषभट्टार ट्रस्ट, तिरुचानार द्वारा ''ज्योतिष रत्नम'' उपाधि से सम्मानित किया गया।

(7) डॉ. एस.आर. शरण्यकुमार, सह आचार्य, इतिहास विभाग मद्रास अध्यक्षता में चित्तूर शहर में प्राथमिक शिक्षा'' शोध पत्र को अछ्छे प्रपत्र के रूप में चुना तथा अंतराष्ट्रीय इतिहास जर्नल और अनुसंधान (आई.जे.एस.आर.) में प्रकाशित किया ।

(8) डा. सोमनाथ दास, अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग के सहायक आचार्य को विल्लूर आशुकवि ट्रस्ट, चेन्नई ने ''कविशार्दूला'' उपाधि के साथ रु. 12,500/- नकद से सम्मानित किया गया ।

V. परियोजनाएँ

अ. पारंपरिक शास्त्रार्थ विषय के संबंध में उत्कृष्टता केंद्र

प्रस्तावना -

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, अपने आप में एक अलग पहचान रखता हैं। इस संस्था का मूल उद्देश्य देश में अच्छे व्यक्तित्व और अच्छे नागरिकों को निर्माण करना तथा शास्त्र-संस्कृति ते उनको ज्ञानार्जन करवाना साथ ही साथ उसका विकास करवाना है। यह संस्कृत भाषा सभी को एकता में जोडनेवाली एक मजबूत कडी है। इसलिए इसकी राष्ट्रीय संस्कृति चारों तरफ छलकती है।

विद्यापीठ की स्थापना आंध्रप्रेदश तिरुपति में भगवान श्री वेंकटेश्वर के छत्र छाया में सन 1961 में शिक्षा विभाग, भारत सरकार द्वारा की गयी थी। सन् 1987 में विद्यापीठ को भारत सरकार ने संस्कृत प्रचार प्रसार हेतु संपूर्ण रूप से मानित विश्वविद्यालय के नाम पर घोषित कर दिया था। विद्यापीठ ने निम्नलिखित प्रमुख गतिविधियों को शुरू किया है-

1. संस्कृतभाषा और साहित्य, शास्त्रों के शिक्षण
2. अनुसंधान और प्रकाशन
3. नवाचारी परियोजनाएँ
4. संग्रह और पांडुलिपियों का संरक्षण
5. विस्तार कार्यकलापों

उत्कृष्टता केंद्र के संबंध में -

सन् 2002 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- नई दिल्ली ने विद्यापीठ में पारंपरिक शास्त्रों के अंतर्गत संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार हेतु उत्कृष्टा केंद्र की अनुमति दी गई थी। इसके संबंध में ३ करोड मंजूर की गई और उसके अंतर्गत शास्त्रार्थ संबंध में कई परियोजनायाँ का आरंभ राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में किया गया है।

उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत कई परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं, वे सभी काफी महत्वपूर्ण कार्यों में अपना काम जारी रखे हुये हैं। इस योजना के अंतर्गत 13 कार्यक्रमों को लागू किया गया। यह कार्यक्रम तेजी से लुप्त होती पारंपरिक संस्कृत सीखने को अतः पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से, तथा आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए संस्कृत शिक्षण/अध्ययन प्रक्रिया पांडुलिपि उपकरण आदि बनाने के लिए किया गया है।

पारंपरिक शास्त्रार्थ विषय से संबंधित में उत्कृष्टता केंद्र

चरण - II

दूसरा और तीसरा हप्ता अगस्त 2007 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के उत्कृष्टता केंद्र के पारंपरिक शास्त्रों संबंध

में जांच- पडताल समिति ने निरीक्षण कर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सूचित करते ही वह उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत ग्यारह वी योजना में 3.00 करोड रुपये की मंजूरी दी है। इस परियोजना की कार्य-सूची निम्न है। संबंधित पत्र संख्या 18/2002 (एन.एस./पी.ई) दिनांक 8 अक्तूबर, 2008.

प्राप्त परियोजना

1. शास्त्रवारिधि
2. प्रकाशन
3. आडियो और विडियो प्रलेखीकरण
4. आडियो - विडियो रिकार्ड केंद्र का निर्माण
5. लिपि विकास प्रदर्शिनी
6. प्राचीन पांडुलिपि अध्ययन के ईलेक्ट्रानिक साधन
7. संस्कृत स्वयं अध्ययन कीट्स
8. प्रलेखीकरण अर्टफ्याक्ट्स
9. पांडुलिपियों का डिजिटिलैजेशन
10. योग, दबाव प्रबंध एवं हेलिंग केंद्र
11. संगोष्ठीयाँ/कार्यशालाएँ
12. कंप्यूटर विज्ञान और संस्कृत भाषा तकनालजी में स्नातकोत्तर सेतु पाठ्यक्रम

योजना के निर्णय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस योजना संबंधित विद्यापीठ के कुलपति जी ने समस्त संकाय प्रमुखों, विभाग के अध्यक्षों, अधिकारियों, संयोजनाधिकारियों और अन्य उत्कृष्टता केंद्र से संबंधितों को दिनांक 30 अक्तूबर 2008 शाम 4.00 बजे बधाई देते हुए उनसे निवेदन किए कि समिति के सभी सदस्यों ने उसे देखकर वित्तिय वर्ष के तदत सभी प्राध्यापकों को परियोजना के लिए प्रस्ताव रख कर मंजूरी लेने के लिए बताये। इसके संबंधित दिनांक 10.11.2008 सुबह 10.30 बजे कुलपति जी के अध्यक्षता में सह-समिति बैठक बुलाया गया था। माननीय कुलपति जी ने सभी सदस्यों को सराहते हुए वित्तीय वर्ष के तदत सभी प्राध्यापकों को परियोजना के लिए प्रस्ताव रख कर मंजूरी लेने के लिए बताया। उसके लिए एक एक्शन योजना भी उन्होंने तैयार की है। ग्याहवी योजना के अंतर्गत उत्कृष्टता केंद्र द्वारा चलाए - जानेवाले चरण - II के कार्यक्रमों की सूची निम्न रूप से बनाई गई है।

आ. उत्कलपीठ :

उडिसा सरकार ने बीज अनुदान के रूप में रु. ५० लाख के साथ विद्यापीठ में उत्कल पीठ की स्थापन की गयी । भगवान जगन्नाथ के प्रकाशनों श्री चैतन्य महाप्रभु और कवि श्री जयदेव द्वारा किए गए योगदान को उजागर करने, गहन और व्यापक अनुसंधान के लिए उत्कल पीठ की स्थापना हुई थी । दिनांक १४ अक्टूबर २००० को

न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्रा, भारत के पूर्व न्यायाधीश एवं केंद्रीय संस्कृत बोर्ज के अध्यक्ष ने औपचारिक रूप से उद्घाटन किया ।

उत्कल पीठ के प्रचार एवं संरक्षण हेतु उत्कल पीठ कई अनुसंधान गतिविधियों का आयोजन कर रहा है ।

(1) श्री जगन्नाथ सुरक्षा वाहिनी, पुरी, हॉऊस खास, जगन्नाथ मंदिर, नईदिल्ली के सहयोग से उत्सल पीठ ने दिनांक 31 अक्टूबर और 1 नवंबर को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । श्री धर्मेन्द्र प्रधान, माननीय मंत्री (स्वतंत्र होता) भारत सरकार, नईदिल्ली ने द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया । और प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति ने समारोह की अध्यक्षता की । इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में गणमान्य विद्वान और जगन्नाथ संस्कृति के प्रेमी भी भाग लिए थे । आर.एस. विद्यीपठ के प्रख्यात विद्वान, तिरुपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नईदिल्ली, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कलाकेंद्र, नई दिल्ली और श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी एवं श्री जगन्नाथ सरक्षा वाहिनी, पुरी ने भगवान जगन्ना के 12 त्योहारों पर प्रपत्र प्रस्तुत किए थे । धिकतर विद्वान संस्कृत में प्रपत्र प्रस्तुत किए थे और कुछ अंग्रेजी में भी प्रपत्र प्रस्तुत किए थे । दो दिनों के दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी जो 12 महत्वपूर्ण त्योहारों का एक फोटो प्रदर्शिनी प्रदर्शित किया गया । यह माननीय मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान को बहुत प्रभावित किया था । और उन्होंने प्रदर्शिनी पर कुछ सुझाव भी दिए थे ।

(2) श्री जगन्नाथ संस्कृति पर पूरे संस्कृत कार्य का दूसरा वाल्युम उत्कलपीठ की ओर से प्रकाशन के लिए तैयार है।

(3) आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा ''सदाविशायक संग्रह'' उत्कलपीठ प्रकाशन के लिए प्रस्तुत किया है ।

(4) भगवान जगन्नाथ पर विशेष ग्रंथ विशेष संस्करण तैयार है ।

(5) भगवान जगन्नाथ अनुसंधान कार्य का एक ग्रंथ सूची तैयार है ।

(6) उत्कल पीठ द्वारा जयदेव साहित्य का एक विशेष संस्करण प्रकाशन के लिए तैयार है ।

इ. सॉप (विशेष सहायक कार्यक्रम)

विद्यापीठ यु.जी.सी. सॉप के तहत तीन विभागों के लिए युजीसी समर्थन प्राप्त करने का अनुठा गौख प्राप्त हुआ है । वे साहित्य विभाग, शिक्षा विभाग और दर्शन विभाग है ।

(i) साहित्य विभाग :

दिनांक 1.4.2013 से 31.3.2018 की पाँच साल की अविधि के लिए डी.आर.एस. द्वितीय के लिए डी.आर.एस. (साहित्य) के उन्नयन को मंजूरी दी है । ''भरत के समय से संस्कृत काव्यशास्त्र में तकनीकी शब्दों के विश्वकोश'' । डी.आर.एस. द्वितीय सॉप है । रु. 31 लाख तथा दो प्रोजेक्ट फैलोस को दिया गया था । प्रो. सी. ललिताराणी समन्वयक और डा. के. राजगोपालन सह समन्वयक हैं ।

(ii) शिक्षा विभाग :

यु.जी.सी. विशेष सहायता काय्रक्रम (डी.आर.एस. 1) 2009-2014 यु.जी.सी. ने शिक्षा विभाग को विशेष सहायता कार्यक्रम के तहत रु. 29.50 लाख तथा दो प्रोजेक्ट फेलोस को दिया गया । शिक्षा विभाग अपने कार्य, शैक्षिक उपलब्धि और व्यवहार्य क्षमता के आधार पर सॉप की मंजूरी दी गयी । अनुसंधान के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षण एवं अनुसंधान का एक संयोजन कार्य है । यह यु.जी.सी. द्वारा शिक्षा विभाग को विशेष सहायता पाँच साल की अवधि के लिए है । इस कार्यक्रम के तहत ''भाषा के विकास और सामग्री उत्पादन'' है । **यु.जी.सी. विशेष सहायता कार्यक्रम (डी.आर.एस. 2) 20015-2020** यु.जी.सी.अपनी विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस. द्वितीय के तहत विद्यीपठ के शिक्षा विभाग को रु. 97.50 लाख मंजूर किया गया । शिक्षा विभाग विकास के लिए अपने कार्य, शैक्षणिक उपलब्धि और व्यवहार्य क्षमता के आधार पर सॉप को मंजूर किया गया । शिक्षा विभाग को यह पाँच साल की अवधि के लिए किया गया ।

(iii) दर्शन विभाग :

प्रतिष्ठित विशेष सहायता कार्यक्रम राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के दर्शन विभाग की मंजूरी विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दी गई । गंगेश उपाध्याय की तत्व चिंतामणि पर टिप्पणियाँ और उपटीकाओं का महत्वपूर्ण सर्वेक्षण'' परियोजना शीर्षक है । प्रो. ओ.श्रीरामलाल शर्मा समन्वयक और प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपतकुमाराचार्युलु सह समन्वयक हैं । कार्य संतोष जनक है ।

ई . योगी नारेयणी परियोजना :

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने योगी नारेयणी दर्शन परियोजना को योगी नारेयणा दार्शनिक कार्यों को संस्कृत, हिंदी और तेलुगु भाषाओं में अनुवाद को गोकुल एजुकेशनल फाउंडेशन, कैवारं, कर्नाटक के समझौता के साथ परियोजना को शुरू किया गया । प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु समन्वयक है । कार्य प्रगति के लिए परियोजना अध्येता की नियुक्ति के लिए आवश्यक कदम लिया गया । दिनांक 16.12.2015 को रु. 4.68 लाख (तिमाही) की परियोजना को शुरु करने के लिए प्राप्त किया गया ।

उ . ई-पी.जी. पाठशाला

स्नातकोत्तर विषयों संस्कृत (व्याकरण में आचार्य) (ई-पी.जी. पाठशाला) के लिए ई सामग्री विकास के उत्पादन के बारे में एल.आर.एफ.1-9/2013 पत्र संख्या के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मंजूर किया गया था । रु. 11.2 लाख की 16 कागजातों प्रयोजन के लिए आवंटित किया गया था । प्रो. एस. सत्यनारायण मूर्ति, प्रोफेसर, व्याकरण विभाग को प्रधान अन्वेषक के रूप में नियुक्त किया गया था । प्रधान अन्वेषक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के बैठक में नईदिल्ली दिनांक 30.1.2015 भाग लेकर रु. 7.00 लाख को प्रथम किस्त रूप में प्राप्त किया गया था । परियोजना शुरू हो गया और सुचारू रूप से चल रहा है । प्रो. जे. रामकृष्ण और प्रो. आर.एल.एन.शास्त्री परियोजना के सह प्रधान अन्वेषक हैं ।

ई . प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएँ

1. 3 वर्ष की अवधी के लिए ''संस्कृत के बहु शब्द भाव निकालना'' शीर्षक परियोजना वि.अ.ए. द्वारा मंजूर की गई । प्रो. आर.जे. रमाश्री मुख्य अन्वेषिका है । 11,85,800/- की राशी मंजूर किया गया था और रुपये 7,16,800/- की राशी पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि का इंतजार है ।

2. दो वर्ष की अवधी के लिए ''श्रीमदांध्र भागवत में मानवीय मूल्य'' शीर्षक परियोजना वि.अ.ए. द्वारा मंजूर की गई । डा. नल्लन्ना प्रधान अन्वेषक हैं । रु 4,95,800/- मंजूर किया गया था और रुपये 3,57,500/- की राशि - पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

3. सामान्य अनुसंधान परियोजना :- दो वर्ष की अवधी के लिए ''कुछ गुणवत्ता आश्वासन पहलुओं की वेब डिजाईनिंग भारत विश्वविद्यालय वेब साइटों की विशेष संदर्भ में'' शीर्षक परियोजना मंजूर की गई । डा. जी. श्रीधर प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 1,80,000/- की राशि मंजूर किया गया था और रु. 1,20,000/- की राशी पहले किस्त के रूपमें जारी की गई । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

4. प्रमुख अनुसंधान परियोजना :- दो वर्ष की अवधी के लिए ''गीतगोविंद की नकल में लिखा अप्रकाशित राग काव्यों के महत्वपूर्ण संस्करण नामक परियोजना को मंजूर किया गया । डा. सोमनाथ दास प्रधान अन्वेषक हैं। रु. 5,49,100/- की राशी मंजूर किया गया था और रु. 3,21,100/- की रकम पहले किस्त के रूप में जारी किया गया । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की इंतजार है ।

5. ''भारत में संस्कृत पत्रिकाओं की प्रलेखीकरण'' शीर्षक से दो वर्ष की परियोजना मंजूर की गई । डा. जी. गोपालरेड्डी (सेवानिवृत्त) प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 5,69,300/- की राशि मंजूर किया गया था और रु. 3,32,800/- की राशी पहले किस्त के रूप में मंजूर की गई । रकम खर्च की जा चुकी है । और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

6. प्रमुख अनुसंधान परियोजना : - ''व्युत्पत्ति विषयक बहुभाषी शब्दकोष की तैयारी'' शीर्षक दो वर्ष की परियोजना मंजूर की गई थी । डा. के. सूर्यनारायण प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 10,00,000/- की राशि मंजूर किया गया था और रुपये 7,50,000/- की राशी पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि का इंतजार है ।

7. प्रमुख अनुसंधान परियोजना : - ''श्रीपति 11 वींशती की सिद्धांत शेखर भाग - 2 के अंगेजी अनुवाद संस्करण के साथ'' परियोजना मंजूर किया गया था । डा. ए. श्रीपाद भट्ट प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 95000+95000= 1,90,000/- जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की इंतजार है ।

VI. आधारिक संरचना

अ. ग्रंथालय :

विद्यापीठ ग्रंथालय की मुर्दित पुस्तक संग्रह 3,195 पुस्तकों जोडकर, 1,04,876 तक बढ़ गया। कुल पांडुलियों का संग्रह 8,022 शीर्षकों के साथ 3,919 तक बढ़ गया है । दिनांक 31.3.2015 के आँकडे के अनुसार एच मुलली शर्मा, शोधछात्र द्वारा डिजिटल के रूप में उपहार दिया गए 1 पांडुलिपि है। प्रो. वी.ए.स. विष्णुभट्टाचार्युलु, आगम विभाग के विभागाध्यक्ष, को 10 पांडुलिपियों (7 पाम पत्र पांडुलिपि, 3 पांडुलिपियों) को प्रात्प किया है ।ग्रंथालय हर साल 150 भारती पत्रिकाएँ और 4 विदेशी पत्रिकाओं की सदस्यता ले रही है । वर्ष के दौरान 28,565 पुस्तकों की लेन देन है ।

अब वि.अ.ए. इन्फ्लिब्नेट् कार्यक्रमों के सहारे यह विद्यापीठ का ग्रंथालय सारा गणकीकृत हो चुका है । अर्जन, क्याटलॉगींग और परिचालन अनुभाग सारा अपने - आप कार्य करता है । ओप्याक व्यवस्था को जनता के लिए रखा गया है। बारकोडिंग किताबों का कार्य सब समाप्त हो गया है ।

अलग-अलग विषयों के किताबें और पांडुलिपियाँ आदि सब ग्रंथालय में उपलब्ध हैं । वे निम्न हैं -

साहित्य, व्याकरण, श्रीमद्भगवद्गीता, वेदांत, अद्वैत वेदांत, विशिष्टाद्वैत वेदांत, द्वैत वेदांत, मीमांस, योग, साङ्ख्य, न्याय, वैशेषिक, उपनिषद, ज्योतिष, रामायण, महाभारत, भारतीय विज्ञान, गणितशास्त्र, कंप्यूटर विज्ञान, भारतीय धर्म, बुद्धीजम, जैनीजम्, अन्य धर्म वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, पाश्चात्य तत्त्वज्ञान, इन्डोलाजी, चरित्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, ग्रंथालय शास्त्र, आयुर्वेद, हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, तेलुगु साहित्य, कला और वास्तुशास्त्र, कानून्, अन्य विशेष (महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो आदि) सम्मेलन और स्मरणोत्सव खण्ड, प्रचलित क्याटलॉग् में पांडुलिपियाँ उपस्थित हैं।

ग्रंथालय का उपयोग करनेवाले :

विश्वविद्यालय ग्रंथालय ने 1500 सदस्यों को बनाया है । हर बार ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को यह ग्रंथालय बनाती है। कम- से - कम हर दिन पाँच सौ सदस्य - ग्रंथालय का उपयोग लेते हैं । और एक सौ लोग छुट्टियों में ।

स्वचलित ग्रंथालय :

वि.अ.ए. के सहारे इस ग्रंथालय को इन्फ्लिब्नेट् योजना के अंतर्गत स्वचालित बनाया गया है । इसलिए किताबों का हिसाब लेना-देना आदि सब स्वचालित है । ओप्याक (OPAC) आवश्यकताएँ सब फिलहाल उपयोगकर्ताओं को मौजूद हैं । स्वचलित पत्रिकाएँ और लेन-देन विभाग प्रगती में है । फोन-दूरभाष, ई-मेल आदि पर भी किताबों की जानकारी देने का कार्य प्रगती में है । ग्रंथालय में विद्वानों अध्यापकों, छात्रों को अंतर्जाल सुविधा भी दी गयी है ।

आ. छात्रावास :

चार छात्रावास छात्रों के लिए और तीन छात्राओं के लिए बनाया गया है । एक छात्रावास शोध छात्रों के लिए निर्मित किया गया।

छात्रों के छात्रावासों के नाम - शेषाचल, वेदाचल और गरुडाचल आदि प्राक्-शास्त्री से विद्यावारिधी तक हैं । दो अलग-अलग भोजन शाला और एक जुडा हुआ पाक गृह है। उनमें उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय भोजनों की सुविधा दी गई है । जिससे देश के अलग - अलग जगह से आए छात्र - छात्राओं को ज्यादा फायदा हो सके ।

नीलाचल छात्र वास नए भवन का नाम नीलाचल रखा गया है । इस में 150 छात्रों को रहने की सुविधा होगी।

'श्री पद्मावती महिला छात्रावास' लडकियों के लिए है । इसमें प्राक्-शास्त्री से विद्यावारिधी तक की लडकियाँ रहती हैं । अलग पाकगृह और भोजनशाला की सुविधा दी गयी है । यहाँ सुविधानुसार छात्रावास बनाने को सोचा जा रहा है ।

नये महिला छात्रावास को हाल ही में बनाकर आनेवाले छात्राओं को रहने की इंतजाम कर देने के लिए विद्यापीठ तैयार है । इसका खर्चा तकरीबन एक करोड रुपये तक आने की संभावना मानी जाती है । यहाँ कमसे कम 125 छात्राएँ रह सकती हैं।

सिंहाचल शोध छात्रावास - ग्यारहवें योजना के मुताबिक वि अ ए द्वारा शोध छात्रों के लिए स्वीकृती प्राप्त छात्रावास की निर्माण हो चुका है । यहाँ लगभग 125 छात्र रह सकते हैं ।

अतिथि गृह - इस वर्ष के दौरान अतिथि गृह में एक और मंजिल बनाया गया। लिफ्ट को भी व्यवस्थित किया गया।

वकुलाचल महिला छात्रावास :

वकुलाचला नाम से एक महिलाछात्रावास का निर्माण किया गया । जिस में २०० छात्र रह सकते हैं ।

इ. मन:शास्त्र प्रयोगालय :

इस मन:शास्त्र प्रयोगशाला को वैज्ञानिकता में छात्र प्रशिक्षणता को ध्यान में रखते हुए आई.ए.एस.ई. ने निर्माण किया है । यह शाला शिक्षा शास्त्री (बी.एड्.) और शिक्षाचार्य (एम्.एड्.) छात्रों को अत्यंत उपयोगी है ।

ई. बहु भाषा माध्यम प्रयोगालय :

यह बहु भाषा माध्यम प्रयोगालय संस्कृत और अंग्रेजी प्रशिक्षणार्थियों को सुविधाजनक है । 'संस्कृत भाषिका' नामक संस्कृत प्रक्रिया सामग्री फिलहाल तैयारी में है । इसे उच्चतर पर बनाने का विचार जारी है । इस प्रयोगशाला का उपयोग, भाषा सीखनेवालों, संस्कृत, सांस्कृतिक ज्ञानि आदियों को सुविधाजनक हों इसीलिए गणकीकृत बनाया जा रहा है ।

उ. वर्णानुसार गैलरी :

वर्णानुसार गैलरी (लिपि विकास प्रदर्शनी) का निर्माण 2003 में उत्कृष्टता परियोजना के अंतर्गत किया गया है । इस वर्णानुसार गैलरी को निर्माण करने का मकसद प्राचीन युग से वर्णों का विकास करना था । (3000 बी.सी.) अब प्रांतीय स्तर पर लिपि विकासित हो रही है । (9 वी सदी ए.डी.)

आरंभ से हिंद प्रांत के नागरिकों को भाषाई ज्ञान बडाने हेतु लिखना व पढाने के लिए आसान बनाने में डा. एस्.आर. राव जैसे ख्यात विज्ञानियों का योगदान है । प्रारंभ से हिंद लिपि का संबंध सेमेटिक लिपि से ही है । अवेस्तन और वैदिक संस्कृत भाषाएँ (फोनेटिक, सेमेटीक और व्याकरण) ऐसे बहुत सारे द्रवीडियन भाषाएँ (विद्वानों से परिचर्यात हैं) हरचानीगई ऋग्वेद के समय की कही जाती है ।

ऐतिहासिक काल से हिंद लिखावट अच्छी मानी गई है । खासकर जो लिपि मुद्रित होती हैं । ये मुद्रित हिंद लिपियाँ महत्वपूर्ण हैं । उनमें लोथा नामक पाश्चात्य भारतीय शोधकर्ता ने 1950-1980 में काम किया है । यह गैलरी भी मुद्रित करने में महेजोदाडो (पाकिस्तान) और कालिबंगान (भारत) साथ ही साथ प्राचीन पूर्वी भारतीय हिस्सा, जैसे कीस्स और बरगा, डा. (सुमेर-ईराक), हिस्सार तथा बहरेन । हिंद के मुद्रित माडल वैली, मुद्रा, स्कुलाचर, ब्रोंचस आदि को लोग अपनी जीवन में अपनाने लगे । और संस्कृत इतिहास को सीखने लगे । आज-कल वेदिक कन्सेप्ट और अध्यात्मीक समय को कितना हम जानते हैं; यह सोच पर निर्भर हैं ।

ऊ. प्रसारित अंतर्जाल सुविधा :

विद्यापीठ ने अपने कर्मचारियों एवं छात्रों को अंतर्जाल की सुविधा बनाए रखी है । यह सुविधा विद्यापीठ में प्रसारित के (के.बी.पी.एस.) डिसनेट और (256 के.बी.पी.एस.) नेट में दी है ।

अंतर्जाल : यह सुविधा यहाँ के शहरी हिसाब से चलती है ।

ऋ. कंप्यूटर केंद्र :

विद्यापीठ में उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर केंद्र है जो 300 से अधिक छात्रों की आवश्यकता पूरी कर सकता है । यह केंद्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सन् 1996 में मंजूर किया था । इसके मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

1. वेद, शास्त्र तथा आगम ग्रंथों का हैपर टेक्स्ट तैयार करना ।
2. वेद, शास्त्र, आगम के अमूल्य हस्तलिखित ग्रंथों के आलोचनात्मक संस्करण के लिए साफ्टवेर तैयार करना।
3. शोधार्थियों की सुविधा के लिए फ्लापी तथा सी.डी. में दुर्लभ ग्रंथों का संरक्षण करना ।
4. छात्रों, कर्मचारियों तथा पारंपरिक शोधार्थियों का कंप्यूटर से परिचय कराना ।
5. पाठ्यक्रम में कंप्यूटर विज्ञान/कंप्यूटर आप्लिकेशन जैसे विषयों का समावेश करना ।
6. कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा छात्रों को इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना । विद्यापीठ का वेबसाईट हैं **http://www.rsvidyapeetha.ac.in**

विशेष समिति को गणकीकृत केंद्र के बारे में वि.अ.ए. के सामने समजाकर वित्तीय खर्चा का विवरण देना है। उसके बाद विश्वविद्यालय प्रस्ताव बनाकर केंद्र के सामने रखेगी । अनुदानेतर 20,00,000/- (बीस लाख रुपये मात्र) में हार्डवेयर चीजों को खरीदना है । उसके बाद नेट वर्क संबंध में विश्वविद्यालय कंप्यूटर केंद्र सहीसलामत से बनाएगी। इसमें डा. आर.जे. रमाश्री, प्रवाचक, केंद्र का निरीक्षण करेंगी ।

ए. छात्र भोजन शाला :

'शेषाचल' छात्रवास में कम-से-कम 300 छात्रों के लिए भोजन शाला का प्रबंध किया गया है । यह एक बडी सुविधाजनक कार्यक्रम मानी जाती है । वेदाचल छात्रावास के बगल में ही ''आनंद बाजार'' नाम से एक नया छात्र भोजन शाला बनाया गया। लगभग 350 छात्र यहाँ भोजन ले सकते हैं। दिनांक 17 अक्टोबर 2011 को असम सरकार के माननीय राज्यपाल और सम्माननीय कुलाधिपति प्रज्ञान वाचस्पति डॉ जे.बी.पट्नायक जी ने ''आनंद बाजार'' का उद्घाटन किया।

ऐ. बहुविध व्यायाम शाला :

छात्रों के शारीरिक तंदुरुस्ती हेतु इस बहुविध व्यायाम शाला का विद्यापीठ में निर्माण किया गया है ।

यह बहुविध व्यायाम शाला के 16 केंद्र है -

कुल्हामांसपेशि : यह केंद्र कुल्हा, मांसपेशि को भी दोबारा विकास करता है । **ऊँचा चरखीदार :** यह नाडी युक्त मांसपेशि का विकास करता है । ऊँचापन, खांसी मांसपेशि, बाहें, चौडी छाती, कंधों को सुधार ने में ऊँची चरखीदार मदद करता है । जितना चाहे उतना तोलकर अपने कंधे के सहारे उठा सकते हैं । **उदर संबंधी बेंच :** यह साधन उदर संबंधी है । उदर के सहारे व्यक्ति जितना हो सके, उतना ही बोझा उठा सकता है । **भोरमुल यंत्र :** यह यंत्र बहुत ही उपयुक्त है । एक बार शरीर में ताजी हवा लेने लगे तो शरीर बडा तंदुरुस्त लगने लगता है। बडते तनाव को

रोकना : यह यंत्र शरीर के आगे और पीछे के हिस्से का विकास करवाता है । **मरोडना :** यह व्यायाम शरीर के मांसपेशियों में ताकत भरता है । एक तरह से पूरे शरीर को तोड-मरोड करवाता है । **बांहे, हृदयंगम छल्लेदार :** इस व्यायाम शरीर के घुटने, बाहें, हथेली, माथा, एल्बो आदि मांसों का विकास करने में मदद करता है। **पेक्क डेक्क :** यह तंदुरुस्त मांसोंवाला मनाता है । और मांस, हड्डी को विकास करवाता है। **छुबकीदार:** यह यंत्र के प्रकार से हुबकी लगाने जैसा होता है । इससे शरीर के अंग-अंग फूल उठता है । मांसों में भी विकास होता है । **पैर से दबाना :** यह दोनों पैरों से चलता है । घुटने और एडियों में ताकत भरने में मदद करता है । मांस में भी विकास करता है । **स्काऊट दबाव :** इसके सहारे घुटने की मांस एवं एडियों में जोर बरनेवाला होता है । **पुल्ल अप्स:** यह यंत्र अपनी तरफ ध्विंचने का होता है । यह बाहों, छाती आदि में चौडाई लाने में सफल करवाता है।

इस बहुविध व्यायाम शाला का फायदा विद्यापीठ के कर्मचारी एवं छात्र सभी डा. एम.आदिकेशवुलु नायुडु, प्रवाचक एवं अध्यक्ष, व्यायाम शिक्षा विभाग जी के निरीक्षण में ले सकते हैं ।

VII. प्रशासन

अ. प्रतिनियुक्ति - दिनांक 25 जनवरी 2015 को साहित्य विभाग के प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति को श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के कुलसचिव के रूप में प्रतिनियुक्त किया गया ।

आ. पदोन्नति - 20 शिक्षकेतर योग्य कर्मचारियों को विद्यापीठ ने एम.ए.सी.पी. योजना के तहत पदोन्नत किया। यु.जी.सी. मानदंडों के अनुसार सी.ए.एस. के अंतग्रत अलग अलग श्रेणियों के योग्य संकाय सदस्यों को उच्चतर श्रेणि के तहत पदोन्नत किया ।

इ. सेवानिवृत्त -

डॉ. टी. आंजनेयुलु, दिनांक 31.12.2014 को परीक्षा नियंत्रक पद से सेवानिवृत्त हुए।

ई. सेवा में मृत्यु प्राप्त किए लोग :

1. श्री के.एस. लवकुमार, सहायक आचार्य, ज्योतिष्य विभाग, 28.11.2014
2. श्री के. वेंकारेड्डी, लिपिक - 28.9.2014
3. श्री ए. प्रभाकर, पुस्तकालय सहायक - 9.2.2015